समृद्धि में नैतिकता की अहम भूमिका

◈ **निशी अरोड़ा** 10वीं
माता गुजरी पब्लिक स्कूल
ग्रेटर कैलाश-II, दिल्ली

नैतिकता और चरित्र राष्ट्र के सुदृढ स्तंभ हैं। चरित्र और नैतिकता के अभाव में धन-धान्य से परिपूर्ण होने पर भी कोई राष्ट्र जीवत नहीं रह सकता। चरित्रनिष्ठ और नैतिक व्यक्ति ही राष्ट्र की नींव को मजबूत और सुदृढ बनाते हैं। जिस प्रकार शरीर की प्रत्येक धमनी में रक्त-संचार अत्यंत आवश्यक है, वैसे ही राष्ट्रीय विकास हेतु जीवन में नैतिकता का प्रवाह जरूरी है।

संस्कृति मानव की समस्त क्रियाओं, व्यापारों और अभिव्यक्तियों का पर्याय है। संस्कृति किसी राष्ट्र के स्थायित्व, उसकी अंतर्रात्मा, विकास, भावनात्मक परिष्कृति का अनंत काल तक प्रवाहित होने वाला कोष है। किसी भी देश की संस्कृति व परंपराओं में गहन संबंध होता है। भारतीय संस्कृति में आशावादिता, हर्ष, उल्लास की भावना को अत्यंत महत्त्व दिया गया। पूजा, पर्व, उत्सव, मेले तथा नाच-रंग इसके उज्ज्वल पक्ष हैं।

आपसी सौहार्द, उदारता, मिलन, प्रेम आदि मानवीय भावनाओं को पुष्ट करने वाले यहाँ के रीति-रिवाज मनुष्य का मनुष्य से दृढ़ आत्मिक संबंध स्थापित करते हैं। उदारता व सहिष्णुता भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषता है। यही कारण है कि हमारी संस्कृति व मान्यताओं का प्रसार चीन, जापान, लंका, मध्य एशिया व दक्षिण पूर्व एशिया तक हुआ।

भारतीय संस्कृति में कर्म, मनुष्य की आध्यात्मिक उन्नति को महत्त्व दिया गया। 'सत्यं शिवं सुंदरम्' की भावना यहाँ मनु काल से चली आ रही है। यहाँ सदा नर सेवा को नारायण सेवा माना गया। नम्रता, विवेक, सदाचार आदि मानवीय मूल्यों को भौतिक सिद्धियों से अधिक महत्त्व दिया जाता रहा

है। यही कारण है कि विश्व-भर में हो रही औद्योगिक क्रांति तथा प्रगति के पश्चात् भी यहाँ आज भी इन गुणों को पूजा जाता है।

विश्व के किसी भी देश में औद्योगिक क्रांति के बाद अर्थ को अधिक महत्त्व दिया गया तथा मानवीय मूल्य धीरे-धीरे विलुप्त होते हुए। परंतु भारतीय संस्कृति के पुष्ट अतीत के कारण आज भी देश के आध्यात्मिक मूल्यों व मानवता को पूजा जाता है। यही कारण है यूरोप के आर्थिक वैभव के दुष्प्रभावों से पीड़ित लोग आज भी हमारे देश की ओर दौड़ आते हैं। संतों, ऋषि-मुनियों की यह पावन भूमि अपने आध्यात्मिक व उत्कृष्ट आदर्शों के कारण ही हजारों वर्षों का इतिहास रखती है।

सौहार्द और मैत्री का विकास होने से ही स्वतंत्रता का वास्तविक आनंद मिल सकेगा। सौहार्द के बिना भी जीवन तो जीया जा सकता है किंतु उसमें वह समरसता और जीवटता नहीं रहती जो व्यक्ति को आह्लाद की अनुभूति दे सके। प्रतिशोध की आग सौहार्द के अंकुर को भस्मसात कर मन की धरती को बंजर बना देती है। यदि पारस्परिक सौहार्द की आवश्यकता नहीं है तो समझना चाहिए कि युग को अमन-चैन की भी आवश्यकता नहीं है। सौहार्द के अभाव में मानव जाति की मुस्कान फीकी पड़ जाती है और जीवन बोझिल बन जाता है। जीवन को सुखमय और आनंदमय बनाने का सर्वोपरि तत्त्व है सौहार्द। सौहार्द एक विधायक भाव है। यह व्यक्ति-व्यक्ति को जोड़ता है और संबंधों को विस्तार देता है। यदि परिवार दूर रहने पर भी सौहार्द का सेतु जुड़ा हुआ रहे तो बहुत सी नई उभरने वाली समस्याओं को रोका जा सकता है।

सौहार्दहीनता से व्यक्ति अकेला हो जाता है। अकेलेपन की कुंठा और निराशा उसे भीतर ही भीतर तोड़ती जाती है। इतिहास साक्षी है कि समाज की धरती पर जितने घृणा के बीज बोए गए, उतने प्रेम और सौहार्द के बीज नहीं बोए गए।

नैतिकता और चरित्र राष्ट्र के सुदृढ़ स्तंभ हैं। चरित्र और नैतिकता के अभाव में धन-धान्य से परिपूर्ण होने पर भी कोई राष्ट्र जीवत नहीं रह सकता। चरित्रनिष्ठ और नैतिक व्यक्ति ही राष्ट्र की नींव को मजबूत और सुदृढ़

बनाते हैं। जिस प्रकार शरीर की प्रत्येक धमनी में रक्त-संचार अत्यंत आवश्यक है, वैसे ही राष्ट्रीय विकास हेतु जीवन में नैतिकता का प्रवाह जरूरी है।

नैतिकता के बिना समाज और राष्ट्र समृद्ध होकर भी शक्तिसंपन्न नहीं बन पाता। उसके सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्य धूमिल हो जाते हैं। आज भारत अपना सिर ऊँचा किए हुए है तो वह केवल नैतिकता के आधार पर ही रह सकता है, अतः देश की समृद्धि की नींव नैतिक मूल्यों पर टिकी रहनी चाहिए।

भारतीय संस्कृति में चरित्र और नैतिकता से बढ़कर कोई अमृत नहीं है। देश और समाज में दहेज हत्या का प्रसंग हो या भ्रूणहत्या का, सांप्रदायिक हिंसा की स्थिति हो अथवा व्यावसायिक शोषण की, गरीबी की समस्या हो या भुखमरी की, इन सब समस्याओं का मूल कारण है, नैतिक मूल्यों का ह्रास तथा चारित्रिक पतन। जब तक मनुष्य का मन नैतिक नहीं बनेगा, वह नई-नई समस्याएँ खड़ी करता रहेगा।

नैतिकता और चरित्र के प्रति अनास्था करोड़ों लोगों को नैतिकता के प्रति आस्थाहीन बना देती है। जिस व्यक्ति की आस्था सही है, उसके सच्चरित्र और नैतिक बनने की संभावना बनी रहती है लेकिन जिसकी इसके प्रति आस्था नहीं होती, उसके सुधरने की संभावना क्षीण प्रायः रहती है। नैतिक मूल्यों के प्रति क्षीण हो रही आस्था जिस दिन जागेगी, वह युग सही अर्थ में सतयुग होगा।

शराब के दुर्व्यसन में फँसे हुए व्यक्ति को शराब के लिए ऋण लेने अथवा नारी के आभूषण एवं घर की अनिवार्य वस्तुओं को बेच देने में कोई बुराई नजर नहीं आती। वह शराब के लिए नारी और बच्चों से भीख मँगवाने के लिए प्रेरित करने में भी नहीं हिचकिचाता। अच्छी शराब के लिए पैसे न जुटा पाने पर वह घटिया शराब पीकर यमलोक जाने में भी नहीं हिचकता।

जहाँ सौ में अस्सी आदमी भूखों मरते हों, वहाँ दारू पीना गरीबों का रक्त पीने के बराबर है। शराब भी क्षय जैसा एक रोग है जिसका दामन पकड़ती है उसे समाप्त करके ही छोड़ती है।

दूसरे, विश्व की राजनीति सुरा और सुंदरी के बल पर चल रही है। विश्व की चौसर पर सुरा की गोटियाँ खेलने से भारत गुरेज करेगा तो वह बाजी हार जाएगा। वह विश्व-समस्याओं को सुलझाने में सहायक न बनकर मकड़ी की तरह अपने जाले में ही फँस जाएगा, एकाकी पड़ जाएगा, आत्मनाश और राष्ट्र-नाश का आह्वान कर लेगा। ऐसा सोचना कुछ लोगों का हो सकता है पर सच्चाई इसके विपरीत है।

जो वस्तु खुलेआम नहीं बिकती, वह काले बाजार की शरण में चली जाती है। काला बाजार अपराधवृत्ति का जनक है, पोषक है। अच्छी शराब मिलनी बंद हो जाए तो घर-घर में शराब की भट्टियाँ लगेंगी। देशी ठर्रा बिकेगा। 'जीभ-चोंच जरि जाय' के अनुसार घटिया शराब से लोग बिना परमिट परलोक गमन करने लगेंगे; जो राष्ट्र के लिए घोर अनर्थ होगा।

अतः 'मद्यनिषेध' अनिवार्यता का विषय नहीं हैं सुरा पर भारी कर लगाकर, सुरालयों की संख्या कम करके, देशी भट्टियों को जड़मूल से नष्ट करके, सार्वजनिक स्थानों पर पीना तथा पीकर चलने पर कठोर प्रतिबंध लगाकर मद्य-पान को हतोत्साहित किया जा सकता है।

अणुव्रत एक असांप्रदायिक अभियान है, इसलिए सांप्रदायिक सौहार्द बढ़ाने में भी इसने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है। जब अणुव्रत का शुभारंभ हुआ था उस समय भारत व पाकिस्तान में भयंकर सांप्रदायिक दंगे हो रहे थे। अणुव्रत ने न केवल हिंदु-मुसलमानों में ही सौहार्द स्थापित करने का प्रयास किया, अपितु वैदिक, बौद्ध, जैन आदि भारतीय धर्म-संप्रदायों तथा ईसाई धर्म शुरू हुआ और उसका परिणाम आज सबके सामने है।

हम जीवन में सुख-समृद्धि, शक्ति-शांति, स्वास्थ्य-आनंद चाहते हैं तो उसका एक ही उपाय है हम सहज-सरल संयममय जीवनशैली अपनाएँ, अणुव्रती बनें तथा केवल स्वयं के हित की बात नहीं, पूरे समाज के हित की बात सोचें, तभी हमारा जीवन सार्थक है। अतः सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति की राष्ट्र निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका है। ❑

देश की हर चीज से प्यार करें

◈ **प्रांजलि श्रीवास्तव** 9वीं
कृष्णा पब्लिक स्कूल
रायपुर, छत्तीसगढ़

राष्ट्र का निर्माण कोई बाह्य अवधारणा नहीं है। वह तो व्यक्ति के हृदय की वह भावना है जो उसे मातृभूमि के प्रति सच्चा प्रेम करना सिखाती है। यही भावना सद्भावना है जो राष्ट्र निर्माण का मूल आधार है। सद्भावना देश की अनेकता में एकता उत्पन्न करती है और देश को खंड-खंड होने से बचाकर राष्ट्र निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

भारत एक विशाल देश है जिसका इतिहास अत्यंत प्राचीन, संस्कृति अत्यंत विस्तृत तथा विशेषताएँ अत्यंत अद्भुत हैं। यह एक बहुआयामी देश है जिसमें अनेक भाषाओं, धर्मों, संप्रदायों, वर्गों, जातियों, मान्यताओं, दर्शन तथा विचारधाराओं का मिश्रण है। किसी भी राष्ट्र की स्वतंत्रता व अखंडता को बनाए रखने के लिए राष्ट्रीय एकता का होना आवश्यक है।

भारत की एकता उसकी विभिन्नताओं में ही निहित है। राष्ट्रीय एकता हमारे राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक है। इसी से हमारे राष्ट्र का निर्माण होता है। राष्ट्र निर्माण की भावना हमारे पुराणों, उपनिषदों, रामायण, महाभारत जैसे ग्रंथों द्वारा परिलक्षित होती है।

हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन आदि अनेक धर्मों के अनुयायी यहाँ रहते हैं। भारतीय अनेक धर्मों, संप्रदायों और जातियों में विभाजित हैं। ऐसे बहुभाषी, बहुधर्मी और बहुजातीय राष्ट्र में राष्ट्रीय एकता का होना एक महान उपलब्धि है।

राष्ट्र का निर्माण कोई बाह्य अवधारणा नहीं है। वह तो व्यक्ति के हृदय की

वह भावना है जो उसे मातृभूमि के प्रति सच्चा प्रेम करना सिखाती है। यही भावना सद्भावना है जो राष्ट्र निर्माण का मूल आधार है। सद्भावना देश की अनेकता में एकता उत्पन्न करती है और देश को खंड-खंड होने से बचाकर राष्ट्र निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लोगों को एक सूत्र में बाँधती है। वह लोगों को अपने क्षुद्र स्वार्थों से ऊपर उठकर राष्ट्रहित के लिए कार्य करने को प्रेरित करती है।

राष्ट्र निर्माण के लिए आवश्यक है कि हम अपने देश की हर चीज, यहाँ की मिट्टी, पेड़-पौधों, नदी-नालों, प्रकृति, जलवायु और लोगों के प्रति लगाव रखें। उनके साथ भावनात्मक रूप से जुड़ें। राष्ट्र के निर्माण में आंतरिक शक्ति तथा सु-व्यवस्था और बाह्य सुरक्षा की दृष्टि से सद्भावना की परम आवश्यकता होती है। सद्भावना, सांप्रदायिकता की भावना को दबाने का काम करती है।

स्वार्थी राजनीतिज्ञ संप्रदाय के नाम पर भोले-भाले लोगों को परस्पर लड़ाकर अपना हित पूरा कर रहा है जिससे देश का वातावरण विषैला होता जा रहा है। राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँधने के लिए सांप्रदायिक भेदभाव, परस्पर विद्वेष आदि राष्ट्र विरोधी भावनाओं को मन से त्यागकर परस्पर सांप्रदायिक सद्भाव रखना होगा।

नैतिकता मनुष्य को देवत्व की कोटि में ले आती है। सत्यवादिता, परोपकारिता, सौहार्द, बंधुत्व, संतुष्टि, अहिंसा जैसे गुण हमारी नैतिकता के आहार होते हैं और जिस व्यक्ति में ये आधारभूत तत्त्व होंगे वह व्यक्ति परहित, परिश्रम, कर्तव्यनिष्ठा जैसे गुणों से युक्त हो मानवता की दृष्टि से निश्चय ही उच्च होगा।

भारतीय इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है जहाँ हम देख सकते हैं कि अपने सत्कर्म के बल पर कैसे यश और गौरव अर्जित किया गया। दधीचि, हरिश्चंद्र, गांधी जैसे न जाने कितने सच्चरित्र व्यक्तियों ने देश का गौरव बढ़ाया है। किसी भी राष्ट्र या समाज की उच्चता की कसौटी वहाँ के नागरिकों के आदर्श एवं मूल्य ही होते हैं। अतः हमें चाहिए कि अपनी प्राचीन परंपराओं, आदर्शों एवं मूल्यों के अनुसार चलते हुए एक बार फिर भारत को उन्हीं ऊँचाइयों पर पहुँचाएँ और भ्रष्टाचार, सांप्रदायिकता जैसे

तत्त्वों को दूर करें। अपनी नैतिकता के बल पर देश का गौरव बढ़ाना हम नागरिकों का ही कर्तव्य है।

राष्ट्र निर्माण में देश का युवा एक महत्त्वपूर्ण योगदान देता है। यह देश की भावी पीढ़ी होती है जो हमारी सांस्कृतिक परंपरा, सामाजिक व आर्थिक भागीदारी को आगे बढ़ाती है। शिक्षित युवा देश की प्रगति में असंख्य संभावनाओं के द्वार खोलता है जिस पर वह अपने भविष्य का निर्माण करता है। परंतु यही युवा वर्ग जब कुसंगति में फँसकर नशा करने लगता है तो वह अपने चरित्र का पतन कर देता है।

नशे की लत मनुष्य को रसातल की ओर ले जाती है। सदियाँ गवाह हैं कि नशे में डूबकर लोगों ने अपना घर-परिवार, समाज व देश सभी बराबर कर दिया है। आज के समय में युवाओं में नशे की लत तेजी से बढ़ रही है। इसका मुख्य कारण शिक्षा का अभाव, बेरोजगारी व पारंपरिक मूल्यों का नष्ट होना है। नशे में डूबी देश की जनसंख्या विश्व पटल में देश की छवि को खराब करती है।

प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह नशामुक्त रहकर देश को सुदृढ़ बनाने में अपना योगदान दे। परिवार में बच्चों को व युवा को ऐसे संस्कार दिए जाएँ कि वह चारित्रिक रूप से सुदृढ़ होकर नशामुक्त रहे। अतः सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति को बढ़ावा देकर हम राष्ट्र निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। ❑

गांधी जी ने कहा था कि 'नशा न केवल आपके शरीर को बर्बाद करता है अपितु आपकी आत्मा को भी खराब कर देता है।' यही नहीं, विज्ञान के अनुसार इन सभी चीजों का प्रयोग कैंसर और फेफड़ों में अनेक प्रकार की बीमारियों को जन्म देता है। आज 30 प्रतिशत छात्रों का जीवन केवल इन नशीले पदार्थों से नष्ट हो रहा है। उम्र से पहले बुढ़ापा और मृत्यु, गलत एवं संदिग्ध कार्यों में सहायक सबसे अधिक नकारात्मक परिणाम हैं।

संस्कार ही हमारी सोच को दर्शाते हैं

◈ **भूमिका ढौंढियाल** 11वीं
आंध्रा एजूकेशन सोसायटी
जनकपुरी, दिल्ली

'राष्ट्र-निर्माण' शब्द का अर्थ है राष्ट्र में अधिक-से-अधिक प्रगति या निर्माण करना। राष्ट्र-निर्माण में देश के हर व्यक्ति द्वारा अपना पूर्ण योगदान देने से ही राष्ट्र में निर्माण की प्रतिक्रिया या कोशिश पूरी हो सकती है। निर्माण में बहुत सारे विचारों पर चर्चा हुई जिन सभी को पूर्ण रूप से समझा गया।

मनुष्य अपनी तीन सीखों से जाना जा सकता है अपने व्यवहार, अपने आदर्श और अपने चरित्र। इन तीन विषयों पर अगर गौर किया जाए तो हमें पता चलता है कि मनुष्य अपने और अन्य मनुष्य के लिए कैसी भावना रखता है प्रेम या घृणा! कैसे आदर्श एवं संस्कार उसने ग्रहण किए हैं और तीसरा उसका चरित्र जिसमें उसका जीवन स्वस्थ या अस्वस्थ।

इन तीन विषयों को अगर पूरे समाज की तुलना में हम देखें तो हमारे पास तीन अत्यंत आवश्यक शब्द उभरकर आते हैं जो राष्ट्र-निर्माण में अपनी भूमिका पूर्ण रूप से सकारात्मक विचारों के सहित राष्ट्र को आगे ले जा सकते हैं, जो हैं सद्भावना से, नैतिकता से और मद्यपान को त्याग कर एक नशामुक्त जीवन जीने से। नियमित रूप से परिणाम अधिक प्रभावशाली होंगे

यदि इन सभी विषयों को हम अपने जीवन में अपनाने का पूर्ण कार्य करें।

भारत एक ऐसा राष्ट्र है जिसमें अनेक धर्मों, संप्रदायों, जातियों, भाषाओं, रीति-रिवाजों, विचारों आदि को अपनाने वाले लोग अलग-अलग राज्यों में विभाजित हैं। भारत सभी दूसरे देशों से भिन्न पहचान रखता है क्योंकि इसमें करोड़ों लोग अलग कार्य करते हुए, अपनी अलग पहचान के बाद भी अनेकता में एकता की पंक्ति को पूर्ण रूप से अपनाते हैं।

कश्मीर से कन्याकुमारी तक हमारा राष्ट्र एक है परंतु कभी-कभी कुछ स्थितियों में मनुष्य अपनी सांप्रदायिक सद्भावना आदि खो देता है जब वह दूसरे मनुष्य से किसी कारण क्रोधित होकर लड़ने का विचार व्यक्त करता है। इस दौरान वह अपने मुख से भी उसी मनुष्य के प्रति घृणा के भाव के साथ अपशब्द भी बोलता है। क्या उसका प्रेमभाव समाप्त हो चुका है? यदि ऐसा रहा तो राष्ट्र-निर्माण का होना शत-प्रतिशत नामुमकिन है क्योंकि मनुष्य का व्यवहार उसको राष्ट्र एवं प्रत्येक जन को इज्जत देकर ही हो सकता है।

अब हम इस राह के द्वारा यह जानने पर मजबूर हैं कि उसकी सद्भावना घट रही है। वर्तमान में दिखावटी एक उपभोक्ताग्रस्त जीवन जीने के कारण ही मनुष्य में घमंड और जलन जैसे भावों की वृद्धि हुई है। मनुष्य अपनी वस्तु को थोड़ा भी खराब एवं चोट पहुँचाते नहीं देख सकता परंतु यदि किसी दूसरे मनुष्य ने गलती से वस्तु को नुकसान पहुँचाया तो उसके लिए अपशब्द और उसकी बेइज्जती एवं उसके हृदय को चोट पहुँचाई जाती है।

आजकल 'रोड रोज़' जैसे विषयों से छोटी सी गलती के लिए मौत तक को दस्तक दे दी जाती है। यह बिलकुल गलत है। हमें इस उपभोक्तावाद की संस्कृति को जीवन-भर के लिए त्याग देना चाहिए और एक साधारण जीवन प्रेमभाव सहित और नकारात्मक विचारों को भी नकारते हुए जीना चाहिए। इससे मनुष्य का न केवल व्यवहार अच्छा होगा अपितु देश का विकास एवं व्यक्ति का जीवन सुधर जाएगा।

हमारे आदर्श और संस्कार हमारी सोच को दर्शाते हैं और उसकी ओर ही इशारा करते हैं। मनुष्य में नैतिक मूल्यों का होना अधिक आवश्यक होता

है। उसका अनुशासन में बीता जीवन उसको जीवन की सही सीखों से परिचित कराता है। उसको समाज में उसका स्वयं का दर्जा दिलाता है। यदि उसमें नैतिकता की कमी हो जाए तो उसको समाज में इज्जत नहीं मिल सकती। अनेक महान व्यक्तियों ने जीवन-भर नैतिकता को अपनाया। उनके जीवन की चर्चा आज हम इसलिए कर पा रहे हैं क्योंकि उनके आदर्शों ने उन्हें समाज में अपनी पहचान बनाने का मौका दिया।

वर्तमान में भी हम मनुष्य कभी-कभी नैतिकता को भुला देते हैं, जैसे सड़कों पर नियमों को तोड़ना, परीक्षा में दूसरों से पूछना हमारी पहचान और मूल्यों का अनादर है। इन सभी का परिणाम अत्यंत दुखमय होता है। जीवन का मूल आधार ही यदि हम नहीं अपनाएँगे तो राष्ट्र-निर्माण कैसे कर सकेंगे। नैतिकता की जरूरत हर किसी को समझनी चाहिए और अच्छे संस्कारों एवं गुणों के साथ जीवन के प्रति अच्छी आभा बिखेरनी चाहिए।

जीवन में बहुत कम चीजों से मनुष्य ने अपने जीवन को सुधारने का जरिया जाना है। एक कहावत है कि सारी दुनिया में अच्छी बात करने वाले मात्र .1 प्रतिशत लोग होते वरना सभी जीवन में नुकसान का ज्यादा सोचते हैं। नशा जो जीवन को बर्बाद कर सकता है वह भी इसी चीज का उदाहरण है। मद्यपान का प्रयोग जीवन का सबसे बुरा कार्य माना जाता है। सबसे अधिक घटनाएँ एवं समाज में दुर्घटना का कारण है इस मद्यपान का प्रयोग। बीड़ी, सिगरेट, शराब आदि नशीले पदार्थ न केवल मनुष्य के शरीर को खराब करते हैं अपितु उसकी मानसिक स्थिति भी खराब कर रहे हैं।

गांधी जी ने कहा था कि 'नशा न केवल आपके शरीर को बर्बाद करता है अपितु आपकी आत्मा को भी खराब कर देता है।' यही नहीं, विज्ञान के अनुसार इन सभी चीजों का प्रयाग कैंसर और फेफड़ों में अनेक प्रकार की बीमारियों को जन्म देते हैं। आज 30 प्रतिशत छात्रों का जीवन केवल इन नशीले पदार्थों से नष्ट हो रहा है। उम्र से पहले बुढ़ापा और मृत्यु, गलत एवं संदिग्ध कार्यों में सहायक सबसे अधिक नकारात्मक परिणाम हैं।

इस नशे में एक दोस्त कब अपना मानसिक संतुलन खो देता है और अपने मित्र की ही मृत्यु स्वयं कर देता है। इन सब प्रकार के मद्यपान जीवन को

खराब कर रहे हैं। इसलिए अब जीवन को स्वस्थ एवं सुरक्षित बनाने का एक ही विचार होना चाहिए और वह है धूम्रपान एवं मद्यपान का जीवन से हमेशा के लिए त्याग।

अतः जीवन सभी मनुष्यों को इसलिए दिया गया है ताकि वह एक स्वस्थ एवं अच्छा जीवन जीएँ। अपने स्वास्थ्य को अच्छा रखकर ही वे राष्ट्र के प्रति अपना योगदान पूर्ण रूप से दे सकते हैं। जीवन-भर अपने शरीर को साफ, मन को प्रेम से पूर्ण और आत्मा को नैतिकता से जोड़े रखें। जिंदगी में यदि कोई भी मनुष्य इन तीन सद्भावना, नैतिकता एवं चरित्र को पूर्ण कर लेता है तो उसकी आत्मा को सिद्ध समझा जाता है। अपनी आदतों में सुधार एवं जीवन को साकार यदि प्रत्येक मनुष्य का विचार हो तो इस राष्ट्र की जनता को राष्ट्र निर्माण से कोई नहीं रोक सकता। ❑

आ चुका है अब जागने का वक्त

नैतिक मूल्य एक तरह से भारतीय संस्कृति की पहचान, पुरखों से विरासत में मिली अनमोल धरोहर है। संपूर्ण विश्व में भारत की पहचान का प्रतीक नैतिकता है लेकिन कहते हुए बेहद अफसोस होता है कि आज की हमारी नई एवं आधुनिक पीढ़ी जिसमें मैं भी आता हूँ, इस बेशकीमती धरोहर को खोती जा रही है।

◈ **जहान्वी पी. पंचाल** 10वीं
श्री आदित्य बिड़ला पब्लिक स्कूल
विरलाधाम, खरच
कोसंबी (आर.एस.)
भरुच, गुजरात

युवा पीढ़ी किसी भी राष्ट्र का आधार होती है। जिस तरह से कोई भी भवन बिना नींव के नहीं टिक सकता, उसी तरह से कोई भी राष्ट्र युवा शक्ति के बिना प्रगति नहीं कर सकता। युवा पीढ़ी वह शक्ति है जो हमारे देश को महाशक्ति बना सकती है। भारत की लगभग 66 फीसदी आबादी युवा है। युवा भारत के कंधों की ताकत को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि आज बेशक अमेरिका महाशक्ति है लेकिन भारत को विश्वशक्ति बनने से दुनिया की कोई ताकत रोक नहीं सकती।

हमारे इतिहास से यह बात सिद्ध होती है कि आजादी की लड़ाई में इस देश के नौजवान सूरमाओं ने अपने प्राणों की बाजी लगा दी थी। युवा नेतृत्व नेताजी सुभाषचंद्र बोस, भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव के बलिदान को भला कौन भूल सकता है। खुदीराम बोस, जिन्होंने महज 23 साल की अवस्था में फाँसी के फंदे को हँसते-हँसते चूम लिया था। ऐसे ही अनेक उदाहरणों से भारत का इतिहास भरा पड़ा है।

आज जिस तरह से देश के हालात बने हैं, राजनीतिक पार्टियों के दबदबे में भ्रष्टाचार और आतंक का वातावरण है। जिस प्रकार से राजनीतिज्ञ अपने

निजी हितों के चलते देश की जड़ों को खोखला कर रहे हैं, ऐसे में निश्चित तौर पर युवाओं की भूमिका काफी अहम् हो जाती है कि वे स्वयं ऐसी मिसाल पेश करें और नेतृत्व संभालें की दुनिया भारत की ताकत का अहसास कर सके।

अफसोस इस बात का है कि आज युवाओं में नशावृत्ति बढ़ रही है, वे गलत संगत में आकर अपने रास्ते से भटक रहे हैं जो राष्ट्र के लिए बेहद घातक है। अपने स्वार्थों को पूरा करने के लिए युवा शक्ति का मानस बदलने वाले गद्दारों से युवाओं को सावधान रहते हुए शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति करनी चाहिए ताकि वे देश के लिए कुछ कर सकें। युवा आगे बढ़ें, महान बने और देश का नाम रोशन करें।

नैतिक मूल्य एक तरह से भारतीय संस्कृति की पहचान, पुरखों से विरासत में मिली अनमोल धरोहर है। संपूर्ण विश्व में भारत की पहचान का प्रतीक नैतिकता है लेकिन कहते हुए बेहद अफसोस होता है कि आज की हमारी नई एवं आधुनिक पीढ़ी, जिसमें मैं भी आता हूँ, इस बेशकीमती धरोहर को खोती जा रही है।

युवाओं का रुष्ट और रुखा व्यवहार, बड़ों के प्रति अनादर, कुतर्क, मनमानी यह सब दर्शाता है कि युवाओं में नैतिक मूल्यों का स्तर किस हद तक गिर चुका है और कितनी अजीब बात है, यह सब कुछ दशकों के छोटे से अंतराल में हुआ है।

आज से कुछ दशक पूर्व, अपने बड़ों का आदर करना, उन्हें उचित प्रेम देना कर्तव्य माना जाता था। लोग मिलनसार थे, रिश्तों में गर्माहट थी। लेकिन यह कहते हुए भी लज्जा आती है कि जिन बूढ़े माँ-बाप ने पाल-पोसकर बड़ा किया वही माँ-बाप आज बच्चों पर बोझ हैं। मोबाइल फोन में युवा इतने ध्यानमग्न हैं कि मेल-मिलाप के लिए वक्त ही कहाँ? और रिश्ते तो आजकल फेसबुक पर बनते हैं तो गर्मजोशी का कोई सवाल ही नहीं उठता।

संवेदनहीनता की हद तो इस बात से आँकी जा सकती है कि सड़क पर तड़पते हुए घायल की जान बचाने के बजाय हमारे युवा उसकी दर्दनाक तस्वीर अपने स्मार्ट फोन के कैमरों में कैद करने को ज्यादा प्राथमिकता देते

हैं ताकि उसे फेसबुक पर अपलोड कर सकें और बाकी के युवक संवेदनशीलता का स्वांग रचते हुए बड़ी फुर्ती से उस पर लाइक और बाकी के उस पर कमेंट्स करते हैं।

छोटी सी उम्र में ही युवा वह सब कुछ करना चाहते हैं, वह सब कुछ पाना चाहते हैं जो न ही उनके लिए उचित है और न ही उसका अभी वक्त आया है। धूम्रपान, शराब, पैसा, अय्याशी सब कुछ और वह भी शॉटकट से, ऐशो-आराम की महत्त्वकांक्षा ऐसी कि जब अपने किसी जूनियर या सहपाठी से पूछती हूँ 'तुम्हारा सपना क्या है?' तो हर बार जवाब मिलता है, 'पैसा'। जैसे जीवन में सब कुछ पैसा ही चेहरों पर साफ झलकता है।

एक बच्चा कोरे कागज की तरह होता है और उस कागज पर नैतिक मूल्यों और अच्छी आदतों की तहरीर लिखना माता-पिता का फर्ज है, पर माता-पिता अपनी निजी जिंदगियों में ही इतने व्यस्त हो गए कि वे भूल ही गए कि वे किसी के माता-पिता भी हैं, अपनी व्यस्तताओं में इस बात का ध्यान ही नहीं रहा कि उनके बच्चों की अगली पीढ़ी की असली जरूरत क्या है? कल राष्ट्र की कमान युवाओं के हाथों में होगी। क्या संभालेंगे देश को जो खुद ही को नहीं संभाल सकते।

गहरी नींद से जागने का वक्त अब आ चुका है। जरूरत है युवाओं पर दोष मढ़ने के बजाय बड़े और कुछ सार्थक कदम उठाए जाने की हम ज्यादा वक्त अपने बच्चों के साथ, युवाओं के साथ व्यतीत करें। उन्हें उचित मार्गदर्शन दें, देश के सांस्कृतिक गौरव से अवगत कराएँ और युवाओं को भी आवश्यकता है समझने की अपने आपको और अपने देश को, पाश्चात्य रंगों में रंगने के बजाय अपनी पहचान बनाने के प्रयत्न करने होंगे।

अंत में यही कहना चाहूँगी कि अगर मन के किसी कोने में देश के प्रति लगाव और नैतिकता की एक चिंगारी भी मौजूद होगी तो वह ज्वाला का रूप लेगी। ❑

नैतिक उन्नति ही राष्ट्र की उन्नति

◈ **कशिश महेंद्रू** 10वीं
माउंट आबू पब्लिक स्कूल
सेक्टर-5, रोहिणी, दिल्ली

वस्तुतः नैतिक उन्नति ही राष्ट्र की उन्नति का आधार है। अगर नैतिकता ही नहीं होगी तब राष्ट्र का कोई आधार नहीं रहेगा और अगर राष्ट्र का कोई आधार नहीं तो राष्ट्र की प्रगति और निर्माण की ओर बढ़ना असंभव हो जाएगा। जिस प्रकार सीढ़ी के बिना हम एक मंजिल से दूसरी मंजिल तक नहीं पहुँच पाते हैं, उसी तरह नैतिकता के बिना हम राष्ट्र का कुछ नहीं कर सकते हैं।

राष्ट्र के निर्माण के लिए हमें तीन सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं। पहली सीढ़ी नैतिकता, दूसरी सीढ़ी सद्भावना और तीसरी नशामुक्ति। इन तीनों के बारे में जानना एवं समझना बहुत जरूरी है। अगर इनमें से एक भी नहीं होगी तो राष्ट्र का निर्माण अधूरा रह जाएगा।

नैतिकता ही मनुष्य की उत्तमता की कसौटी है। नैतिकता के अंतर्गत आने वाले गुणों में प्रमुख गुण हैं दयालुता, सत्यवादिता, सदाचार, निष्कपटता, पारस्परिक सहयोग तथा संतोष आदि। जिस व्यक्ति में कर्तव्यनिष्ठा, परिश्रम करने का संकल्प, सद्व्यवहार जैसे गुण होंगे, वह निश्चित ही नैतिकता के मानदंडों पर खरा उतरेगा।

आज चारों ओर भ्रष्टाचार पनप गया है। बेईमानी, रिश्वतखोरी, सांप्रदायिकता, भाई-भतीजावाद आदि ने वर्तमान समाज को ग्रस लिया है। मनुष्य की कथनी और करनी में जमीन-आसमान का अंतर है। नैतिक मूल्य तो किताबों और पुस्तकों और भाषाओं में सिमटकर रह गए हैं।

हमने अपने प्राचीन आदर्शों को भुला दिया है। समाज पतन के गर्त में

गिरता जा रहा है। नैतिकता को अगर मूल मंत्र बनाएँगे तो राष्ट्र का निर्माण संभव है। अगर हम कुछ तरीके अपनाकर नैतिकता की राह पर चलें तो अपने सम्मान को और भी ऊँचा बना सकते हैं। नैतिकता का अर्थ है अच्छी शिक्षा। हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि हम गलत तरीकों से धन कमा सकते हैं, भौतिक सुख-सुविधा को भोग सकते हैं, पर सच्चा सुख और मानसिक शांति हम कभी भी नहीं प्राप्त कर सकते हैं। नैतिक मूल्यों को अपनाए बिना न तो कोई व्यक्ति, न कोई समाज, न कोई देश कभी उन्नति के शिखर पर पहुँच सकता है।

वस्तुतः नैतिक उन्नति ही राष्ट्र की उन्नति का आधार है। अगर नैतिकता ही नहीं होगी तब राष्ट्र का कोई आधार नहीं रहेगा और अगर राष्ट्र का कोई आधार नहीं तो राष्ट्र की प्रगति और निर्माण की ओर बढ़ना असंभव हो जाएगा। जिस प्रकार सीढ़ी के बिना हम एक मंजिल से दूसरी मंजिल तक नहीं पहुँच पाते हैं, उसी तरह नैतिकता के बिना हम राष्ट्र का कुछ नहीं कर सकते हैं।

यदि देश के नागरिक एकजुट होकर, हाथों में हाथ लेकर निष्ठा और ईमानदारी से नैतिक मूल्यों को अपनाने का दृढ़ संकल्प ले लें तो केवल देश का ही नहीं बल्कि समूची मानवता के लिए कल्याणकारी साबित हो सकता है।

नशा एक ऐसी बीमारी है जो अगर एक बार मनुष्य को लग जाए तो बहुत ही मुश्किल से छूटती है। आजकल लोगों की आदत है कि वे नशा करते हैं और अगर एक बार शुरू कर दें तो वे इस प्रकार की आदत को नहीं छोड़ते। नशा अगर मनुष्य को एक बार हो जाए तो फिर वह विनाश के दरवाजे के कुछ ही दूर रहता है। आजकल लोगों को नशे की आदतों से छुटकारा पाने के लिए उनके परिवार वाले उन्हें नशामुक्ति केंद्र ले जाते हैं। अगर देश में नशा करने वाले लोग कम हों या देश हमारा नशामुक्त हो जाए तो वह दिन दूर नहीं की हमारा राष्ट्र एक अलग मुकाम पर पहुँचकर सफलता प्राप्त कर सकेगा।

हम अगर शराब, पान तथा अन्य खाद्य पदार्थ जो कि हमारे शरीर को नुकसान पहुँचाते हैं, का सेवन न करें तो राष्ट्र में शांति रहेगी। इसके साथ

लोगों में नैतिकता और सद्‌भावना भी होनी चाहिए। हमें सदा सच बोलना चाहिए। अगर सच की राह पर चलेंगे तो कभी लड़ाई नहीं होगी। देशप्रेम की भावना मन में उसके विचार से आती है। अगर हम गरीबों की मदद करेंगे या उन लोगों की, जिनको हमारी मदद की जरूरत है तो शायद वे लोग ही आगे चलकर हमारी मदद करेंगे।

आजकल बहुत से लोग यह मानते हैं कि हम अकेले क्या कर पाएँगे तो हमें यह सोच नहीं रखनी चाहिए और हमें सबकी मदद करनी चाहिए। अगर एक की भी मदद करेंगे तो हमें आशीर्वाद मिलेगा और हम राष्ट्र की सुरक्षा और निर्माण में अपना योगदान देंगे। जो आदमी दयालु हो, परिश्रम करता हो, लोगों के दुःख-सुख में उनके साथ रहता हो वह आदमी देश की रक्षा और निर्माण के लिए कुछ भी कर सकता है। अगर एक राष्ट्र नशामुक्त रहेगा तो उस राष्ट्र का विकास होगा।

अगर हम इन तीनों को एक साथ लागू करें तो काम हमारा आसान एवं शांतिमय होगा और कोई भी राष्ट्र निर्माण का विरोध नहीं करेगा। राष्ट्र एकजुट होकर बनता है और उसका निर्माण भी एकजुट होकर ही संभव है। तो आज से सब लोग एकजुट होकर सद्‌भावना, नैतिकता और नशामुक्ति का पालन करेंगे और इसे अपना कर्तव्य समझेंगे। ❑

सद्भावना से होते हैं रिश्ते मजबूत

सद्भावना के लिए कुछ त्याग-परोपकार का होना जरूरी है। परोपकार के विषय में कवि 'तुलसीदास' जी ने यहाँ तक कहा है कि 'परहित सरिस धर्म को नाहीं।' यही कारण है कि एक उन्नत राष्ट्र अपने पड़ोसी देशों से अच्छे संबंध बनाकर व्यापार आदि में निरंतर उत्थान करते ही जाता है जिससे एक राष्ट्र का निर्माण होता है।

◈ **दीक्षा जायसवाल** 9वीं
महेश्वरी बालिका विद्यालय
कोलकाता, प. बंगाल

वैसे तो किसी भी राष्ट्र की उन्नति और पतन के कुछ विशिष्ट कारण होते हैं। राष्ट्र की उन्नति हर एक व्यक्ति की उन्नति है और हर एक व्यक्ति का पतन राष्ट्र के पतन का कारण होता है। जिस देश का राष्ट्र उन्नत चरम सीमा पर होता है, वहाँ के लोग परिश्रमी, स्वावलंबी, समय की कीमत को समझने वाले होते हैं। अतः राष्ट्र निर्माण के लिए अच्छाइयों को अपनाना और दोषों को दूर करना अति आवश्यक है।

इन्हीं तथ्यों को पूर्ण रूप से समझ सकने के कारण 'जापान' एक ऐसा राष्ट्र है, जहाँ द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान 'अमेरिका' द्वारा 'परमाणु' बम गिराए जाने से उसके प्रमुख शहर 'हिरोशिमा' और 'नागासाकी' पूर्ण रूप से तहस-नहस हो गए। फिर भी वहाँ के लोग हिम्मत नहीं हारे बल्कि परिश्रम के बल पर पुनः उन्नति के शिखर पर पहुँच गए, क्योंकि उनके शब्दकोश में 'दैव-दैव आलसी पुकारे' नहीं है। अतः एक राष्ट्र के निर्माण में स्वालंबन, परिश्रम, शिक्षा के क्षेत्र के अलावा सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति की उद्यम भूमिका होती है।

सद्भावना का शाब्दिक अर्थ अच्छी भावना होता है। अच्छी भावना तब ही

जागृत हो सकती है, जब विचारों में उदार नीति, परोपकार, मेल-मिलाप आदि शब्द सम्मिलित हों। जिस प्रकार से हम अपने पड़ोसी के साथ सद्भावना का व्यवहार करते हैं तो उसके साथ कार्यकलाप रूपी रिश्ते मजबूत होते हैं, जिससे दोनों ही पक्षों के लोग लाभान्वित होते हैं और दोनों पक्षों के बीच आपस में बैर होने पर दोनों ही लोग अपूर्ण रह जाते हैं, अर्थात् लाभ से वंचित रह जाते हैं।

ठीक इस प्रकार गाँव से शहर, शहर से नगर, नगर से एक उन्नत राष्ट्र का निर्माण होता है, इसलिए राष्ट्र के निर्माण हेतु एक राष्ट्र के पड़ोसी राष्ट्र से अच्छे सबंध होने चाहिए। इसके लिए यह सद्भावना अति आवश्यक है।

सद्भावना के लिए कुछ त्याग-परोपकार का होना जरूरी है। परोपकार के विषय में कवि 'तुलसीदास' जी ने यहाँ तक कहा है कि 'परहित सरिस धर्म को नाहीं।' यही कारण है कि एक उन्नत राष्ट्र अपने पड़ोसी देशों से अच्छे संबंध बनाकर व्यापार आदि में निरंतर उत्थान करते ही जाता है जिससे एक राष्ट्र का निर्माण होता है।

सद्भावना की दृष्टि में सत्य, धर्म, न्याय और अन्य आदर्शों का मूल्य प्राणों से बढ़कर है। इसलिए यह कहा गया है कि 'सद्भावना ही जीवन और दुराचार ही मरण है।' क्योंकि दुराचार का दुष्परिणाम सुख-शांति, स्वास्थ्य, आनंद, धन-बल बुद्धि और विवेक का विनाश है। दुराचार उस दैत्य के समान है जो हमारे शरीर के रक्त को चूस-चूसकर हमारी मानसिक शांति और आनंद का अपहरण कर लेता है।

नैतिकता का आचरण दिन-प्रतिदिन आज के नवयुवकों में विलुप्त होता जा रहा है। आज का समाज और समाज में रहने वाला बालक इस प्रकार दिशाहीन और अनैतिक हो गया है कि उसके लिए नैतिक शिक्षा की आवश्यकता अपरिहार्य है। 'नैतिक' शब्द अंग्रेजी के डवतंस शब्द का रूपांतरण है जिसका अर्थ है, मानव संबंधी।

आज के बच्चे कल के भविष्य हैं अर्थात् बच्चे ही राष्ट्र निर्माता हैं। जिस बालक को माता-पिता से लेकर गुरुजनों तक नैतिकता की शिक्षा मिलती है वह निश्चित ही महान बनता है। आज हम गर्व से कहते हैं कि 'मेरा भारत

महान है'। इसके पीछे यही राज है कि इस विशाल राष्ट्र में नैतिकता के कारण ही अनेक जाति-धर्म-परंपरा को मानने वाले लोग रहते हैं।

हमें अपने बड़े और छोटों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए, इस प्रकार के तथ्य नैतिकता के अंतर्गत आते हैं। इसके कारण एक अच्छे राष्ट्र का निर्माण होता है। यदि हम दूसरे का आदर करते हैं तो अन्य लोगों से स्वतः ही हमें आदर मिलता है। हमारा देश किसी से रोटियाँ नहीं छीनता है। हमारे देश की नैतिकता तो यह कहती है कि 'अतिथि देवो भव'। इसी प्रकार नैतिकता के कारण हमारा राष्ट्र 'जगत गुरु' के नाम से विख्यात है। यह भारतीय समाज की सबसे बड़ी विशेषता है कि 'अनेकता में एकता'। अतः एक राष्ट्र के निर्माण में नैतिकता की अहम् भूमिका है।

नशे के कारण हजारों-हजार परिवारों का सुख-चैन छिन जाती है। जो एक बार इसके प्रभाव में आ जाता है, पुनः मुक्त नहीं हो पाता है। इसके कष्ट का पता तो वह ही बता सकता है जिसके पालनकर्ता ही नशा के चंगुल में फँस चुके हैं।

इस प्रकार के कष्ट के विषय में कहा गया कि 'जाके पाँव ने फटे बेवाई सो का जाने पीर पराई।' अतः उन्नत राष्ट्र के निर्माण के लिए नशे से मुक्त राष्ट्र बनाना आवश्यक ही नहीं अत्यंत आवश्यक है।

इससे स्पष्ट होता है, वह ही राष्ट्र मजबूत होगा जो नशे से मुक्त होगा। नशे में गुण नहीं बल्कि उसके दुष्प्रभाव अधिक देखे जाते हैं। नशा करने वाले के विषय में कहा गया है कि 'हर एक नशीले व्यक्ति का शरीर अनेक रोगों का विश्राम स्थल होता है।' इससे मुक्ति के लिए विरोध में लड़ना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य होना चाहिए। ❑

नशामुक्ति से ही बनेगा विकसित राष्ट्र

◈ **तनु** 9वीं
राव मानसिंह सी.से. पब्लिक स्कूल
पपरावट रोड, नजफगढ़, दिल्ली

भारत विभिन्नताओं का देश है फिर भी यहाँ सब मिल-जुलकर रहते हैं। सभी धर्मों के लोग एक-दूसरे के धर्म का आदर करते हैं। यही सद्भावना कहलाती है। हमें 'स्व' की परिधि से निकलकर 'पर' की परिधि में प्रवेश करना चाहिए। इसलिए प्रत्येक नागरिक को चाहिए कि देश का नाम रोशन करने के लिए सद्भावना में अपनी शक्तियों को ऊँचाइयों तक ले जाएँ।

इस संसार को एक कर्मक्षेत्र कहा गया है। सारी सृष्टि कर्मरत है। छोटे से छोटा प्राणी भी अपनी सद्भावना, नैतिकता से राष्ट्र निर्माण का शाश्वत संदेश दे रहा है। हमारे जीवन का उद्देश्य ही अपने राष्ट्र का निर्माण करना है। इतिहास साक्षी है कितने ही भारतीय युवकों ने अपनी सद्भावना, नैतिकता के बल पर असंभव को संभव बना दिया। एक अच्छे और विकसित राष्ट्र का निर्माण तभी हो सकता है जब उस राष्ट्र के लोगों में सद्भावना, नैतिकता का वेग हो।

जिस राष्ट्र के लोग नशे से मुक्त होंगे वह देश या राष्ट्र अपने आप ही एक विकसित राष्ट्र की ओर रुख करेगा। जिस तरह आज कहने को तो हर तरफ स्वशासन और भारतीयकरण का नारा है, किंतु वास्तविकता में सब ओर अनैतिकता ने अपने पंखों को इतना पसार लिया है कि सब ओर आस्थाहीनता बढ़ती जा रही है।

मंदिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों या चर्च में बढ़ती भीड़ और प्रचार माध्यमों द्वारा मेलों और पर्वों के व्यापक कवरेजों से लोग इतने प्रभावित हो गए कि नैतिकता, सद्भावना को भूलते ही नजर आ रहे हैं। ये सब कुछ उसी प्रकार

भ्रामक है जैसे लगे रहो मुन्नाभाई की गांधीगीरी। जिस राष्ट्र में ऐसे लोग रहते हैं उस राष्ट्र का पतन होना तो स्वाभाविक है। उस राष्ट्र में वास्तविक जीवन में जिस आचरण, नैतिकता की अपेक्षा व्यक्ति या समूह से की जाती है उसकी तो झलक तक पाना असंभव-सा हो गया है।

जिन जीवन मूल्यों के प्रति आस्थावान होने की हम सौगंध खाते हैं और उन्हें अपने आचरण में उतारने का संकल्प व्यक्त करते हैं, उसका लेशमात्र प्रभाव भी उस प्रगतिशील राष्ट्र के लोगों के जीवन में प्रतीत नहीं होता। इसीलिए राष्ट्र के लोगों को चाहिए कि वे इस मायाजाल में न फँसें और अपनी नैतिकता, सद्‌भावना से एक अच्छे और विकसित राष्ट्र का निर्माण करें।

सादा जीवन, उच्च विचार, सद्‌भावना, नैतिकता, नशे से मुक्ति को आधार बनाकर लोग एक राष्ट्र को आध्यात्मिक रूप में विश्व के समक्ष खड़ा कर सकते हैं। लेकिन लोगों में 'स्व-शासन', दुराचरण, अनैतिकता की व्यवस्था ने भौतिक भूख की आग को इतना प्रज्ज्वलित कर दिया है कि अब लोगों ने येन-केन-प्रकारेण सफलता हासिल करने के लिए अपने स्थापित मूल्यों, जैसे नैतिकता, सद्‌भावना, प्रेम, परोपकार, अच्छा आचरण आदि को तिलांजलि दे दी है।

जिस राष्ट्र में लोग आपस में विश्वासघात करेंगे, अपने साथियों को ठगेंगे या धोखा देंगे उस राष्ट्र में एकता कभी नहीं हो पाएगी और वह राष्ट्र कभी विकसित नहीं हो पाएगा। तो इन सभी तथ्यों से हम यह कह सकते हैं कि एक अच्छे राष्ट्र के निर्माण के लिए लोगों में सद्‌भावना, नैतिकता, नशामुक्ति का होना एक महत्त्वपूर्ण योगदान देता है। एक राष्ट्र की नींव होती है उस राष्ट्र की युवा पीढ़ी। युवा पीढ़ी ही राष्ट्र को विकसित और कामयाब बनाएगी।

सद्‌भावना की भूमिका : देश की प्रगति के लिए शिक्षित पीढ़ी की जरूरत है परंतु शिक्षित होने के साथ-साथ उसमें नैतिक मूल्यों का होना भी जरूरी है। सभी में एक-दूसरे के प्रति प्रेम की भावना होनी चाहिए। एकता होनी चाहिए ताकि वे कदम से कदम मिलाकर देश को प्रगति के मार्ग पर अग्रसर कर सकें। सद्‌भावना के लिए परोपकार की भावना होना अनिवार्य है।

'परहित सरस धर्म नहीं भाई'

उपर्युक्त उक्ति का आशय है परोपकार के समान कोई धर्म नहीं है अर्थात् परोपकार ही सबसे बड़ा धर्म है। अपना भला सभी करते हैं। अपना लाभ होता है तभी हम दूसरों के बारे में सोचते हैं। दिखावे का धर्मपालन करते हैं। 'राष्ट्र के हित के लिए एकता, सद्‌भावना, भाईचारे की भावना का होना अत्यंत आवश्यक है।'

अनुशासन सद्‌भावना को बनाने की एक व्यवस्था का ही नाम है। मानव-जीवन को चलाने के लिए या फिर किसी राष्ट्र की तरक्की में अनुशासन की जरूरत होती है।

भारत विभिन्नताओं का देश है फिर भी यहाँ सब मिल-जुलकर रहते हैं। सभी धर्मों के लोग एक-दूसरे के धर्म का आदर करते हैं। यही सद्‌भावना कहलाती है। हमें 'स्व' की परिधि से निकलकर 'पर' की परिधि में प्रवेश करना चाहिए। इसलिए प्रत्येक नागरिक को चाहिए कि देश का नाम रोशन करने के लिए सद्‌भावना में अपनी शक्तियों को ऊँचाइयों तक ले जाएँ।

नैतिकता : राष्ट्र के विकास में नैतिकता का महत्त्व सराहनीय है। नैतिक मूल्यों के लिए जीवन में सादगी का होना आवश्यक है। प्रदर्शन और दिखावे का सहारा तो गुणहीन और मूर्ख व्यक्ति लेते हैं। माना आज का युग फैशनप्रियता और बनावट का है, लेकिन आज व्यक्ति के सम्मान का आधार रुपया-पैसा, तड़क-भड़क, धन-दौलत आदि के आधार पर किया जाता है लेकिन व्यक्ति का सम्मान उसके गुणों के आधार पर करना चाहिए।

अनेक महापुरुषों के जीवन से यह स्पष्ट हो चुका है कि व्यक्ति जितना विद्वान होता है वह उतना ही विनम्र और सादगी पसंद होता है। नैतिक मूल्यों में बड़ों का आदर करना, छोटों से प्यार, परोपकार, सादा जीवन, उच्च विचार, एकता, सांप्रदायिकता की भावना का होना आदि शामिल है। नैतिक मूल्यों से व्यक्ति का चरित्र निर्माण होता है। सद्‌चरित्र मानव की सबसे बड़ी शक्ति है। कहा गया है "चरित्र एक ऐसा हीरा है जो हर किसी पत्थर को घिस सकता है।"

इसका एक सरल तरीका है सद्‌गुणों पर चलना, प्रेम, त्याग, करुणा, मानवता और अहिंसा को अपनाना तथा लोभ, निंदा, अहंकार, क्रोध जैसी विषैली भावनाओं को त्यागकर अच्छे गुणों को अपनाना।

नशा मुक्ति की भूमिका : नशा, एक ऐसा अभिशाप है जो राष्ट्र की नींव को खोखला बना देता है। जिस राष्ट्र की नींव ही खोखली होगी उसकी इमारत (विकास) को ढहने से कोई नहीं बचा सकता। इसलिए हमें चाहिए कि एक उन्नत और शक्तिशाली राष्ट्र की नींव मजबूत हो। राष्ट्र की नींव उसकी युवा पीढ़ी के कंधों पर होती है। आज की युवा पीढ़ी नशे की बुरी लत में डूबी हुई है। अर्थात् अगर आज की पीढ़ी नशा मुक्त होगी तो आगे आने वाली पीढ़ी भी आज के युवाओं से प्रेरणा ग्रहण करेगी और एक अच्छे राष्ट्र का निर्माण करेगी। मेरा विश्वास यही है कि

जिसने मरना सीख लिया है, जीने का अधिकार उसी को।
जो काँटों के पथ पर आया, फूलों का उपहार उसी को।।

अर्थात् युवा पीढ़ी जो इस नशे की लत में जकड़ी हुई है इससे बाहर निकलना उनके लिए असंभव-सा प्रतीत होता है। उनके लिए यह पथ काँटों के पथ पर चलने के समान है। परंतु आगे चलकर इसी पथ से उन्हें सुनहरे भविष्य का उपहार मिलेगा और वे एक विकसित राष्ट्र का निर्माण कर सकने में सक्षम होंगे।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि एक राष्ट्र के निर्माण में नैतिकता, सद्‌भावना व नशामुक्ति का बहुत महत्त्व है। तुलसीदास ने कहा है 'सकल पदारथ है जग माही, कर्महीन नर पावत नाहीं'। अर्थात् लोग स्वार्थी बनकर उज्ज्वल राष्ट्र का निर्माण नहीं कर सकते। इस मुकाम को पाने के लिए लोगों को अपने भीतर एकता, सद्‌भावना, नैतिकता लानी पड़ेगी। ❑

जुमलों तक सीमित रह गई सद्‌भावना

◈ **अनंदिता कौशल** 10वीं
दयानंद पब्लिक स्कूल
शिमला, हिमाचल प्रदेश

राष्ट्र की नींव को कोई एक व्यक्ति मजबूत तो नहीं बना सकता परंतु उस नींव को एक व्यक्ति कमजोर अवश्य बना सकता है। इसलिए राष्ट्र की उन्नति को हर एक निवासी की जरूरत होती है। सभी के सम्मिलित प्रयासों का ही फल 'उन्नति' होगा। एक मानव का सर्वोत्तम आदर्श उसका चरित्र होता है। मानव चरित्र को ही नैतिकता का पर्याय कहा जाता है।

किसी भी राष्ट्र या समाज की उन्नति किसी एक व्यक्ति के योगदान से संभव नहीं है, अपितु राष्ट्र की उन्नति का आधार समाज के प्रत्येक व्यक्ति पर निर्भर करता है। एक राष्ट्र के निर्माण में सद्‌भावना, नैतिकता व नशामुक्ति बहुत ही महत्त्वपूर्ण आधार-बिंदु माने जाते हैं।

किसी ने सच ही कहा है कि आदर्श मनुष्य वही होता है जिसके भीतर सद्‌भावना के कण वास करते हैं। यदि मनुष्य में दूसरों के प्रति प्रेम न हो तो वह मनुष्य की परिभाषा में खरा नहीं उतर पाएगा। यदि एक देश में हर निवासी केवल स्वयं के स्वार्थ हेतु कार्य करे और केवल धन-संपत्ति को ही अपने जीवन का एकमात्र लक्ष्य बना ले तो राष्ट्र की उन्नति में विघ्न पड़ना निश्चित है। परंतु यदि देश का हर एक निवासी स्वयं के स्वार्थ को छोड़कर दूसरों के हित के लिए कार्य करने की ओर सोचे तो राष्ट्र की उन्नति अवश्य ही होगी।

राष्ट्र की नींव को कोई एक व्यक्ति मजबूत तो नहीं बना सकता परंतु उस नींव को एक व्यक्ति कमजोर अवश्य बना सकता है। इसलिए राष्ट्र की

उन्नति को हर एक निवासी की जरूरत होती है। सभी के सम्मिलित प्रयासों का ही फल 'उन्नति' होगा।

नैतिकता-मानव चरित्र : एक मानव का सर्वोत्तम आदर्श उसका चरित्र होता है। मानव चरित्र को ही नैतिकता का पर्याय कहा जाता है। मनुष्य का गुरु-गौरव, उसका यश, उसकी संपन्नता एवं मान-मर्यादा उसके चरित्र पर ही निर्भर करता है।

किसी भी राष्ट्र की उन्नति की आधारशिला वहाँ के निवासियों की सच्चरित्रता, परिश्रमशीलता अथवा उनके नैतिक मूल्य होते हैं। उन्नति का आधार नैतिक मूल्यों में आस्था तथा जीवन में इन्हें अपनाना ही है।

भारत, हमारी मात्र भूमि एक ऐसा देश है जिसे 'विश्व-गुरु' के पद से सम्मानित किया गया था और इसी देश ने समूचे विश्व को मानवता, नैतिकता, सच्चरित्रता तथा सदाचार की शिक्षा दी। करुणा, दया, परोपकार, सत्य भाषण जैसे अनेक नैतिक मूल्यों के कारण ही हम विश्व गुरु के पद पर विराजमान थे।

नैतिकता मानव की श्रेष्ठता की कसौटी के समान है जिस पर हर व्यक्ति को खरा उतरकर अपने देश के कल्याण हेतु योगदान देना है और अपने देश के प्रति असीम प्रेम को प्रकट करना है। किसी भी राष्ट्र की उन्नति की आधारशिला नैतिकता है।

नशामुक्त राष्ट्र, सर्वोत्तम राष्ट्र : आज राष्ट्र के विकास में जितनी भी समस्याएँ सामने आती हैं उनमें सबसे गंभीर समस्या है नशा। अक्सर राष्ट्र की उन्नति को लेकर हम राष्ट्र की संस्कृति, उसका शिक्षा स्तर, राष्ट्र का रोजगार स्तर आदि विषयों के मद्देनजर एक राष्ट्र को उन्नत बनाने के प्रयासों में जुट जाते हैं। हम यह भूल जाते हैं कि यदि देश का प्रत्येक निवासी शारीरिक रूप से ही स्वस्थ नहीं होगा तो राष्ट्र के निर्माण में उन्नति की उम्मीद लगाना किस स्तर तक उचित होगा।

आज यदि देखा जाए तो आधे से ज्यादा युवा वर्ग नशों से जुड़ा हुआ मिलेगा। नशीले पदार्थों का प्रभाव जीवों की शरीर-संरचना एवं क्रिया-प्रणाली

पर पड़ता है। आज जिन मादक द्रव्यों के सेवन में लोग फँस रहे हैं वह निश्चय ही अत्यंत भयावह समस्या बनती जा रही है। इसीलिए यह कहना उचित होगा कि आज राष्ट्र की उन्नति के लिए एक नशामुक्त राष्ट्र का निर्माण करना बहुत ही आवश्यक है और इस भयानक समस्या का निवारण खोजकर कार्य करने होंगे ताकि इस समस्या को अविलंब रोका जा सके। प्रभावित लोगों के उपचार के लिए सबसे आवश्यक यह है कि उन्हें पूरा विश्वास दिया जाए, पूरी सहानुभूति से उनकी समस्याओं को समझने की चेष्टा की जाए तथा उन्हें सामाजिक सुरक्षा प्रदान की जाए।

आज शायद नैतिकता, सद्भावना आदि की चर्चा केवल पुस्तकों, भाषणों आदि तक ही सीमित रह गई है। हम अपने देश की विभिन्न समस्याओं के लिए कभी नेताओं पर तो कभी पुलिस विभाग पर दोषारोपण करते हैं। हम यह भूल जाते हैं कि ये सब कोई और नहीं, बल्कि समाज का ही हिस्सा हैं। आज हमारे देश के पतन का एकमात्र कारण है जीवन मूल्यों की रिक्तता अथवा नैतिक मूल्यों की हीनता।

यदि देश का हर व्यक्ति नैतिक मूल्यों, सद्भावना एवं नशामुक्ति को अपना ले तो वह दिन दूर नहीं जब हम पुनः विश्व में सिरमौर बन जाएँगे। हमारा कर्तव्य है कि हम एकजुट होकर, कृत्संकल्प होकर, निष्ठा से, ईमानदारी से अपने जीवन में नैतिकता, सद्भावना को उतारने का बीड़ा उठाएँ और देश की अखंडता तथा एकता की रक्षा करके उसे उन्नत बनाने का प्रयास करें। ❑

नशे पर पाबंदी आवश्यक

नशा करने से गरीब लोग ज्यादा अपनी जान गँवाते हैं क्योंकि उन्हें इसके बारे में कुछ भी पता नहीं होता। इसी कारण अनेक पत्नियाँ विधवा हो जाती हैं और अनेक बच्चे अनाथ। नशा करने से अनेक बीमारियाँ होती हैं, जैसे कैंसर आदि। सरकार को नशे को रोकने के लिए कड़ी पाबंदी लगानी चाहिए।

◈ **ऋषभ मदनी** 9वीं
श्रीश्री रविशंकर विद्या मंदिर
कोटेश्वरम रोड, चेप्पनम्
कोच्चि, केरल

आज हमारा देश बड़ी तेजी से प्रगति कर रहा है, पर वह अभी पूरी तरह निर्मित नहीं हुआ। देश को प्रगति की ओर ले जाना हमारा दायित्व है।

राष्ट्र के विकास में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की बहुत बड़ी भूमिका है। इस विकास के जिम्मेदार हमारे पूर्वज हैं जिन्होंने नैतिकता, सद्भावना को अपनाया और नशे को अपने से दूर रखा। आज की युवा पीढ़ी सद्भावना और नैतिकता से दूर भाग रही है और नशे की ओर आकर्षित हो रही है। हमारे देश की ताकत हमारी युवा पीढ़ी ही है, अगर यह सब हमारे युवा पीढ़ी के साथ चलता रहा तो हमारा देश विकास नहीं करेगा।

हम सबको एक-दूसरे के प्रति सद्भावना जागृत करनी चाहिए। हमें किसी का बुरा नहीं सोचना चाहिए, सबकी सहायता करनी चाहिए। अगर हम कुछ गलत करें तो हमें क्षमा माँगनी चाहिए। जैसे रहीम भी कहते हैं

आवत गाली एक है, पलटत हुई अनेक,
कहि रहिमन नहीं पलटिए, वह एक ही एक।

हमें किसी को गाली भी नहीं देनी चाहिए। हमें हमेशा शुभ सोचना चाहिए, इससे हमारा हर कार्य भी शुभ होगा। हमें हमेशा दूसरों की सहायता करनी चाहिए। अगर हम एक-दूसरों की सहायता करते रहेंगे तो हमारा देश बड़ी ही तेज गति से प्रगति की ओर बढ़ेगी। नैतिकता में हमारे देश को प्रगति की ओर ले जाने की बहुत शक्ति है। नैतिकता का शिक्षण हम सबसे अच्छा अपने दादा-दादी और नाना-नानी से सीख सकते हैं। हम बड़े लोगों से भी सीख सकते हैं, लेकिन जो हमें हमारे दादा-दादी और नाना-नानी सिखाते हैं वह सबसे अच्छा होता है। हमें हमेशा बड़े और बुजुर्ग लोगों का आदर करना चाहिए और हर रोज हमें उनको प्रणाम करना चाहिए। हमारी नैतिकता ही है जो हमारे भारत को पूरे विश्व से भिन्न करती है।

हमारे देश में बहुत सारी पद्धतियाँ हैं, जिनके पालन करने से हमें आत्मिक शांति मिल सकती है और हम इस देश के अच्छे नागरिक बन सकते हैं। अगर इन पद्धतियों को युवा पीढ़ी ने नहीं सीखा तो फिर यह धीरे-धीरे लुप्त होती चली जाएँगी। अभी, आज इस पीढ़ी के साथ यही हो रहा है। युवा अब नई वैज्ञानिक खोजों से आश्चर्यचकित हैं और उसकी ओर आकर्षित हो रहे हैं। पूरा दिन एफ.बी., ट्विटर, टीवी, फोन, कम्प्यूटर आदि चलता ही रहता है, इसलिए बड़ों की यह जिम्मेदारी है कि वह युवाओं को सही मार्ग दिखाएँ। आज बहुत लोग नशे की ओर भी बहुत आकर्षित हो रहे हैं, खासकर युवा फिल्मों में देखकर सिगरेट, शराब, ड्रग्स की ओर आकर्षित हो रही है। उन्हें यह बताना बहुत जरूरी है कि यह सब हमारे शरीर और जीवन दोनों के लिए बहुत हानिकारक है। इससे बहुत ही बड़ा नुकसान होता है।

नशा करने से गरीब लोग ज्यादा अपनी जान गँवाते हैं क्योंकि उन्हें इसके बारे में कुछ भी पता नहीं होता। इसी कारण अनेक पत्नियाँ विधवा हो जाती हैं और अनेक बच्चे अनाथ। नशा करने से अनेक बीमारियाँ होती हैं, जैसे कैंसर आदि। सरकार को नशे को रोकने के लिए कड़ी पाबंदी लगानी चाहिए। हमारे देश का निर्माण हम पर ही निर्भर करता है। अगर हम अच्छे और ईमानदार हों तो हमारा देश सबसे अच्छी उन्नति करेगा। इसलिए हमें अपने संस्कारों को कभी भी नहीं त्यागना चाहिए। ❑

मानवता का निर्माण नैतिकता से होता है और नैतिकता का निर्माण अणुव्रत के नियमों से। अतः आज सबसे अधिक आवश्यकता नैतिकता अर्थात् चरित्र-निर्माण की है। जीवन को उठाने वाले सिद्धांत केवल विचार, नियमों में ही न रहें, बल्कि क्रिया में परिणत हों ताकि समाज में ही नहीं, विश्व में मानवता का शंखनाद हो सके।

जीवन मूल्यों को आचरण में उतारें

◈ **आकृति माथुर** 7वीं
महावीर सीनियर मॉडल स्कूल
संगम पार्क, जी.टी. करनाल रोड
दिल्ली

राष्ट्र न तो कोई भूमि का बेजान टुकड़ा होता है कि जिस पर किसी वस्तु का निर्माण किया जा सके। राष्ट्र किसी भवन का नाम या नक्शा भी नहीं है कि जिसकी मरम्मत या फिर जिसके अनुसार किसी तरह का कोई निर्माण-कार्य किया जा सके। राष्ट्र तो एक ऐसी भावना है जो व्यक्ति या व्यक्तियों को किसी भू-भाग के कण-कण से, प्रत्येक जड़-चेतन प्राणी और पदार्थ से जोड़े रखती है। यह भावना तभी सजीव-सप्राण रह पाती है जब उस भावना के अनुरूप एक विशिष्ट भू-भाग से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति में एकता का भाव और संगठन हो। उसके बाद राष्ट्र निर्माण संभव हो पाता है।

किसी भी समाज की धारणाएँ, मान्यताएँ, आदर्श और उच्चतर आकांक्षाएँ ही वहाँ के जीवन-मूल्यों का सृजन करती है और वह देश, काल व परिस्थिति सापेक्ष होती है। यद्यपि इन जीवन-मूल्यों की आधार-भूमि में प्रायः परिवर्तन नहीं होता, परंतु उनके व्यवहार रूप में परिस्थिति-जन्य परिवर्तन होता रहता है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने 'नैतिकता को व्यवहार की शुद्धि कहा है।' समाज में जो व्यवहार चलता है, उस व्यवहार में प्रामाणिकता रखना ही नैतिकता है। दूसरों

के अधिकार हड़पने की चेष्टा न करना नैतिकता का मूल है। सत्य अहिंसा का नैतिक पहलू है। नैतिकता सामाजिक जीवन का अपरिहार्य अंग है। किसी भी युग और किसी भी समाज में उसकी अनिवार्यता को नकारा नहीं जा सकता।

किसी भी राष्ट्र के भविष्य की कुंडली युद्ध या हिंसा में नहीं लिखी जाती, दिव्यदृष्टि की कलम से लिखी जाती है। वह दिव्य-दृष्टि है नैतिकता। नैतिकता की उपेक्षा कर जो भौतिक विकास की कल्पना की जा रही है, वह समस्या को सुलझा नहीं सकती। भौतिक धारा के साथ आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों का समन्वय जरूरी है। तकनीकी विकास, उद्योग-धंधे, कारखानों से विकसित राष्ट्र नहीं हो सकता। विकास के साथ साधन-शुद्धि का अभियान जरूरी है।

'सुधरे व्यक्ति समाज व्यक्ति से राष्ट्र स्वयं सुधरेगा' समझकर हर व्यक्ति अपने सुधार का संकल्प ले तो व्यक्ति-समाज का कायाकल्प होते देर नहीं लगेगी। समाज संरचना में नैतिक मूल्यों की भूमिका असंदिग्ध है। नैतिकता-अनैतिकता का विवाद चिरंतन है किंतु भारतीय दृष्टि से इसका समाधान 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' सूत्र में निहित है। अणुव्रत अनुशास्ता ने लिखा है कि जो दुर्व्यसनों की गिरफ्त में हो, अपराधों में लिप्त और भ्रष्टाचार में फँसा हो, वह समाज का सही नेतृत्व नहीं कर सकता।

आज हमारी संस्कृति की समझ प्रदूषित है। हमें 'कल्चर' के व्यामोह से बाहर आना होगा। कल्चर-सभ्यता का समानार्थी है। यहाँ गाँव के गरीब जन को असभ्य रहते हुए उसे असांस्कृतिक ही माना जाता है। आदिवासी को उसकी परंपरा से काटकर, शहरी बनाकर राष्ट्र का निर्माण नहीं हो सकता। *'सद्गुण सब साकार जहाँ पर, श्रेष्ठ वही इंसान है, मानवीय मूल्यों की रक्षा ही संस्कृति की पहचान है।'*

नशा नाश का द्वार माना जाता है। उससे दूर रहना ही श्रेयस्कर है। पहले व्यक्ति नशे को पकड़ता है फिर नशा व्यक्ति को पकड़ता है। नशे के कारण घर, परिवार, पैसा, रिश्ते-नाते और शरीर भी नष्ट हो जाता है। आजकल तो खाने के साथ-साथ खेलने में भी व्यसन नशा-सा हो गया है। जुआ खेलना, सट्टेबाजी करना आदि बहुत बड़ा व्यसन है। क्रिकेट आदि में करोड़ों का

सौदा होता है। आज यह बर्बादी का कारण बन रहा है। इन सबसे दूर रहकर ही हम एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं।

मानवता का निर्माण नैतिकता से होता है और नैतिकता का निर्माण अणुव्रत के नियमों से। अतः आज सबसे अधिक आवश्यकता नैतिकता अर्थात् चरित्र-निर्माण की है। जीवन को उठाने वाले सिद्धांत केवल विचार, नियमों में ही न रहें, बल्कि क्रिया में परिणत हों ताकि समाज में ही विश्व में मानवता का शंखनाद हो सके।

भारत में शिक्षा के मूलभूत उद्देश्यों में से एक प्रमुख उद्देश्य यह है कि ऐसे व्यक्तियों का निर्माण किया जाए जिसके कार्य एवं व्यवहार ऐसी रुचियों, अभिवृत्तियों एवं जीवन-मूल्यों से अभिप्रेरित हों जो स्वयं उनके लिए हितकर हों तथा समाज और राष्ट्र के लिए भी लाभकारी हो। आज सदाचरण, सत्य, अहिंसा, प्रेम, शांति जैसे शाश्वत परंपरागत मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठा की आवश्यकता है। सद्भावना, नैतिकता जैसे मूल्य न केवल व्यक्तिगत उत्थान के लिए अपितु सामाजिक एवं राष्ट्रीय प्रगति एवं शांति के लिए भी परम आवश्यक है।

नई शिक्षा-नीति में मूल्यों के गिरते स्तर पर चिंता करते हुए मूल्यपरक शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण, लोकतांत्रिक, चारित्रिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को मन में बैठाना और विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का शारीरिक, बौद्धिक और सौंदर्यपरक विकास करना नई शिक्षा नीति के लक्ष्यों में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। समाज से ही उसका अस्तित्व निर्माण होता है। समाज में रहने के कारण मनुष्य को सामाजिक नीति-नियमों का पालन करना आवश्यक होता है। सामाजिक जीवन-मूल्यों में समाज ही केंद्र-बिंदु है। समाज के नीति-नियम, रूढ़ि, परंपरा आदि को प्रमुखता दी जाती है। जिस चरित्रवान समाज व देश की कल्पना हम करते हैं, जिसकी इच्छा हमारे मन में है और हम जो कुछ हटकर अलग-सा करना चाहते हैं, उसकी शुरुआत स्वयं से ही होगी। स्व परिवर्तन से ही जग परिवर्तन संभव है। तो आइए, मानव संरचना के सूत्र सद्भावना, नैतिकता जैसे इन जीवन-मूल्यों की भूमिका को समझें, उनको अपने आचरण में उतारकर एक सुदृढ़, सभ्य और स्वस्थ समाज की रचना का अंग बनें। ❑

वक्त है गहरी नींद से जागने का

◈ **अंकिता गुरुरानी** 10वीं
सेंट थेरेसा सी.सै. स्कूल
निकट चर्च कंपाउंड
काठगोदाम, हल्द्वानी, उत्तराखंड

एक बच्चा कोरे कागज की तरह होता है और उस कागज पर नैतिक मूल्य और अच्छी आदतों की तहरीर लिखना माता-पिता का फर्ज होता है। हर माता-पिता को अपने बच्चों पर संपूर्ण ध्यान देना चाहिए। गहरी नींद से जागने का वक्त अब आ चुका है, जरूरत है, युवाओं पर दोष मढ़ने के बजाय इस ओर कुछ सार्थक कदम उठाएँ। ज्यादा से जयादा समय अपने बच्चों के साथ बिताएँ, उन्हें उचित मार्गदर्शन दें।

नैतिक मूल्य एक तरह से भारतीय संस्कृति की पहचान पुरखों से विरासत में मिली अनमोल धरोहर है। संपूर्ण विश्व में भारत की पहचान का प्रतीक नैतिकता है लेकिन कहते हुए बेहद अफसोस होता है कि आज की हमारी नई एवं आधुनिक पीढ़ी जिसमें मैं स्वयं आती हूँ, इस बेशकीमती धरोहर को खोती जा रही है। युवाओं का रुष्ट और रुखा व्यवहार, बड़ों के प्रति अनादर, कुतर्क, मनमानी यह सब दर्शाता है कि युवाओं में नैतिक मूल्यों का स्तर किस हद तक गिर चुका है।

आज से कुछ दशक पूर्व अपने बड़ों का सम्मान करना, उन्हें उचित प्रेम देना कर्तव्य माना जाता था। लोग मिलनसार थे, रिश्तों में गरमाहट थी लेकिन यह आज कहते हुए भी शर्म आती है कि जिन बूढ़े माँ-बाप ने पाल-पोसकर बड़ा किया, वही माँ-बाप आज बच्चों पर बोझ के समान हैं। मोबाइल फोन में युवा इतने ध्यानमग्न हैं कि मेल-मिलाप के लिए वक्त ही कहाँ? और रिश्ते तो आजकल फेसबुक पर बनते हैं, तो गर्मजोशी का कोई सवाल ही नहीं उठता।

धूम्रपान, पैसा, शराब, अय्याशी सब कुछ और वह भी शॉर्टकट से। ऐशोआराम की महत्त्वाकांक्षा ऐसी कि जब अपने किसी जूनियर या सहपाठी से पूछती हूँ,

तुम्हारा सपना क्या है, तो हर बार जवाब मिलता है 'पैसा'। जैसे जीवन में सब कुछ पैसा ही हो। इसके लिए कुछ भी कर गुजरने की ललक उनके चेहरों पर साफ झलकती है। न जाने ऐसे कितने उदाहरण हैं जो रोज अखबारों में छपते हैं और आसपास घटित होते हैं, जो दर्शाते हैं कि युवा किस हद तक खुद को भुला चुके हैं। सबसे ज्यादा तकलीफ तब होती है कि न तो उन्हें इसकी भनक, ना ही अफसोस। मदहोशियों और मदमस्तियों में चले जा रहे हैं किसी पागल पशु की तरह अपने मार्ग में आने वाली हर चीज को रौंदते, कुचलते हुए वे आसमानों में उड़ रहे हैं इस बात से बेखबर कि जब जमीन पर गिरेंगे तो क्या होगा?

कैसी विडंबना है यह जिस भूमि पर मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम और अर्जुन जैसे महापुरुषों का जन्म हुआ, उसी धरा पर आज हर दूसरे क्षण मर्यादा लाँघी जा रही है। आए दिन गुरुओं को अपमानित किया जाता है। कितना दुर्भाग्यपूर्ण है यह सब, कहते हैं 'असफलता तभी आती है जब हम अपने आदर्श, उद्देश्य और सिद्धांत भूल जाते हैं।'

बड़े-बड़े विद्वान, प्रख्यात पंडित ज्ञान की बघार लगाते हैं व चिंता जताते हैं और घर चले जाते हैं। वाह, क्या बात है! आज तो सभी ने विचार ही किया लेकिन इस दिशा में कोई सार्थक कदम नहीं उठाया। अगर ईमानदारी से सोचें तो पाएँगे कि समस्याएँ फैलाने वाले कोई और नहीं अपितु हमारे बड़े ही हैं। अपने बच्चों को अच्छे संस्कार व शिक्षा देने के बजाए उनके हाथों में लैपटॉप और इंटरनेट थमा दिया। थोड़े बड़े हुए नहीं कि महँगे मोबाइल और गाड़ियाँ दिला दीं और समझ लिया कि हमारा फर्ज पूरा हो गया।

एक बच्चा कोरे कागज की तरह होता है और उस कागज पर नैतिक मूल्य और अच्छी आदतों की तहरीर लिखना माता-पिता का फर्ज होता है। हर माता-पिता को अपने बच्चों पर संपूर्ण ध्यान देना चाहिए। गहरी नींद से जागने का वक्त अब आ चुका है, जरूरत है, युवाओं पर दोष मढ़ने के बजाय इस ओर कुछ सार्थक कदम उठाएँ। ज्यादा से ज्यादा समय अपने बच्चों के साथ बिताएँ, उन्हें उचित मार्गदर्शन दें। उन्हें देश के सांस्कृतिक गौरव से अवगत कराएँ और युवाओं को भी आवश्यकता है समझने की अपने आपको और अपने देश को।

पाश्चात्य के रंग में रंगने की बजाय अपनी पहचान बनाने के प्रयत्न करने होंगे। साथ ही जीवन में एक-दूसरे के प्रति सद्भावना, आदर व प्यार के साथ पेश आना होगा। युवा पीढ़ी को नशे की लत से दूर करने के लिए सरकार के साथ-साथ हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी बनती है। नैतिकता से परिपूर्ण जब हमारा आज का युवा होगा तो राष्ट्र के निर्माण व उन्नति की राह में कोई बाधा नहीं आएगी। ❑

राष्ट्र निर्माण के लिए आवश्यक है कि युवा शक्ति अपनी पूरी ऊर्जा के साथ नैतिकता और सद्भावना को ध्यान में रखते हुए राष्ट्र हित के कार्यों में संलग्न हो। यदि युवा शक्ति नशे की प्रवृत्ति से अपने मन मस्तिष्क और बुद्धि को कुंठित कर लेगी तो राष्ट्र का पतन अवश्यभावी है। अतः यह अत्यंत आवश्यक है कि नशामुक्ति अभियान को एक व्यापक जनांदोलन के रूप में प्रसारित किया जाए, जिससे प्रत्येक नागरिक अपनी पूरी निष्ठा के साथ राष्ट्र निर्माण में अपनी भागीदारी कर सके।

नशा मुक्ति से ही प्रगति

◈ **भव्या तिवारी** 8वीं
कैंब्रिज फाउंडेशन स्कूल
राजौरी गार्डन, दिल्ली

राष्ट्र निर्माण का तात्पर्य राष्ट्र को सर्वांगीण और व्यापक रूप से उत्तरोत्तर प्रगति के मार्ग पर अग्रसर रखना है। राष्ट्र निर्माण में सर्वप्रथम यह तथ्य आवश्यक है कि राष्ट्र के सभी वर्गों का समान रूप से विकास हो। यदि कोई भी वर्ग अछूता रह जाता है तो हम सच्चे अर्थों में राष्ट्र निर्माण नहीं कर सकते।

राष्ट्र निर्माण में विविध कारक सहायक हैं। इनमें से सद्भावना और नैतिकता प्रमुख कारक हैं। राष्ट्र निर्माण में संलग्न सभी व्यक्ति और जनसाधारण को सद्भावना और नैतिकता के आदर्शों का पालन करना अतिआवश्यक होता है। सद्भावना और नैतिकता राष्ट्र को प्रगति के मार्ग पर ले जाने में जनशक्ति को क्षीण करते हुए उसे अवनति के मार्ग पर ले जाती है। अतः नशामुक्ति अभियान राष्ट्र पतन की प्रक्रिया को अवरुद्ध करने के लिए प्राथमिक आवश्यकता है।

नैतिकता से तात्पर्य है देश, समाज और वैश्विक नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था और उनका अनुपालन। राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक को विभिन्न स्तरों पर नैतिक मूल्यों का अनुपालन करना होता है। व्यक्ति के उसके परिवार और समाज

के प्रति कर्तव्य का पालन उसके व्यक्तिगत जीवन में नैतिकता का संचार करते हैं।

राष्ट्रीय स्तर पर व्यक्ति को राष्ट्रहित में निरंतर कार्य करना राष्ट्रीय नैतिक मूल्यों की श्रेणी में आता है। वैश्विक स्तर पर समकालीन वैश्विक समस्याओं के प्रति जागरूकता और मानवता के प्रति जागरूकता और एक मानवतावादी दृष्टिकोण से अपने कर्तव्यों का निर्वहन उच्च स्तरों पर नैतिकता को परिभाषित करते हैं।

नैतिकता का धरातल अत्यंत व्यापक है। यदि व्यक्ति और समाज विभिन्न स्तरों की नैतिकता का अनुपालन करते रहें तो परस्पर सद्भावना के लिए आवश्यक है कि हम अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए दूसरे व्यक्ति, समाज और वर्गों की भावनाओं का भी आदर करें। आदर्श समाज या राष्ट्र की परिकल्पना में यह आवश्यक है कि नैतिक मूल्यों का प्रत्येक स्तर पर अनुपालन हो और दुर्भावना, ईर्ष्या न हो। विभिन्न जातियों, समुदायों, क्षेत्रों, भाषाओं के प्रति परस्पर प्रेम सद्भावना के परिक्षेत्र में आता है।

नैतिकता और सद्भावना प्रगति सूचक हैं और नशाखोरी पतन सूचक है। अतः समाज में नैतिकता और सद्भावना के प्रति जागरूकता के पहले यह आवश्यक है कि उसे नशाखोरी की आसुरी प्रवृत्तियों से मुक्त रखा जाय। नशा व्यक्ति की मानसिकता और बुद्धि को कुंठित कर देता है। अतः नशामुक्ति व्यक्ति और समाज को उसकी ऋणात्मक सोच और कुंठित बुद्धि के अंध कोष्ठ से बाहर निकालने के लिए अत्यावश्यक है।

नशामुक्ति अभियान के लिए आवश्यक है कि नशे के मूलभूत कारणों का अनुशीलन करना और फिर उसके उन्मूलन के लिए सतत प्रयास करना। नशामुक्ति के लिए व्यापक जन चेतना, सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय स्तर पर अथक प्रयत्न आवश्यक है।

राष्ट्र निर्माण की मूलभूत आवश्यकता है कि प्रत्येक नागरिक नैतिकता के विभिन्न स्तरों पर अवस्थित नैतिक मूल्यों का ध्यान रखते हुए अपने कर्तव्यों का पालन करे। यदि राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक पूरी ईमानदारी, सच्चाई और कर्तव्यनिष्ठा का पालन करे और व्यक्तिगत, सामाजिक और वैश्विक नैतिक

मूल्यों के प्रति सजग रहे तो राष्ट्र निर्माण के पथ में कोई अवरोध नहीं रहेगा।

राष्ट्र के विभिन्न वर्गों, समुदायों, भाषाओं, धर्मों और जातियों में परस्पर प्रेम और सद्भावना होने से सभी एक दूसरे के हितों को उतना ही महत्त्व देते हैं जितना वे अपने स्वार्थ को। राष्ट्र के विभिन्न वर्गों के सर्वांगीण विकास और राष्ट्र निर्माण के लिए परस्पर सद्भावना होना अत्यावश्यक है। यदि समाज के विविध वर्गों के मध्य ईर्ष्या, द्वेष और कलह विद्यमान हों तो राष्ट्र इन्हीं समस्याओं में ही उलझा रहेगा और उसकी प्रगति सम्भव नहीं है।

राष्ट्र निर्माण के लिए आवश्यक है कि युवा शक्ति अपनी पूरी ऊर्जा के साथ नैतिकता और सद्भावना को ध्यान में रखते हुए राष्ट्र हित के कार्यों में संलग्न हो। यदि युवा शक्ति नशे की प्रवृत्ति से अपने मन-मस्तिष्क और बुद्धि को कुंठित कर लेगा तो राष्ट्र का पतन अवश्यभावी है। अतः यह अत्यंत आवश्यक है कि नशामुक्ति अभियान को एक व्यापक जनांदोलन के रूप में प्रसारित किया जाए, जिससे प्रत्येक नागरिक अपनी पूरी निष्ठा के साथ राष्ट्र निर्माण में अपनी भागीदारी कर सके।

वास्तविक जीवन में इन मूल्यों को अपनी दिनचर्या में समाहित करना एक अत्यंत कठिन कार्य है। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि हम हार मान कर बैठ जाएँ और राष्ट्र के निर्माण की जिम्मेदारी केवल सरकार पर छोड़ दें। यदि हम आंशिक रूप से भी सद्भावना और नैतिकता व नशामुक्ति अपने जीवन में उतार सकें तो हमारे प्रयास ही राष्ट्र निर्माण और राष्ट्रोन्नति के लक्ष्य को एक सीमा तक प्राप्त कर सकते हैं। ❑

जहाँ सद्भावना, वहाँ शांति

◈ **अनीश सिंह** 8वीं
न्यू एरा पब्लिक स्कूल
स्कीम नं. 54ए, इंदौर
मध्य प्रदेश

राष्ट्र निर्माण तभी संभव है जब देश में विकास और समृद्धि का वातावरण हो। समाज में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की राष्ट्र निर्माण में अहम् भूमिका है। देश के नागरिकों को आपसी भाईचारे के साथ सद्भावना में साथ-साथ होना चाहिए ताकि देश में शांति का वातावरण बने क्योंकि कोई भी देश भीतरी शांति के बिना विकसित और समृद्ध नहीं बन सकता।

आज के बच्चे ही कल के भविष्य हैं, अतः शिक्षा के साथ-साथ नैतिक मूल्यों को जीवन में स्थान दें। हम हर कार्य अपनी अंतर्रात्मा एवं उच्च आदर्शों ध्यान में रखकर करें। परिवार बच्चों की प्रथम पाठशाला है, अतः हर माता-पिता को स्वयं का आचरण शुद्ध, सरल-पवित्र मर्यादापूर्ण रखना चाहिए। आज जो संस्कार बच्चों में स्थापित होंगे वो ही आगे चलकर देश और समाज के परिवार के विकास में सहायक होंगे।

एक आदर्श परिवार या देश के संचालन हेतु परिवार के सभी सदस्यों या देश के सभी नागरिकों में शिष्टाचार, सदाचार, त्याग, मर्यादा, अनुशासन, परिश्रम की आवश्यकता है। यदि जीवन में शिष्टाचार, सदाचार, अनुशासन, मर्यादा हैं तो परिवार में शांति रहेगी। यदि परिवार या राष्ट्र में स्वार्थ लोलुपता, पद लोलुपता बनी रहेगी तो परिवार भी टूटेगा, राष्ट्र भी भ्रष्टाचार से प्रदूषित होता रहेगा। इसलिए अहंभाव त्यागकर, स्वार्थ त्यागकर, प्रलोभनों से दूर रहकर अपने व्यक्तिगत जीवन में विनम्रता, त्याग परोपकार को जीवन में स्थान देना होगा तभी हम एक आदर्श परिवार का सृजन कर एक आदर्श और खुशहाल राष्ट्र का स्वप्न साकार कर सकते हैं।

राष्ट्र निर्माण तभी संभव है जब देश में विकास और समृद्धि का वातावरण हो। समाज में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की राष्ट्र निर्माण में अहम् भूमिका है। देश के नागरिकों को आपसी भाईचारे के साथ सद्भावना में साथ-साथ होना चाहिए ताकि देश में शांति का वातावरण बने क्योंकि कोई भी देश भीतरी शांति के बिना विकसित और समृद्ध नहीं बन सकता।

समाज में नैतिकता का होना भी अत्यंत आवश्यक है। नैतिकता ही समाज और देश का दर्पण है। समाज जितना अधिक नैतिक होगा, देश उतना ही शक्तिशाली और खुशहाल होगा। राष्ट्र निर्माण में जनता की अहम् भूमिका होती है। देश के नागरिक ही अपने श्रम और सेवा से देश का विकास करते हैं। इसलिए लोगों को स्वस्थ होना महत्त्वपूर्ण है। नशामुक्ति के द्वारा लोगों के स्वास्थ्य में सुधार हो सकता है। आने वाली पीढ़ी भी नशा मुक्ति से स्वस्थ समाज के रूप में राष्ट्र का निर्माण कर सकती है। नशा मुक्ति से युवाओं को एक नई विकास की राह दिखाई जा सकती है।

यदि जीवन में उच्च आदर्शों, नैतिक मूल्यों को महत्त्व दिया जाए तो परिवार से लेकर, समाज से लेकर राष्ट्र हर क्षेत्र में चहुँमुखी विकास कर सकता है। आज न्यायालय भी नैतिक मूल्यों के अभाव में सही निर्णय देने में असमर्थ होते जा रहे हैं। नैतिक मूल्यों के अभाव के कारण व्यक्ति के चरित्र में गिरावट आती जा रही है। आज अपराधों का ग्राफ हर वर्ष बढ़ता जा रहा है। चोरी, डकैती, बलात्कार, हत्याएँ हो रही हैं क्योंकि व्यक्ति स्वयं अपने जीवन में उच्च आदर्शों, नैतिक मूल्यों को जीवन में स्थान नहीं दे पा रहा है।

पहले ऐसे नेता थे जो नैतिक मूल्यों को महत्त्व देते थे। आज अंतर्रात्मा की आवाज न सुनकर केवल भौतिक सुविधाओं की ओर ध्यान दिया जा रहा है। हर खाद्य पदार्थ, बेसन, दाल, मिर्च, घी, खोया और तेल में मिलावट आ रही है। व्यापारी वर्ग अत्याधिक मुनाफे के प्रलोभन में नैतिक मूल्यों को तिलांजलि दे रहा है। आज नैतिक मूल्यों के अभाव में परिवार टूट रहे हैं। अपने स्वयं के बच्चे, पत्नी के अलावा अन्य सदस्यों पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

आज हमारे सामने एक सबसे बड़ी सामाजिक समस्या पैदा हो रही है युवाओं का नशे का शिकार होना। जो कल के होने वाले देश के जाँबाज कर्णधार

है, आज वही सबसे ज्यादा नशे के जाँबाज कर्णधार हैं, आज वही सबसे ज्यादा नशे के शिकार हैं। जिनको देश की उन्नति में अपनी ऊर्जा लगानी थी, वह आज अपनी अनमोल शारीरिक और मानसिक ऊर्जा को चोरी, लूट-पाट और मर्डर जैसी सामाजिक कुरीतिओं में नष्ट कर रहे हैं। इन कुरीतियों से उन्हें बचाना ही होगा। ❑

नैतिक मूल्य सिखाने जरूरी

नैतिक पतन देश का पतन होता है, अतः इसे रोकना हमारी जिम्मेदारी है। हमें बचपन से ही बच्चों में शिष्टाचार और सच्चरित्रता के गुण डाल देने चाहिए ताकि बच्चे आगे चलकर राष्ट्र निर्माण में अपना पूर्णतः योगदान दे सकें। जिससे नैतिकता बनी रहे और बच्चे नैतिक मूल्यों का हनन न करें।

◈ **अंजलि गुप्ता** 10वीं
एस.एस.एल.टी. गुजरात
सी.सै. स्कूल
1, राजनिवास मार्ग, दिल्ली

राष्ट्र निर्माण का आशय है राष्ट्र की प्रगति। राष्ट्र को श्रेष्ठतर या निकृष्टतर रूप देने में विभिन्न चीजों की भूमिका हो सकती है। राष्ट्र निर्माण में विभिन्न चीजों की भूमिका हो सकती है। राष्ट्र निर्माण में सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति, युवा पीढ़ी, विद्यार्थी, नारी सभी अत्यधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

राष्ट्र निर्माण में सबसे महत्त्वपूर्ण युवा पीढ़ी है क्योंकि वही राष्ट्र का निर्माण करती है। राष्ट्र निर्माण में युवा पीढ़ी का सहयोग राष्ट्र के प्रति उसके दायित्व की अनुभूति का प्रमाण है, राष्ट्र की सुख-शांति, समृद्धि और प्रगति में उसकी साझेदारी है। किसी भी राष्ट्र के लिए उसके नागरिक बहुत महत्त्वपूर्ण होते हैं। राष्ट्र का विकास उसके नागरिकों पर निर्भर करता है।

यही नागरिक कुशल कार्य क्षमता का निर्माण कर राष्ट्र की क्षमता को बढ़ाते हैं, जो राष्ट्र निर्माण की दिशा में सहयोग करता है। परंतु जब यही नागरिक या युवा पीढ़ी गलत राह पर अग्रसर हो जाएँगे तो देश की उन्नति किस प्रकार संभव है। वर्तमान युवा पीढ़ी नशीले पदार्थों का अत्यधिक सेवन करने

लगी है जो किसी भी प्रकार देश या राष्ट्र निर्माण के लिए उपयोगी होती नहीं है।

वे पदार्थ जिनके सेवन से मानसिक विकृति उत्पन्न होती है, नशीले या मादक द्रव्य हैं किसी प्रकार के अधिकार, प्रवृत्ति, बल आदि मनोविकार की अधिकता, तीव्रता या प्रबलता के कारण उन्पन्न होने वाली अनियंत्रित या असंतुलित मानसिकता अवस्था नशा है। भारतीय सरकार ने ऐसी वस्तुओं के प्रयोग पर प्रतिबंध तो लगा रखा है परंतु कुछ लोग इसके सेवन के आदी हो गए हैं, जिनके लिए इनसे मुक्ति पाना अत्यधिक कठिन है। अधिकतर लोग इसका उपयोग दैनिक जीवन की मानसिक परेशानियाँ कम करने के लिए करते हैं और कुछ लोग इसका प्रयोग हर्षोल्लास को व्यक्त करने के लिए करते हैं।

नशीले पदार्थों के सेवन के कारण व्यक्ति अपना होश, विवेक आदि खो बैठता है। इस कारण व्यक्ति को अप्रत्यक्ष रूप से हानि ही होती है, यह कलह को बढ़ाती है और बुद्धि को दुर्बल बनाती है। इसके कारण बेरोजगारी की समस्या और अधिक बढ़ती है।

इन सभी समस्याओं के कारण होने वाली हानि को रोकने के लिए इन वस्तुओं का सेवन करने वाले लोगों को नशामुक्ति की राह पर अग्रसर होना चाहिए ताकि इसके उपयोग को रोका जा सके और वह देश निर्माण में अपना पूर्ण योगदान दे सके। लोगों द्वारा नशे को हतोत्साहित किया जाना चाहिए तथा इस पर पूर्णतः प्रतिबंध लगा देना चाहिए, अन्यथा यह समस्या देश को उन्नति की ओर ले जाने के विपरीत इसे अवनति की ओर ले जाएगी।

बच्चे भी राष्ट्र निर्माण में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं, अतः एक अच्छे नागरिक की तरह बच्चों को भी अपने अधिकारों के साथ-साथ अपने कर्तव्यों को भी याद रखना चाहिए। वर्तमान में बच्चों में निरंतर नैतिक पतन होता जा रहा है। जब बच्चों में ही संस्कार नैतिकता व देश भक्ति जैसी भावनाओं का विकास नहीं होगा तब राष्ट्र का भावी निर्माण कैसे संभव हो पाएगा? नैतिक मूल्य एक तरह से भारतीय संस्कृति की पहचान, पुरखों से विरासत में मिली अनमोल धरोहर है। परंतु आधुनिक पीढ़ी ने नैतिकता की

सभी सीमाओं का उल्लंघन कर दिया है। युवा पीढ़ी, विद्यार्थी आदि सब नैतिकता को खोते जा रहे हैं। बड़ों के प्रति अनादर, भ्रष्टाचार, शिष्टाचार की कमी, नैतिक मूल्यों के हनन से यह साबित होता है कि उनका नैतिक स्तर कितना गिर चुका है।

यदि इसी प्रकार युवाओं में निरंतर नैतिक पतन होता रहा तो देश का पतन भी निश्चित है। नैतिक मूल्यों में चरित्र बल भी महत्त्वपूर्ण है। सच्चरित्रता के कारण ही व्यक्ति को मान, आदर, यश और सुख की प्राप्ति होती है। आचरण की पवित्रता के महत्त्व एवं प्रभाव को प्रदर्शित करने वाले ऐसे कई उदाहरण मिल जाएँगे जिनमें एक या कुछ सदाचारी व्यक्ति के कारण उनके परिवार की ही नहीं बल्कि देश और राष्ट्र की भी उन्नति हुई है और वे सम्मान के शिखर तक पहुँच गए। सदाचारी व्यक्ति के कारण नैतिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय उत्थान होता है।

नैतिक मूल्यों में सच्चरित्रता के अतिरिक्त शिष्टाचार भी शामिल होता है। उचित आचरण, व्यवहार, सदाचार, आदर-सत्कार शिष्टाचार कहलाता है। शिष्टाचार मनुष्य में मानवीय गुणों का विकास करता है। शिष्टाचार जीवन में सुख, शांति और सौंदर्य का प्रसार करता है। विनम्रता शिष्टाचार का अनिवार्य गुण है। कबीरदास जी द्वारा कहा गया है कि

ऐसी वाणी बोलिये मन का आपा खोय।

अपना तन शीतल करे, औरन को सुख होय।।

व्यवहार और विनम्रता सिद्धांत के मूल तत्त्व हैं। उपर्युक्त पंक्तियों का अर्थ है कि हमें ऐसा व्यवहार, वाणी का प्रयोग करना चाहिए जैसे कोई भी व्यक्ति हमारे साथ करता है।

भ्रष्टाचार के कारण भी नैतिकता का हनन होता है। दूषित और निंदनीय आचरण भ्रष्टाचार विश्व में दिनों-दिन बढ़ता ही जा रहा है। भ्रष्टाचार के कुप्रभाव पूरे समाज पर पड़ते हैं। जैसे-जैसे लोगों की संख्या बढ़ती है वैसे-वैसे नैतिकता घटती जाती है। काला धन इकट्ठा करना, अवैध कार्य करना, रिश्वत देना, बेईमानी आदि सब भ्रष्टाचार के अंतर्गत आते हैं। आज नैतिक

शिक्षा और सामाजिक चेतना बच्चों को विद्यालयों में दी जानी चाहिए ताकि बच्चे नैतिक मूल्यों का महत्त्व बचपन से ही समझ सकें। लोगों द्वारा भ्रष्टाचार को हतोत्साहित और शिष्टाचार, सच्चरित्रता को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को निजी स्वार्थ त्यागकर अपना नैतिक मनोबल बढ़ाना चाहिए तथा भ्रष्टाचार के खिलाफ एकजुट होकर लड़ना चाहिए।

नैतिक पतन देश का पतन होता है अतः इसे रोकना हमारी जिम्मेदारी है। हमें बचपन से ही बच्चों में शिष्टाचार और सच्चरित्रता के गुण डाल देने चाहिए ताकि बच्चे आगे चलकर राष्ट्र निर्माण में अपना पूर्णतः योगदान दे सके। जिससे नैतिकता बनी रहे और बच्चे नैतिक मूल्यों का हनन न करें।

जिस प्रकार राष्ट्र निर्माण में नैतिकता और नशामुक्ति की महत्त्वपूर्ण भूमिका है, उसी प्रकार सद्भावना भी महत्त्वपूर्ण है। सद्भावना का अर्थ है, सांप्रदायिक दंगे न करके, शांति बनाए रखना। जब धर्म को राष्ट्र का आधार मान लिया जाता है तब वह सांप्रदायिकता कहलाती है। लोगों के लिए उनका देश सर्वोपरि होना चाहिए न कि उनका धर्म। लोगों को अपने देश के अन्य नागरिकों के साथ सद्भावना बनाए रखनी चाहिए चाहे वो किसी भी धर्म के हों। यदि लोगों के बीच सद्भावना नहीं होगी तो प्रतिदिन सांप्रदायिक दंगे होंगे जो राष्ट्र की शांति को भंग करेंगे। अंततः हम इसी परिणाम पर पहुँचते हैं कि किसी भी राष्ट्र के निर्माण में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका है। ❑

संस्कृति सामाजिक संस्कारों का दूसरा नाम है जिसे कोई समाज विरासत के रूप में प्राप्त करता है। दूसरे शब्दों में संस्कृति एक विशिष्ट जीवन शैली ही है। इसके पीछे एक सुदीर्घ परंपरा होती है। भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम एवं महत्त्वपूर्ण संस्कृतियों में से एक है। भारतीय संस्कृति के मूल रूप का परिचय हमें वेदों से मिलता है। भारतीय संस्कृति एक लंबी ऐतिहासिक परंपरा के साथ आज भी निरंतर विकास पथ पर अग्रसर है।

युवाओं का भटकना घातक

◈ **मीनल अग्रवाल** 9वीं
राजा राम मोहन राय
पब्लिक स्कूल
से. 8, रोहिणी
मधुबन चौक, दिल्ली

एक तरह से भारतीय संस्कृति की पहचान पुरखों से विरासत में मिली अनमोल धरोहर है। युवा पीढ़ी किसी भी राष्ट्र का आधार होती है। जिस तरह से कोई भी भवन बिना नींव के नहीं टिक सकता उसी तरह से कोई राष्ट्र युवा शक्ति के बिना प्रगति नहीं कर सकता। युवा पीढ़ी वह शक्ति है जो हमारे देश को महाशक्ति बना सकती है। भारत की लगभग 66 फीसदी आबादी युवा है। युवा भारत के कंधों की ताकत को देखते हुए यह कहा जाता है कि आज बेशक अमेरिका महाशक्ति है लेकिन भारत को विश्वशक्ति बनने से दुनिया की कोई ताकत रोक नहीं सकती।

इतिहास से यह बात सिद्ध होती है कि आजादी की लड़ाई में इस देश के नौजवान सूरमाओं ने अपने प्राणों की बाजी लगा दी थी। युवा नेतृत्व नेताजी सुभाष चंद्र बोस, भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव के बलिदान को भला कौन भुला सकता है। खुदीराम बोस, जिन्होंने महज 23 साल की अवस्था में फाँसी के फँदे को चूम लिया था। ऐसे ही अनेक उदाहरणों से भारत का इतिहास भरा पड़ा है।

आज जिस तरह से देश के हालात बने हैं, राजनीतिक पार्टियों के दबदबे में भ्रष्टाचार और आतंक का वातावरण है। जिस प्रकार से राजनीतिज्ञ अपने निजहितों के चलते देश की जड़ों को खोखला कर रहे हैं, ऐसे में निश्चय तौर पर युवाओं की भूमिका काफी अहम् हो जाती है कि वे स्वयं ऐसी मिसाल पेश करें और नेतृत्व संभालें कि दुनिया भारत की ताकत का अहसास कर सके।

अफसोस इस बात का है कि युवाओं में नशावृत्ति बढ़ रही है। वे गलत संगत में आकर अपने रास्ते से भटक रहे हैं जो राष्ट्र के लिए बेहद घातक है। अपने स्वार्थों को पूरा करने के लिए युवा शक्ति का मानस बदलने वाले गद्दारों से युवाओं को सावधान रहना और शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति करनी चाहिए ताकि वे देश के लिए कुछ कर सकें।

भारत को इक्कीसवीं सदी में प्रवेश हुए एक दशक गुजर चुका है। इक्कीसवीं सदी में प्रवेश की कल्पना बड़ी मोहक थी। अब वह अपने वास्तविक रूप में आ रही है। यह इक्कीसवीं सदी भारत के लिए अनेक नई नई उपलब्धियों से भरी होगी। भारत 2030 तक विकसित राष्ट्र बन जाएगा। यह सदी कम्प्यूटर की है। इक्कीसवीं सदी में भारत आर्थिक प्रगति की दौड़ में काफी आगे निकल जाएगा।

उदारीकरण और वैश्वीकरण की नीति पर चलकर भारत समृद्ध हो जाएगा। इस सदी में भारत एक बार पुनः विश्व का नेतृत्व करेगा। भारत के जीवन मूल्य सभी देशों को प्रभावित करेंगे। इस सदी में भारत की कृषि की दशा में गुणात्मक सुधार आएगा। हमें केवल कल्पना लोक में विचरण नहीं करना अपितु वास्तविकता पर भी दृष्टि रखनी है।

संस्कृति सामाजिक संस्कारों का दूसरा नाम है जिसे कोई समाज विरासत के रूप में प्राप्त करता है। दूसरे शब्दों में संस्कृति एक विशिष्ट जीवन शैली ही है। इसके पीछे एक सुदीर्घ परंपरा होती है। भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम एवं महत्त्वपूर्ण संस्कृतियों में से एक है। भारतीय संस्कृति के मूल रूप का परिचय हमें वेदों से मिलता है। भारतीय संस्कृति एक लंबी ऐतिहासिक परंपरा के साथ आज भी निरंतर विकास पथ पर अग्रसर है। भारतीय

संस्कृति में सत्य, अहिंसा, प्रेम-त्याग-बलिदान, परोपकार आदि विशेषता रही है। भारतीय संस्कृति ने अन्य संस्कृतियों की अच्छी-अच्छी बातों को आत्मसात कर लिया है। विविध संस्कृतियों को पचाकर यह सामाजिक संस्कृति बन गई है। कवि गुरु रवीन्द्रनाथ टैगौर ने भारत को महामानवता का सागर कहा है। यहीं विविध भाषाओं, विविध नृत्यों, विविध पर्वों, विविध संगीत शैलियों में अद्‌भुत समन्वय देखने को मिलता है। इसी भावना ने भारतीय संस्कृति को जीवंत बनाया हुआ है। हमारी संस्कृति अत्यंत समृद्ध एवं गरिमामय है।

युवा आगे बढ़े, माँ भारती की सेवा का संकल्प धारण करते हुए देश की तरफ गिद्धदृष्टि लगाए बैठे नापाक लोगों को मुहतोड़ जवाब देना सीखें और देश में आपसी भ्रातृ भाव बढ़ाएँ। ❑

शराब बिक्री पर लगे पूर्ण प्रतिबंध

◈ **नमन माधव** 10वीं
दिल्ली पब्लिक स्कूल
बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश

हालात यह हैं कि उम्र के जिस पड़ाव में हमारी पीढ़ी को सृजनात्मक होना चाहिए वह नशे के गर्त में समाती जा रही है। हमारी सरकार इस विषय में थोड़ी जागरूक जरूर हुई है और चोरी-छिपे नशीली दवाइयों, ड्रग्स व शराब के तस्करों को पकड़ने का अभियान चला रही है तथा नशाखोरी की आदत को सुधारने के लिए नशामुक्ति केंद्र खोल रही है।

सृष्टि के आरंभ से जैसे-जैसे मनुष्य का विकास होता गया, वैसे-वैसे जंगलों में रहने वाले मनुष्य ने अपनी बुद्धि के बल पर पहले परिवार, कबीलों, जाति और समाज का निर्माण किया। विकास के इस क्रम में मनुष्य में कुछ प्राकृतिक व मानवीय गुण विकसित हुए और धीरे-धीरे समाज के संचालन के लिए कुछ नियम बनाए। इन नियमों को लागू करने के लिए अभिव्यक्ति की जरूरत महसूस हुई, अतः भाषा व शब्दों का निर्माण व विकास का क्रम शुरू हुआ।

आज हम जिस समाज में जी रहे हैं वह करोड़ों व अरबों वर्षों के विकास का परिणाम है। इस विकास के क्रम में मनुष्य में कुछ शिक्षा का अविर्भाव हुआ जिसके कारण सद्‌भावना व नैतिकता के मानवीय गुण विकसित हुए जो मनुष्य में चेतना पैदा कर आपस में जोड़ने और समाज की समरसता में अहम् भूमिका निभाते हैं।

सद्‌भावना, जहाँ हमें दूसरे मनुष्यों के प्रति अच्छे व्यवहार, प्यार, संपर्क और सहयोग की भावना पैदा करती है, वहीं नैतिकता हमें अच्छे कामों के प्रति प्रेरित करती है। नैतिकता हमें अनैतिक कार्य करने से रोकती है। हमारा

अंतर्मन हमें नैतिक और अनैतिक के बीच विभेद कर गलत कार्य को करने से रोकता है। सही मायने में सत्य ही नैतिक है और असत्य अनैतिक।

सद्भावना मानव का ऐसा नैसर्गिक प्राकृतिक गुण है जो परिवार व समाज के समग्र वातावरण को खुशनुमा और आनंदमय बनाता है।

यदि हम सद्भावना से अपने से बड़े बुजुर्गों व संबंधियों का सम्मान और छोटों को प्यार करते हैं तथा परिवार में छोटी-छोटी बातों को अनदेखा कर अपने से छोटों की गलतियों को क्षमा करने का गुण विकसित कर लेते हैं तो बेवजह पारिवारिक कलह और अनचाहे विवाद से बच सकते हैं तथा दुश्मन को भी सद्भावना व प्यार से अपना मित्र बना सकते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति तथा समाज की कुछ मान्यताएँ होती हैं जिनके प्रकाश में वह जगत की वस्तुओं एवं घटनाओं का विवेचन करता है, तदनानुसार उन्हें स्वीकारता है। ये मान्यताएँ वंश परंपरा में समय के साथ-साथ आगे बढ़ती रहती हैं तथा सामान्यतः पूर्वजों के अनुभवजनित तथ्यों पर आधारित होती है। प्रत्येक मनुष्य अपने नैतिक तथा अनैतिक आधार पर इनमें कुछ संशोधन करता है, कुछ जोड़ता है तथा कुछ घटाता है और सद्भावना के साथ परिवार को मानने का प्रयत्न करता है।

सत्य का विकास ही नैतिक व अंतिम चरण होता है किंतु मनुष्य का कर्तव्य उस काल्पनिक सत्य को पाने के भ्रमजाल में फँसने की अपेक्षा स्वयं तथा समाज की उपलब्ध सूचनाओं को तार्किक विश्लेषण कर सत्य के निकटतम जाने का प्रयत्न करना मात्र है जो एक सतत् प्रक्रिया है।

नित-नए वैज्ञानिक आविष्कार इसी प्रक्रिया के अंग हैं जिनमें से कोई भी अंतिम नहीं कहा जा सकता तथापि इन्हें विकसित किया जाता है एवं मानवीय विकास एवं सुख-सुविधाओं और नैतिक तथा अनैतिकता के आधार पर इन्हें अपनाया जाता है।

हमारे देश में युवकों द्वारा नशाखोरी भी एक बड़ी विकट समस्या है। हमारे समाज में पश्चिमी सभ्यता एवं आधुनिकता की दौड़ में नशाखोरी की आदत एक बड़ी समस्या उत्पन्न कर रही है। नवीनतम आँकड़ों के अनुसार सारे

संसार में नशाखोरी में भारत का प्रथम स्थान है। हमारा आज का नवयुवक किसी-न-किसी रूप में नशे का शिकार है, जिससे हमारी युवा पीढ़ी पूर्णतः निष्क्रिय, आलसी और नाकारा होती जा रही है जिसके कारण समाज में सद्भावना की कमी के साथ-साथ नैतिकता का पतन भी हो रहा है।

हालात यह हैं कि उम्र के जिस पड़ाव में हमारी पीढ़ी को सृजनात्मक होना चाहिए वह नशे क गर्त में समाती जा रही है। हमारी सरकार इस विषय में थोड़ी जागरूक जरूर हुई है और चोरी-छिपे नशीली दवाइयों, ड्रग्स व शराब के तस्करों को पकड़ने का अभियान चला रही है तथा नशाखोरी की आदत को सुधारने के लिए नशामुक्ति केंद्र खोल रही है। फिर भी नशामुक्ति के लिए चलाए जा रहे इन प्रयासों के बावजूद हमें आंशिक सफलता ही मिल रही है, क्योंकि जितने भी प्रयास किए जा रहे हैं वह नाकाफी साबित हो रहे हैं।

नशामुक्ति के लिए हमारे परिवार व समाज को जागरूक होने की बहुत जरूरत है। माता-पिता को परिवार में बच्चों के विकास पर खास ध्यान देकर इसके दुष्परिणामों के प्रति सचेत व समझ विकसित करनी चाहिए तथा बचपन से बच्चों में अच्छे संस्कार डालने चाहिए और जो लोग नशाखोरी के आदि हो गए हैं उनका सरकारी केंद्रों व अस्पतालों में उचित उपचार करना चाहिए। समाज विरोधी तत्त्वों व नशीली दवाओं के तस्करों को पकड़वाकर दंडित करना चाहए। नशे की बुराइयों के प्रति समाज में चेतना जागृत करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त शराब की बिक्री एवं उत्पादन को प्रतिबंधित कर देना चाहिए। आज शराब आसानी से सर्व सुलभ है और नकली व मिलावटी शराब के कारण बहुत से लोग बेमौत मर रहे हैं।

आज भी हमारे देश में शराब के अवैध धंधे व तस्करी के कारण हर साल हजारों परिवार बर्बाद हो रहे हैं। अतः सामाजिक, राजनीतिक व शैक्षणिक स्तर पर हमें इस बुराई को समाप्त करने के सामूहिक प्रयत्न करने चाहिए जिससे हमारी आने वाली युवा पीढ़ी के अंदर सद्भावना व नैतिकता के गुण विकसित हों और वह समाज व राष्ट्र के निर्माण में अपनी भूमिका स्थापित कर सके। ❑

नैतिक मूल्य भाषणों में सिमटे

हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि हम गलत तरीकों से धन कमा सकते हैं, चरित्र का हनन कर भौतिक सुख-सुविधाओं को भोग सकते हैं पर सच्चा सुख और मानसिक शांति कभी नहीं प्राप्त कर सकते। नैतिक मूल्यों को ठुकराकर न तो कोई व्यक्ति, न कोई समाज और न कोई राष्ट्र कभी उन्नति के शिखर पर पहुँच सकता है।

◈ **पुण्या गर्ग** 7वीं
क्वीन्स मेरी स्कूल
तीस हजारी, दिल्ली

नैतिकता और मानव-चरित्र एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। सच्चरित्रता या नैतिकता ही मनुष्य की उत्तमता की कसौटी है। नैतिकता के अंतर्गत आने वाले गुणों में प्रमुख गुण हैं दयालुता, सत्यवादिता, सदाचार, निष्कपटता, पारस्परिक सहयोग तथा संतोष आदि। जिस व्यक्ति में कर्तव्यनिष्ठा, परिश्रम करने का संकल्प, सद्व्यवहार जैसे गुण होंगे, वह निश्चित ही नैतिकता के मानदंडों पर खरा उतरेगा।

आज सारे विश्व में नैतिक-मूल्यों का ह्रास हुआ है। हमारा देश भी इस मामले में पीछे नहीं है। चारों ओर भ्रष्टाचार पनप गया है। बेईमानी, रिश्वतखोरी, सांप्रदायिकता, भाई-भतीजावाद आदि ने वर्तमान समाज को ग्रस लिया है। मनुष्य की कथनी और करनी में अंतर आ गया है। नैतिक मूल्य तो पुस्तकों और भाषणों में सिमटकर रह गए हैं। इसने अपने प्राचीन आदर्श भुला दिए हैं और समाज पतन के गर्त में गिरता जा रहा है।

हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि हम गलत तरीकों से धन कमा सकते हैं, चरित्र का हनन कर भौतिक सुख-सुविधाओं को भोग सकते हैं पर सच्चा सुख और मानसिक शांति कभी नहीं प्राप्त कर सकते। नैतिक मूल्यों को

ठुकराकर न तो कोई व्यक्ति, न कोई समाज और न कोई राष्ट्र कभी उन्नति के शिखर पर पहुँच सकता है।

वस्तुतः नैतिक उन्नत ही राष्ट्र की उन्नति का आधार है। यदि देश के नागरिक एकजुट होकर निष्ठा और ईमानदारी से नैतिक मूल्यों को अपनाने का दृढ़-संकल्प ले लें तो यह न केवल देश का बल्कि समूची मानवता के लिए कल्याणकारी साबित हो सकता है।

वे पदार्थ जिनके सेवन से मानसिक विकृति उत्पन्न होती है, नशीले या मादक हैं। नशीली वस्तुओं पर प्रतिबंध या इनका व्यवस्थित प्रयोग नशाबंदी है। किसी प्रकार के अधिकार, प्रवृत्ति, बल आदि मनोविकार की अधिकता, तीव्रता या प्रबलता के कारण उत्पन्न होने वाली अनियंत्रित या असंतुलित मानसिक अवस्था नशा (मद) है। जैसे जवानी का नशा, दौलत का नशा या मोहब्बत का नशा। इनको व्यवस्थित रूप देना नशाबंदी है।

मादक द्रव्य कौन से हैं, जिनसे मानसिक विकृति उत्पन्न होती है? वे पदार्थ हैं शराब, अफीम, गाँजा, भाँग, चरस, ताड़ी, कुकीन आदि। कुछ स्वास्थ्य-विशेषज्ञ तंबाकू, चाय और बीड़ी-सिगरेट को भी इस सूची में सम्मिलित करते हैं। प्राचीनकाल में आसव तथा सोमरस को भी नशा मानते थे। वर्तमान समय में भारत में नशाबंदी का तात्पर्य शराब और ड्रग्स पर प्रतिबंध या उसके व्यवस्थित प्रयोग से है क्योंकि ये पदार्थ अत्यधिक नशा देने वाले हैं।

जनता ने एक ओर इसका उपयोग दैनिक जीवन की मानसिक परेशानियाँ कम करने, व्यक्तिगत तथा सामाजिक समारोहों में हर्षोल्लास प्रकट करने तथा काम निकालने के लिए अधिकारियों या संबद्ध व्यक्तियों को रिश्वत देने के रूप में किया तो उच्चवर्ग में शिष्टाचार के रूप में मद्य-प्रयोग अपनाया गया।

'अति' सदा विनाशकारी होती है। जब मदिरा का अति प्रयोग हुआ, 'लत' पड़ गई, हुड़स तंग करने लगी तो मदिरा ने विष बनकर तन-मन को खोखला कर दिया। आँतों को सुखा दिया, 'किड़नी' (गुर्दे) को दुर्बल और असहाय कर दिया। परिणामतः अनेक बीमारियाँ बिना माँगे ही शरीर से चिपट गईं। ड्रग्स ने तो शरीर की हाजमे की शक्ति को ही रौंद डाला और

उसके अभाव में पेट-पीड़ा का असाध्य रोग दे दिया, जो व्यक्ति को विह्वल कर देता है।

नशा करने, मद्यपान करने में अनेक दुर्गुण हैं। नशे में धुत होकर नशेड़ी अपना होश खो बैठता है। विवेक खो बैठता है, बच्चों को पीटता है। पत्नी की दुर्दशा करता है। लड़खड़ाते चरणों से मार्ग तय करता है। ऊल-जलूल बकता है। कोई ड्राईवर शराब पीकर जब गाड़ी चलाता है तो दूसरों की जान के लिए खतरनाक सिद्ध होता है। परिणामतः लाखों घर उजड़ रहे हैं, बर्बाद हो रहे हैं। मिल्टन के शब्दों में, 'संसार की सारी सेनाएँ मिलकर इतने मानवों और इतनी संपत्ति को नष्ट नहीं करतीं जितनी शराब पीने की आदत।'

मदिरा को अभिशाप मानते हुए सन् 1923 में गाँधीजी के आह्वान पर नशाबंदी आंदोलन चला। 1977 में गाँधी भक्तों की जनता-सरकार ने सन् 1982 तक सपूर्ण राष्ट्र में मद्य-निषेध का व्रत लिया। हर रोज इस दिशा में रोक लगाई जाने लगी।

सुरालयों की संख्या कम करके देशी भट्टियों को जड़मूल से नष्ट करके, सार्वजनिक रूप में शराब पीने पर पूर्णतः प्रतिबंध लगाकर इसके दुरुपयोग को रोका जा सकता है, इसे हतोत्साहित किया जा सकता है। ❑

सब कुछ पाने की चाह उचित नहीं

◈ **हिबा हुसैन** 10वीं
गीतांजलि देवाश्रय
42, सरोजनी देवी रोड
सिकंदराबाद, आंध्र प्रदेश

यह पता और मालूम रखना हर मनुष्य के लिए अधिक आवश्यक है कि ऊपर वाले ने मनुष्य को यह जीवन नशे के लिए नहीं दिया है। इसमें फँसे लोगों को भी इससे निकलने की सोचनी चाहिए और नशे में डूबकर अपने जीवन को बर्बाद नहीं करना चाहिए। आत्म-संयम से मनुष्य नशे से मुक्त हो सकता है।

राष्ट्र में नैतिकता की भूमिका को देखा जाए तो वह एक तरह से भारतीय संस्कृति की पहचान है जो हमें विरासत में मिली है। संपूर्ण राष्ट्र में भारत की पहचान का प्रतीक 'नैतिकता लेकिन कहना थोड़ा दुःख की बात है कि आज की हमारी युवा पीढ़ी में, जिसमें हम भी इस युग का एक हिस्सा हैं, उस अधिक ही महत्त्वपूर्ण अंग को खोती जा रही है।

युवाओं का राष्ट्र के प्रति रुखा व्यवहार, बड़ों का अनादर, अपनी मनमानी यह सब दर्शाता है कि युवाओं में नैतिक स्तर किस हद तक गिर चुका है। अजीब बात तो यह है कि यह सब दशकों के छोटे से अंतराल में हुआ है। छोटी-सी उम्र में युवा सब कुछ करना चाहते हैं, सब कुछ पाना चाहते हैं, जो न ही उन लोगों के लिए उचित है और न ही उसका अभी वक्त आया है।

ऐशो-आराम का महत्त्व ऐसा है कि जब अपने किसी जूनियर या सहपाठी से पूछा गया तो कई युवाओं का उत्तर होता है 'वे अधिक पैसा कमाना चाहते हैं।' जब उनसे यह प्रश्न पूछा जाता है कि 'तुम्हारा सपना क्या है?' ऐसे उत्तर से यह प्रतीत होता है कि वे जो पाना चाहते हैं वह चाहिए और कभी किसी चीज को पाने की ललक हम सही और गलत, उचित या अनुचित का निर्णय

नहीं ले पाते। मैं भी इसी युवा पीढ़ी का एक हिस्सा हूँ। कभी-कभी मुझे यह देखकर अफसोस होता है कि उनके सपनों का कोई ठिकाना नहीं होता है। अगर उन्होंने किसी और चीज को बेहतर पाया तो उस पर चले जाते हैं। तो इससे यह प्राप्ति होती है कि वे खुद नहीं जानते और उनको खुद पर विश्वास नहीं कि उन्होंने जो कदम उठाया वह उचित होगा कि नहीं।

वे जो भी कहते हैं बड़े ही जोश में, जल्दबाजी में ऐसा कदम उठा देते हैं जो आगे जाकर उनके लिए घातक रूप ले सकता है। युवा अवस्था एक ऐसा दौर है जिसमें हमें अपना एक ही लक्ष्य रखना चाहिए और उस पर काम करना चाहिए न कि कई सपने सोचें और उन्हें एक ही समय पर करने या पाने की उम्मीद रखें।

हमारे राष्ट्र में नशामुक्ति की भूमिका को देखा जाए तो यह कहा जा सकता है कि नशा मुक्ति केंद्र से बेहतर होता है आत्मसंकल्प और उससे हर नशा छोड़ा जा सकता है। यह तो हम अवश्य जानते होंगे कि हमारे समाज में ऐसे कितने मनुष्य हैं जिन्हें नशे की आदत है और वे उनका शिकार होकर मरते हैं। कितने लोग सिगरेट, तंबाकू आदि के सेवन से कई खतरनाक और घातक बीमारियों के शिकार हो गए हैं। देखा जाए तो आज की सरकार को भी इससे कुछ लेना-देना नहीं रहा। सरकार को सिगरेट आदि से फायदा हो रहा है।

हमारे राष्ट्र में ऐसे कितने समाचारों से पता चलता है कि हर दिन जो सड़क पर दुर्घटनाएँ होती हैं ज्यादातर लोग पीकर गाड़ी चलाते हैं। ऐसे में खुद की जान और भोले लोगों की जान चली जाती है। नशा मनुष्य के जीवन में ऐसी ललक है कि उसे छोड़ना इतना सरल नहीं होता। ऐसे में न वह खुद खुश रहता है और न दूसरों को खुशी दे पाता है।

यह पता और मालूम रखना हर मनुष्य के लिए अधिक आवश्यक है कि ऊपर वाले ने मनुष्य को यह जीवन नशे के लिए नहीं दिया है। इसमें फँसे लोगों को भी इससे निकलने की सोचनी चाहिए और नशे में डूबकर अपने जीवन को बर्बाद नहीं करना चाहिए। आत्म-संयम से मनुष्य नशे से मुक्त हो सकता है।

राष्ट्र में सद्भावना की भूमिका अच्छे प्रकार से निभाई गई है। कई अच्छे कार्यों की प्रशंसा की गई है और कई सारे लोगों के लिए सहायता का मोल बना। जैसे मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री ने प्रदेश के लोगों से बेहतर प्रशासन को लेकर नए-नए विचार और सुझाव देने के लिए एक नई वेबसाइट की शुरुआत की है। यह एक तरह का पड़ाव था सद्भावना का अपने समाज की ओर।

ऐसे कई और लोग थे, और अभी भी हैं जो अपनी और अपने लोगों के लिए भला चाहते हैं और कुछ करना चाहते हैं। सद्भावना ने कई लोगों के जीवन में रोशनी लाई है। यहाँ मैंने केवल उदाहरण एक ही देकर सद्भावना की भूमिका बताई है लेकिन ऐसे कई और उदाहरण हैं जिनसे भारत में सद्भावना का स्थान और भी बढ़ गया है।

इन सब विषयों का राष्ट्र निर्माण में अलग-अलग योगदान रहा है। एक ओर अगर नैतिकता और नशामुक्ति का उजाला है तो दूसरी ओर सद्भावना की रोशनी भी फैली हुई है। वैसे भी हमारे जीवन में कई अवसर आएँगे पर किस प्रकार के अवसर को हम चुनना चाहते हैं और उस पर कैसे हम उसकी भूमिका निभाएँगे, यह हम पर निर्भर करता है। इसलिए जीवन में सोच-विचारकर हमें कदम उठाना चाहिए कि जो हम कर रहे हैं वह सही है या गलत। अगर हम इसी सोच से आगे बढ़ें और हमारा समाज इसी प्रकार बढ़े तो दुःख का अँधेरा मिट जाएगा। ❑

भारत अपने आप में ही कई वर्गों को जोड़कर बनाया हुआ एक संकल्प है जिसे पूरा करना हमारी जिम्मेदारी है। गली से गली, शहर से शहर और राज्य से राज्य तक का सफर, अनुभव और प्रयास अपने साथ लिए चलना यह निरंतर भारत ही तो है। इसमें अलग मिजाज है, स्फूर्ति है और प्रेरणा भी। यदि हम इन सभी स्रोतों को मिला दें तो एक नई साँस का आविष्कार होगा जिसमें सिर्फ भारत की वाह निकलेगी और वह होगा सच्चा भारतीय तभी से शुरुआत होगी नवनिर्माण की।

एक-दूसरे के हित में सोचना होगा

◈ **दीक्षा कुशवाहा** 8वीं
बाल भवन पब्लिक स्कूल
मयूर विहार, फेज-2, दिल्ली

ईश्वर ने मनुष्य को कई कलाओं से नवाज़ा है परंतु इस 'कलयुग' में सभी मनुष्य आपसी स्नेह, दया-याचना, भाईचारे को भुलाकर ईर्ष्या, भेदभाव, बदला इन सभी प्रकार की भावनाएँ रखने लगे हैं जिससे लोगों का विश्वास इंसानियत से उठता जा रहा है। अगर हमें इन सभी असामाजिक तत्त्वों को सकारात्मक दिशा में परिवर्तित करना है तो हमें सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति को सर्वप्रथम स्थान देना पड़ेगा।

माना कि यह अमल में लेना, वह भी राष्ट्रीय स्तर पर, बहुत कठिन है लेकिन कई योजनाओं द्वारा हम इन तीन तत्त्वों को अपने जीवन का आधार बना सकते हैं। सद्भावना यानि सबके हित की भावना, नैतिकता यानि जीवन के परम मूल्य, नशामुक्ति यानि किसी भी प्रकार की लत से मुक्त रहना। अगर यह सभी गुण एक मनुष्य में उनके जीने का आधार बन जाएँ और वह एक संकल्प ले कि इन मूल्यों का वह कभी उल्लंघन नहीं करेगा तो यह हमारे राष्ट्र की प्रवृत्ति में एक बहुत बड़ा योगदान होगा जिससे हर नागरिक अपनी जिम्मेदारियों और कर्तव्यों को पूरी निष्ठा से निभाएगा।

यदि हर व्यक्ति अपने आपसे यह वादा करे कि अपनी मातृभूमि की प्रगति और हित के बारे में ही सोचेगा तो हमारे देश में प्रेम, सदाचार और भाईचारे की भावना एक बार फिर लौट जाएगी। 'अनेकता में एकता' यह प्रचलित नारा हमारे देश को पूरे विश्व में दर्शाता है और यही हमारे भारत की एकमात्र शक्ति है जिसे कोई नहीं तोड़ सकता।

यह तभी संभव है जब सभी मनुष्य अपने चेहरे से भ्रष्टाचार, लोभ, क्रोध आदि का मुखौटा उतार फेकेंगे। जब हमें स्वयं को सच्चा साबित करने के लिए बड़े-बड़े भाषण नहीं देने पड़ेंगे। जब हमें एक-दूसरे पर विश्वास होगा तब राष्ट्र स्तर पर हम अपने मूल्यों पर अमल करेंगे और तभी हमारे ख़्वाबों का भारत सच साबित होगा। देश का गौरव आगे बढ़ाने के लिए हम सभी को एक-दूसरे के हित में सोचना होगा।

भारत अपने आप में ही कई वर्गों को जोड़कर बनाया हुआ एक संकल्प है जिसे पूरा करना हमारी जिम्मेदारी है। गली से गली, शहर से शहर और राज्य से राज्य तक का सफर, अनुभव और प्रयास अपने साथ लिए चलना यह निरंतर भारत ही तो है। इसमें अलग मिजाज है, स्फूर्ति है और प्रेरणा भी। यदि हम इन सभी स्रोत को मिला दें तो एक नई साँस का आविष्कार होगा जिसमें सिर्फ भारत की वाह निकलेगी और वह होगा सच्चा भारतीय तभी से शुरुआत होगी नवनिर्माण की।

अगर शोधकर्ता एक ऐसे संशोधन के साथ सामने आएँ जो कि हमारे पुरातन भारत में एक नवीन जोश भर दें, जो किसी भी प्रकार के गलत कामों को तो न ही श्रेय दें और न ही उसका पक्ष लें। मैं मानती हूँ कि अंग्रेजों के कब्जे के बाद भारत में बहुत-सी हल-चल हुई थी जिससे कुछ के लिए परंतु भारत भी उनके रंग में ढल गया। शायद यह कारण भी हो सकता है कि हमारे देश के मूल्य प्रभावित हुए। अगर हमें अपनी धरोहर यानि हमारे संस्कार को आगे अपनी पुश्तों में अमानत की तरह सौंपना है और जन्मों-जन्म तक इन्हें जीवित रखना है तो हमें अभी से इस संघर्ष का हिस्सा बनना होगा।

न जाने कब हम हक से कह पाएँगे कि हमारा भारत आजाद है? न जाने कब? इस प्रश्नचिह्न का कोई अंत नहीं है लेकिन आखिर हमें पहले से तो शुरुआत करनी ही पड़ेगी। हमें अपने और परायों का भेदभाव छोड़ना पड़ेगा। यह हमारा और वह तुम्हारा इस भावना को नष्ट करना होगा। शायद यह अभियान पूरा होने में सालों लग जाएँ लेकिन अभी से शुरुआत करनी होगी।

पहली बार कठिनाई हो सकती पर धीरे-धीरे संघर्ष करने की आदत हो जाएगी। इस लड़ाई में रोज कोई दम तोड़ता है लेकिन आखिर में तो सच्चाई की बुराई पर विजय होती ही है। आज नहीं तो कल, कल नहीं तो उसके अगले दिन परंतु कामयाबी तो हासिल होगी ही। हार नहीं मानें, हौंसला नहीं तोड़ें और संघर्ष खत्म नहीं करें, तभी आजाद होगा हमारा देश सही मायनों में। प्रण तो लेकर देखें। ❑

धर्म का मर्म ही सद्‌भावना

◈ **ईश वर्मा** 10वीं
रुकमणी देवी जयपुरिया
पब्लिक स्कूल
राजपुर रोड, दिल्ली

भगवान ने करुणा व सद्‌भावना की भावना मनुष्य को इसलिए दी है ताकि यह संसार बना रहे। न्याय व धर्म की रक्षा करना सदा से धर्म है। दयाभाव विहीन मनुष्य भी पशु समान ही होता है। धर्म का मर्म ही सद्‌भावना है। सद्‌भावना भाव से ही धर्म का दीपक सदैव प्रज्ज्वलित रहता है।

हमें अपने शरीर में प्राण रहने तक सद्‌भावना को त्यागना नहीं चाहिए। किसी दुःखी को देखकर उसका दुःख दूर करने की कोशिश करना ही धर्म है। संसार का प्रत्येक धर्म सद्‌भावना और करुणा का पाठ पढ़ाता है। गौतम बुद्ध, महावीर, श्रीकृष्ण, जीसस, पैगंबर, गुरुनानक इन सभी ने अपने-अपने धर्म में सद्‌भावना व करुणा के भाव को श्रेष्ठ बताया है।

सद्‌भावना : सद्‌भावना की भावना ही सबसे बड़ी मनुष्यता है। यह एक सात्त्विक भाव है। सद्‌भावना करने वाला न तो अपने-पराए का भेदभाव रखता है और न ही अपनी हानि की परवाह करता है। दया निःस्वार्थ होती है। जिस सद्‌भावना के पीछे कोई स्वार्थ छिपा होता है, वह व्यापार ही होता है।

संसार में जितने भी महान इंसान हुए हैं, सबके जीवन में करुणा का अंश अवश्य रहा है। भगवान बुद्ध ने राजपाट छोड़कर दुःखी लोगों के दुःख में अपना जीवन लगा दिया। नानक ने सांसारिकता त्यागकर ही महानता को प्राप्त किया। गांधी जी ने अपनी वकालत त्यागकर देश को स्वतंत्र कराने के लिए लड़ाई छेड़ दी। जीसस ने अपने प्राणों की आहूति जनहित के लिए ही दी। विवेकानंद, रवींद्रनाथ ठाकुर और न जाने ऐसे कितने ही संत हुए

जिन्होंने अपनी सद्‌भावना से मानव जाति के कल्याण की कामना करते हुए कर्म किए।

भगवान ने करुणा व सद्‌भावना की भावना मनुष्य को इसलिए दी है ताकि यह संसार बना रहे। न्याय व धर्म की रक्षा करना सदा से धर्म है। दयाभाव विहीन मनुष्य भी पशु समान ही होता है। धर्म का मर्म ही सद्‌भावना है। सद्‌भावना भाव से ही धर्म का दीपक सदैव प्रज्ज्वलित रहता है।

किसी ने सच कहा है कि यदि मनुष्य का चरित्र चला गया तो समझो उसका सब कुछ चला गया। मानव-चरित्र ही नैतिकता का पर्याय कहा जाता है। मनुष्य का यश, गुरु-गौरव, उसकी संपन्नता एवं मान-मर्यादा उसके चरित्र पर ही निर्भर है। सत्यवादिता, दयालुता, निष्कपटता, सदाचार, संतोष, पारस्परिक सहयोग ये सभी नैतिकता के आधार-बिंदु हैं। अच्छा व्यवहार, परिश्रमशीलता, कर्तव्यनिष्ठा, समयनिष्ठा आदि गुण जिस व्यक्ति में होंगे, वह निश्चय ही नैतिकता की कसौटी पर खरा उतरेगा।

किसी भी राष्ट्र या समाज की उन्नति की आधारशिला वहाँ के निवासियों की सच्चरित्रता, परिश्रमशीलता अथवा उनके नैतिक मूल्य होते हैं। विश्व के जो देश आज उन्नति के चरमोत्कर्ष पर पहुँचे हुए हैं, उनकी उन्नति का आधार इन्हीं नैतिक मूल्यों में आस्था तथा जीवन में इन्हें उतारना है।

वर्तमान स्थिति : कभी समय था जब हमारा देश सांस्कृतिक गुरु के पद पर आसीन था। विश्व-गुरु के पद से सम्मानित इसी देश ने समूचे विश्व को मानवता, नैतिकता, सच्चरित्रता तथा सदाचार की शिक्षा दी। करुणा, दया, परोपकार, कर्तव्यपरायणता, आत्मसंयम, इंद्रिय वमन, सत्य भाषण जैसे अनेक नैतिक मूल्यों के कारण ही हम विश्व-गुरु के पद पर आसीन थे। पौराणिक तथा ऐतिहासिक तथ्य इस बात के साक्षी हैं।

आज चारों ओर स्वार्थ, ईर्ष्या, अहंकार, लोभ, व्यक्तिगत स्वार्थ की भावना, बेईमानी का बोलबाला है। यदि देश का हर व्यक्ति नैतिक मूल्यों को अपने जीवन में उतार लेगा तो वह दिन दूर नहीं जब हम पुनः विश्व में सिरमौर बन जाएँगे।

हमारा कर्तव्य : अतः स्पष्ट है कि नैतिक पतन ही देश के पतन का मुख्य कारण है तथा नैतिक उन्नति ही देश की उन्नति की आधारशिला। यदि एकजुट होकर, कृतसंकल्प होकर, निष्ठा से, ईमानदारी से नैतिक मूल्यों को अपने जीवन में उतारने का बीड़ा उठा लें तो देश की अखंडता तथा एकता की रक्षा करके उसे सिरमौर बना सकते हैं।

नशामुक्ति : भारत के स्वतंत्र होने से पूर्व राष्ट्र के कर्णधार सर्वसम्मति से यह मानते थे कि मद्यपान एक सामाजिक बुराई है और भारत जैसे निर्धन देश के लिए शराब जैसी महँगी एवं गर्हित वस्तु सर्वथा त्याज्य है इसका निर्माण तथा विक्रय कानूनन बंद करवा दिया जाना चाहिए। परंतु स्वाधीनता-प्राप्ति के बाद इस दिशा में सरकार की ओर से कोई बड़ा कदम नहीं उठाया गया। अनाचार की जननी मदिरा का सेवन बढ़ा दिया है, कम नहीं हुआ। संभ्रांत एवं धनाढ्य लोगों में मदिरापान का फैशन बढ़ता ही जा रहा है और आज तो स्त्रियाँ भी इस व्यसन से दूर नहीं रहीं। जनता के प्रतिनिधि, जो ऊपर से तो शराबबंदी की बात करते नहीं थकते, अंदर-ही-अंदर इस लत के शिकार हो चुके हैं।

मद्यपान की प्रवृत्ति पर नियंत्रण कोई आसान काम नहीं है। किसी ने ठीक ही कहा है कि अच्छी आदत डालना बहुत कठिन है, जबकि बुरी आदत डालना बहुत ही आसान है। जनता को इस बात के प्रति सचेत करना चाहिए कि अधिकांश भयानक रोग, जैसे हृदय रोग, मानसिक तनाव, रक्तचाप, टी.बी., दमा तथा कैंसर आदि का कारण मद्यपान ही है। आज के युवा वर्ग को इस व्यसन से बचाने के लिए बहुत प्रयास किए जाने आवश्यक हैं। ❑

नैतिकता हमारे राष्ट्र को आगे बढ़ाने का एक सबसे अच्छा एवं आवश्यक मार्ग है। नैतिकता के कारण हमारे देश का विकास होगा। यदि हमारे आचार अच्छे होंगे तो हम आगे बढ़ेंगे। नैतिकता का एक पहलू 'अच्छे संस्कार' भी होता है। अगर बच्चों को बचपन से ही अच्छे संस्कार दिए जाएँगे, नैतिकता का महत्त्व बताया जाएगा, अच्छी शिक्षा दी जाएगी, जैसे सदा सत्य बोलना, ईमानदारी, दया, प्रेम तो राष्ट्र का भला होगा तथा हम सबका हित होगा।

सबको समझाएँ सद्भावना का महत्त्व

◈ **ऋषिता शर्मा** 9वीं
रूपनगर पब्लिक स्कूल
कोटा रोड, झालावाड़, राजस्थान

एक अखंड एवं सम्प्रभूतापूर्ण, विकसित राष्ट्र के निर्माण में नागरिकों में आपसी व राष्ट्र के प्रति सद्भावना अनिवार्य तत्त्व है। नागरिकों में उच्च मानवीय मूल्यों की स्थापना हेतु नैतिकता की महत्ती आवश्यकता है, वहीं व्यक्ति के स्वयं के, परिवार के, समाज के, राष्ट्र के विकास हेतु सभी प्रकार के व्यसनों से मुक्ति आवश्यक है।

सद्भावना की आवश्यकता : सद्भावना का अर्थ होता है 'अच्छी भावना'। अतः सभी के प्रति प्रेम, देश के प्रति प्रेम तथा सदाचार। सद्भावना की हमारे देश को बहुत आवश्यकता है। सभी के प्रति सद्भावना ही सुख का एक मात्र कारण है। यदि हम सभी के प्रति सद्भावना रखेंगे तो वह भी हमसे प्रेम से पेश आएँगे। सद्भावना रखने से हम सदा सुखी रहेंगे। हमें कभी क्रोध नहीं आएगा। सद्भावना हमें यही सिखाती है कि सदा दूसरों के प्रति अच्छा सोचना चाहिए, दूसरों का सदा आदर करना चाहिए तथा सदा दूसरों की सहायता करती चाहिए।

सद्भावना राष्ट्र के प्रति एक बहुत ही उपयोगी भूमिका है तथा सद्भावना की बहुत आवश्यकता भी है। यदि हम सभी के प्रति सद्भावना रखेंगे तो

उससे हमारे राष्ट्र का तथा सभी का भला होगा, अतः सबको अच्छी शिक्षा मिलेगी। यदि हम बच्चों को अच्छी शिक्षा देंगे, सद्भावना का महत्त्व बताएँगे, सद्भावना की आवश्यकताएँ बताएँगे तो अवश्य ही हमारे राष्ट्र का हित होगा।

हमारा यह कर्तव्य है की हम राष्ट्र के हित के हेतु सभी राष्ट्रवासियों के साथ प्रेम का भाव रखें, सभी का आदर करें, सभी को सद्भावना का महत्त्व समझाएँ, सद्भावना की भूमिकाओं का वर्णन करें। अगर इसी प्रकार हमने तथा देशवासियों ने मेहनत, लगन के साथ, राष्ट्र के प्रति हमारे कर्तव्यों का पालन किया, सभी के प्रति प्रेम की भावना रखी, सदा दूसरों का भला चाहा तो हमारे राष्ट्र का, हमारे परिवार का, हमारे देशवासियों का तथा हम सबका हित होगा एवं दूसरों के प्रति और भी सद्भावना बढ़ेगी। सदा सही मार्ग पर चलेंगे एवं सदा आगे बढ़ेंगे तथा हमारा राष्ट्र भी आगे बढ़ेगा तथा राष्ट्र का विकास होगा।

नैतिकता का महत्त्व : नैतिकता का अर्थ है, 'व्यक्ति में समस्त नैतिक गुणों का व्याप्त होना।' इसका मूल आधार है 'सदाचार' एवं सदाचार का अर्थ है परोपकार, ईमानदारी, अहिंसा, प्रेम, दया एवं सहयोग। जिस प्रकार हमारे जीवन में सद्भावना का बहुत महत्त्व होता है, उसी प्रकार नैतिकता का भी हमारे जीवन में बहुत महत्त्व होता है। हमें सदा सत्य बोलना चाहिए, सदा ईमानदारी रखनी चाहिए। हम सभी को सदा अहिंसा के मार्ग पर चलना चाहिए। हमें सभी के प्रति दया तथा प्रेम का भाव रखना चाहिए। सदा प्रेम का भाव रखने से हमारा कोई बैरी नहीं होगा। सभी हमारे मित्र होंगे तथा वे सभी हमसे अच्छे से पेश आएँगे।

नैतिकता हमारे राष्ट्र को आगे बढ़ाने का एक सबसे अच्छा एवं आवश्यक मार्ग है। नैतिकता के कारण हमारे देश का विकास होगा। यदि हमारे आचार अच्छे होंगे तो हम आगे बढ़ेंगे। नैतिकता का एक पहलू 'अच्छे संस्कार' भी होता है। अगर बच्चों को बचपन से ही अच्छे संस्कार दिए जाएँगे, नैतिकता का महत्त्व बताया जाएगा, अच्छी शिक्षा दी जाएगी, जैसे सदा सत्य बोलना, ईमानदारी, दया, प्रेम तो राष्ट्र का भला होगा तथा हम सबका हित होगा।

यदि बच्चों के आसपास का वातावरण अच्छा होगा, वे अच्छी संगति में रहेंगे तो उन्हें नैतिकता का महत्त्व समझ आएगा। सदा अच्छी संगति में रहना, अच्छे कर्म करना, सदा सत्य बोलना, सदा ईमानदारी रखना, दूसरों के प्रति प्रेम तथा दया का भाव रखना ही नैतिकता है।

नशामुक्ति की भूमिका : नशा-मुक्ति से तात्पर्य है ''किसी भी प्रकार का नशा न करना''। जिस प्रकार सद्भावना तथा नैतिकता का बहुत महत्त्व होता है, राष्ट्र निर्माण में एक आवश्यकता होती है, उसी प्रकार नशामुक्ति का भी हमारे राष्ट्र निर्माण में बहुत योगदान होता है। जो लोग किसी भी प्रकार का नशा नहीं करते अर्थात् नशे युक्त उत्पादनों का सेवन नहीं करते वे सदा प्रसन्न रहते हैं और स्वस्थ भी रहते हैं किंतु जो लोग किसी भी प्रकार का नशा करते हैं, जैसे : गुटका, शराब, सिगरेट, वे लोग बीमारियों से पीड़ित हो जाते हैं तथा उनकी जान को खतरा हो सकता है।

नशा करने वाले लोगों का स्वास्थ्य ठीक नहीं होता। नशा-मुक्ति की राष्ट्र निर्माण में एक अहम् भूमिका है। नशामुक्ति से हम सभी स्वस्थ रहेंगे, दूसरों के प्रति सद्भावना बनी रहेगी, नैतिकता बनी रहेगी, जिससे हमारे परिवार का, हम सबका तथा हमारे राष्ट्र का विकास होगा। सभी आगे बढ़ेंगे। इसी प्रकार हमें देश के विकास हेतु नशा नहीं करना चाहिए। हमें देश के प्रति हमारा योगदान समझना चाहिए, अपने कर्तव्य समझने चाहिए तथा उनका पालन करना चाहिए, तभी हमारे राष्ट्र का विकास होगा।

उपरोक्त सभी बातों से हमें यह पता चलता है कि किस प्रकार सद्भावना, नैतिकता तथा नशामुक्ति राष्ट्र के विकास में सहायक है तथा इनका राष्ट्र के एवं हम सबके विकास के लिए क्या महत्त्व है। यदि हम चाहते हैं कि हमारा एवं हम सभी देशवासियों का हित हो, विकास हो, हम सभी आगे बढ़ते रहें तो उसके लिए सद्भावना, नैतिकता एवं नशामुक्ति को अपनाना ही होगा। ❑

अणुव्रत की विशिष्ट भूमिका

◈ **संयमी जैन** 10वीं
डी.एस.एम.सी.सै. स्कूल
नांगलोई, दिल्ली

अगला महत्त्वपूर्ण पक्ष है नशा मुक्ति जो राष्ट्र निर्माण में सहायता करता है। जिस राष्ट्र के युवा नशे की चपेट में हों वह राष्ट्र कभी तरक्की नहीं करता। व्यसनमुक्ति की चेतना जागरण में अणुव्रत की भूमिका बड़ी ही महत्त्वपूर्ण है। नशे से कोई घर सुखी नहीं रहता तथा जीवन-मृत्यु समान ही हो जाते हैं। चरित्र निर्माण के साथ-साथ राष्ट्र में नशा मुक्ति की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

आजकल हर देश अपने निर्माण में लगा है। हर किसी के विचार से राष्ट्र निर्माण के लिए आधुनिक विचार तथा साधन अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। किंतु ऐसा नहीं है भारतीय संस्कृति के अनुसार एक राष्ट्र के निर्माण के लिए सदाचार तथा नैतिकता भी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। नैतिकता के अभाव में कितनी समस्याएँ और विसंगतियाँ उत्पन्न होती हैं यह किसी से छिपा नहीं है, विशेषकर आजकल की मूल्यहीन शिक्षा व्यवस्था के कारण तो कई प्रकार की नई समस्याएँ जन्म ले लेती हैं।

अपनी बौद्धिक और तर्कक्षमता से दुनिया पर विजय प्राप्त करने वाले युवा संन्यासी स्वामी विवेकानंद तो यहाँ तक कहते हैं 'यदि नैतिक शिक्षा से संपन्न राष्ट्र होता तो आज हम पराभूत मनःस्थिति में न आये होते।' यह कहना ज्यादा उचित होगा कि राष्ट्र निर्माण में नैतिक शिक्षा पहली और अनिवार्य आवश्यकता है। नैतिक शिक्षा के समावेश की बात जोर-शोर से उठाई जा रही है। देश के कई शिक्षाविद पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा को शामिल करने की दिशा में मंथन कर रहे हैं। केंद्र में ऐसे राजनीतिक दल की सशक्त सरकार है, जिसे सांस्कृतिक मूल्यों की हामी माना जाता है।

इसलिए उम्मीद की जा रही है कि शिक्षा नीति में आमूलचूल परिवर्तन होगा। हालाँकि सरकार के इस कदम के विरोध में कुछ सुगबुगाहट शुरू हो गई है।

नैतिक मूल्यों की गिरावट का सबसे बड़ा कारण भारतीय संस्कृति की अनदेखी है। राष्ट्र उत्पत्ति में नैतिकता की बड़ी भूमिका है। नैतिकता के बाद राष्ट्र में सदाचार की भी एक महत्त्वपूर्ण भूमिका है। किसी भी समुदाय में एक व्यक्ति भी ऐसा दृष्टिगोचर नहीं होता जो इस मत से सहमत न हो अथवा इस नव निर्माण के विचार का विरोधी हो। परंतु कोई यह नहीं सोचता कि इसमें सदाचारिता कितनी महत्त्वपूर्ण है। जिस प्रकार आजकल नैतिकता का पतन हो रहा है उसी प्रकार आजकल सद्‌भावना भी मुश्किल ही देखने को मिलती है। जब तक हम लोग इस मूल बिंदु पर एकमत नहीं हो जाते कि निर्माण का प्रारंभ चट्‌टानी नींव पर ही करना होगा, तब तक नव निर्माण के लिए संचित यह सारा उत्साह अंततः सोडावाटर की गैस बनकर उड़ जाने के लिए बाध्य होगा।

हम सभी लोग यह जानते हैं कि यदि किसी भव्य भवन का निर्माण चट्‌टानी नींव पर न किया जाए तो वह ईमारत शीघ्र ही टूट-फूटकर बिखर जायेगी। अतः राष्ट्र का पुनर्निर्माण तब तक नहीं हो सकता जब तक नागरिकों का चरित्र निर्माण नहीं हो जाता। अतः यदि गौरवशाली राष्ट्र का निर्माण करना है तो उसकी चट्‌टानी नींव केवल देश के नागरिकों के व्यक्तिगत चरित्र निर्माण से ही प्राप्त हो सकती है, जिनकी समष्टि से देश बनता है। इसी चरित्र निर्माण की नींव है सदाचारित। कहा गया है कि ''तुम स्वयं एक चरित्रवान मनुष्य बनो और दूसरों को भी चरित्रवान मनुष्य बनने में सहायता करो।''

यह वह पद्धति है जिसके द्वारा हमारे देश का राष्ट्रीय चरित्र भी पुनर्निर्मित हो सकता है। सभी सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्थाएँ उससे जुड़े मनुष्यों के सदाचार और सच्चरित्रता, सद्‌भाव के ऊपर ही निर्भर करती हैं। कोई भी राष्ट्र केवल इसलिए महान और अच्छा नहीं बन जाता कि उसके पार्लियामेंट ने यह या वह बिल पास कर दिया है, वरन इसलिए होता है कि उसके नागरिक महान और अच्छे हैं। सद्‌भावना की बुनियाद नियम, अधिनियम में नहीं, बल्कि नागरिकों की नैतिकता और पवित्रता में ही मनुष्य की समस्त

शक्ति निहित होती है। यदि राष्ट्र निर्माण का दायित्व ऐसे भावी वकीलों, लिपिकों, प्रशासकों, डॉक्टरों, इंजीनियरों, शिक्षकों, श्रमिकों या राजनीतिज्ञों के ऊपर सौंप दिया जाए जिनमें सच्चरित्रता और सदाचार रूपी रीढ़ की हड्‌डी ही नदारद हो तो भारत के पुनर्निर्माण की समस्त बड़ी-बड़ी परियोजनाएँ भ्रष्टाचार के कारण विफल होने को बाध्य हैं।

यदि आध्यात्मिक शिक्षा या चरित्र-निर्माणकारी शिक्षा का अनुसरण नहीं किया गया तो तीन पीढ़ियों में ही हमारी जाति का विनाश हो जाएगा। क्योंकि चरित्र निर्माण के प्रति पुरी तरह से उदासीन बने रहने के फलस्वरूप केवल ऊँची-ऊँची डिग्रियों को प्राप्त करने की होड़ में जो नकारात्मक गुण चरित्र में प्रविष्ट हो जाएँगे वे इस तथाकथित शिक्षा को बिलकुल ही व्यर्थ बना देंगे और जिन लोगों के पास इस सामूहिक चरित्रहनन के प्रयास को विफल कर देने का सामर्थ्य है, उनमें कोई सदाचारिता तथा नैतिकता पर भी ध्यान देना जरूरी नहीं समझता। तो क्या अब इस संबंध में कुछ भी नहीं किया जा सकता है? हाँ बिलकुल किया जा सकता है। इस लक्ष्य की सिद्धि के लिए देश में तथा नैतिकता को लाना ही होगा। सद्‌भावना की शक्ति को जीवन में प्रतिष्ठित करा देने वाली ऊर्जा से भरपूर पौरुष के साथ-साथ संत शुलभ सर्वजन प्रेमी बुद्धि से सम्पन्न युवा शक्ति का निर्माण करने के ऊपर बहुत जोर दिया है।

राष्ट्र को खोखला करने के पीछे निश्चय ही सदाचार तथा नैतिकता की कमी है। अतः समाज में सुधार से देश का निर्माण होगा। यदि हम खुद भी सदाचारी बनें और दूसरों की भी सदाचारी बनने में सहायता करें तो राष्ट्र निर्माण में हम अपनी अहम् भूमिका निभा सकेंगे।

अगला महत्त्वपूर्ण पक्ष है नशा मुक्ति, जो राष्ट्र निर्माण में सहायता करता है। जिस राष्ट्र के युवा नशे की चपेट में हों वह राष्ट्र कभी तरक्की नहीं करता। व्यसनमुक्ति की चेतना जागरण में अणुव्रत की भूमिका बड़ी ही महत्त्वपूर्ण है। नशे से कोई घर सुखी नहीं रहता तथा जीवन-मृत्यु समान ही हो जाते हैं। चरित्र निर्माण के साथ-साथ राष्ट्र में नशा मुक्ति की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका है। अतः राष्ट्र निर्माण के तीन महत्त्वपूर्ण पक्ष हैं सद्‌भावना, नैतिकता तथा नशामुक्ति। ❑

बीमारियों के कारण जब इंसान खुद अपने पैरों पर खड़ा नहीं रह सकता, तब वह राष्ट्र के लिए क्या योगदान देगा। जब इंसान की सेहत ही अच्छी न हो तो वह काम कैसे करेगा, उसमें सोचने की शक्ति भी नहीं रहेगी। अधिकतर राष्ट्रों का निर्माण केवल इसी नशे के कारण नहीं हो पाता। जो नशा मुक्त राष्ट्र हैं वह सबसे ज्यादा प्रगति पर हैं और निर्मित राष्ट्र कहलाता है।

नशामुक्त राष्ट्र ही करता है विकास

◈ **प्राची कुमारी** 9वीं
रेनबो इंग्लिश सी.सै. स्कूल
सी-3, जनकपुरी, दिल्ली

वास्तव में राष्ट्र निर्माण एक ऐसी परिकल्पना है जिसमें राष्ट्र से जुड़े हर पहलू का ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक है। राष्ट्र निर्माण होता है राष्ट्रवासी से। यदि देश में निवास करने वाला प्रत्येक राष्ट्रवासी यह ठान ले कि हमें अन्याय नहीं सहना है, अन्याय नहीं करना है तो राष्ट्र निर्माण की वह बुनियाद पड़ेगी कि युगों के बीतने पर भी राष्ट्र की ईमारत बुलंद रहेगी।

निजी तौर पर राष्ट्र निर्माण में नैतिकता की बात करें तो व्यावसायिक नैतिकता व्यवसाय की व्यावहारिक आचार नीति नैतिकता का वह रूप है जो कारोबारी माहौल में पैदा हुए नैतिक सिद्धांतों और नैतिक समस्याओं की जाँच करता रहता है। जब राष्ट्र निर्माण होता है तब मानो एक-एक व्यक्ति का निर्माण होता है, क्योंकि लोगों से ही राष्ट्र बनता है। अगर लोगों के मन में बदलाव की भावना आ जाए, वे अपना इरादा पक्का कर लें तो राष्ट्र को विकसित होने से कोई नहीं रोक सकता है।

राष्ट्र निर्माण होना किसी भी राष्ट्र के लिए बहुत आवश्यक है क्योंकि अगर राष्ट्र निर्माण ही नहीं होगा तो राष्ट्र प्रगति की ओर कदम नहीं बढ़ा पाएगा और बाकी राष्ट्रों के मुकाबले वह पीछे रह जाएगा। जब राष्ट्र निर्माण की बात

आती है तो लोगों का मुख्य किरदार होता है। अगर राष्ट्र के लोगों को अपने राष्ट्र के नियम-कानून की समझ ही न हो तो राष्ट्र निर्मित ही नहीं हो पाएगा। इसलिए सबसे पहले लोगों को समझना होगा कि राष्ट्र निर्माण होना कितना आवश्यक है। इसमें ज्यादातर शिक्षित लोगों का योगदान होता है।

राष्ट्र निर्माण में नैतिकता एक प्रमुख भूमिका निभाती है। लोगों में नैतिकता का होना अत्यंत आवश्यक है। यदि लोगों में नैतिकता होगी तो राष्ट्र में अच्छे व्यवहार विकसित होंगे। नैतिकता का मूल्य हमारे जीवन में बहुत ज्यादा है। नैतिकता के विषय में विद्यार्थी विद्यालयों में पढ़ते हैं। नैतिकता हर एक इंसान के लिए जरूरी है और खासकर युवा पीढ़ी के लिए। राष्ट्र में अगर नैतिकता होगी तो राष्ट्र सुंदर बनेगा। इंसानों को कभी भी अपने संस्कार नहीं भूलने चाहिए। नैतिकता एक ऐसी चीज है जो इंसान को कोयले से हीरा बना सकती है। और जब लोग हीरा बन जाएँगे तब राष्ट्र को हीरा बनने से कोई नहीं रोक सकता।

नैतिकता हर एक इंसान का मन सुंदर बना देती है। नैतिकता इंसान को अच्छे संस्कार देती है और जब इंसान में अच्छे संस्कार आते हैं वह सही राह पर चलता है, उसे जिंदगी में क्या करना है वह उसका निश्चय करता है और उसका जीवन सुखी हो जाता है। वह भी राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दे सकता है। जब एक इंसान सही राह पर चलता है, तब सारा राष्ट्र उसके पीछे सही राह पर चलने लगता है। नैतिकता ही मानव को मानव बनाती है। यदि राष्ट्र में नैतिकता न हो तो राष्ट्र प्रगति की ओर नहीं जा सकता। व्यावसायिक नैतिकता व्यवसाय के आचरण पर समग्र रूप से प्रासंगिक है।

राष्ट्र निर्माण में सद्भावना एक प्रमुख किरदार है। लोगों में एक-दूसरे के प्रति सद्भावना होनी चाहिए। सद्भावना से ही देश आगे बढ़ सकता है। यदि लोग एक दूसरे के बारे में अच्छा सोचेंगे, एक दूसरे के हित में सोचेंगे तो राष्ट्र तरक्की कर पाएगा। अगर लोगों में सद्भावना नहीं होगी तो क्या होगा? लोग एक-दूसरे के ही दुश्मन बन जाएँगे और केवल अपने बारे में ही सोचेंगे, दूसरों के बारे में कोई नहीं सोचेगा।

अगर हम राष्ट्र के हित में कुछ करना चाहते हैं तो हमें एकजुट होकर ही कुछ करना पड़ेगा। अगर हम सिर्फ अपने बारे में ही सोचेंगे तो राष्ट्र का कुछ भी नहीं हो पाएगा। सद्भावना की भूमिका तो सबसे महत्त्वपूर्ण है चाहे राष्ट्र निर्माण में हो या निजी जिंदगी में। सद्भावना से ही देश तरक्की कर सकता है। अगर राष्ट्र के लोगों में सद्भावना ही नहीं है तो राष्ट्र निर्माण के विषय में सोचने का भी कोई महत्त्व नहीं है। वैसे देखा जाए तो सद्भावना के बारे में आज हमें अपने विचारों को बदलना चाहिए। आजकल तो बस अखबारों में ही सद्भावना देखने को मिलती है।

युवा पीढ़ी की बात करें तो उसमें भी बिलकुल सद्भावना नहीं है। जो युवा हैं वह युवतियों को परेशान करते हैं, उनकी इज्जत नहीं करते हैं। उनके मन में युवतियों के लिए जरा सी भी सद्भावना नहीं है। सद्भावना का होना राष्ट्र के निर्माण के लिए अत्यंत आवश्यक है। अगर लोग अपने मन में एक-दूसरे के प्रति बुरी भावना रखेंगे तो वे एक-दूसरे का भला बिलकुल नहीं चाहेंगे।

लोगों में एक-दूसरे के धर्म के प्रति बिलकुल भी सम्मान नहीं है। धर्मों की वजह से राष्ट्र में भेदभाव किया जा रहा है। लोगों को एक दूसरों के धर्मों के प्रति सद्भावना रखनी चाहिए। आजकल राष्ट्र में भेदभाव भी बहुत बढ़ता जा रहा है। लोगों के मन काले होते जा रहे हैं। लोगों के मन में जरा सा भी अच्छाई बचती नहीं दिखाई देती है। आजकल तो चारों ओर बस ईर्ष्या, जलन, आदि भावनाएँ नजर आती हैं। पता नहीं क्यों इंसान आज बदलता जा रहा है।

सद्भावना के बिना देश चल ही नहीं सकता। जो इंसान बचपन से सद्भावना का पाठ पढ़ लेता है वह अपनी जिंदगी में जरूर कामयाब बनता है और अपने राष्ट्र को भी कामयाब बना देता है। मान लो अगर किसी व्यक्ति में ईर्ष्या की भावना हो तो वह दूसरे लोगों का भला तो चाहेगा नहीं। वह उनको मुसीबतों में डालने की पूरी कोशिश करेगा और फिर जिस इंसान को वह मुसीबत में डालेगा वह चिड़चिड़ा होकर दूसरे को परेशान करेगा। एक-एक करके सारे लोग परेशान होंगे तो सारा राष्ट्र अपने आप ही परेशान हो जाएगा। फिर वह बस अपनी परेशानियों को सुलझाते रह जाएगा। इसलिए राष्ट्र निर्माण में सद्भावना की अहम् भूमिका है।

नशामुक्ति का भी राष्ट्र निर्माण में बहुत योगदान है। नशा एक ऐसी चीज है जो पूरे राष्ट्र को बरबाद कर सकती है। नशा एक अभिशाप है। एक ऐसी बुराई है जिससे इंसान का अनमोल जीवन समय से पहले ही मौत का शिकार हो जाता है। नशे के लिए समाज में शराब, गाँजा, भाँग, अफीम, गुटखा, तंबाकू और धूम्रपान (बीड़ी, सिगरेट, हुक्का, चिलम) सहित चरस, स्मैक, कोकिन, ब्राउन शुगर जैसे घातक मादक दवाओं और पदार्थों का उपयोग किया जा रहा है। इन जहरीले और नशीले पदार्थों के सेवन से व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक और आर्थिक हानि पहुँचने के साथ ही इससे सामाजिक वातावरण भी प्रदूषित होता ही है, साथ ही स्वयं और परिवार की सामाजिक स्थिति को भी भारी नुकसान पहुँचता है। नशे के आदी व्यक्ति को समाज में हेय दृष्टि से देखा जाता है।

नशा करने वाला व्यक्ति परिवार के लिए बोझ स्वरूप हो जाता है, उसकी समाज एवं राष्ट्र के लिए उपादेयता शून्य हो जाती है। वह नशे से अपराध की ओर अग्रसर हो जाता है तथा शांतिपूर्ण समाज के लिए अभिशाप बन जाता है। नशा अब एक अंतर्राष्ट्रीय विकराल समस्या बन गया है। दुर्भाग्य है कि आजकल नौजवान शराब और धूम्रपान को फैशन और शौक के चक्कर में अपना लेते हैं। इन सभी मादक पदार्थों के सेवन का प्रचलन किसी भी स्थिति में किसी भी सभ्य समाज के लिए वर्जनीय होना चाहिए। समाज में पनप रहे विभिन्न प्रकार के अपराधों का एक कारण नशा भी है। नशे की प्रवृत्ति में वृद्धि के साथ-साथ अपराधियों की संख्या में भी वृद्धि हो रही है।

बीमारियों के कारण जब इंसान खुद अपने पैरों पर खड़ा नहीं रह सकता, तब वह राष्ट्र के लिए क्या योगदान देगा। जब इंसान की सेहत ही अच्छी न हो तो वह काम कैसे करेगा, उसमें सोचने की शक्ति भी नहीं रहेगी। अधिकतर राष्ट्रों का निर्माण केवल इसी नशे के कारण नहीं हो पाता। जो नशा मुक्ति राष्ट्र हैं वह सबसे ज्यादा प्रगति पर हैं और निर्मित राष्ट्र कहलाते हैं। अतः समय रहते यदि कोई राष्ट्र सद्भावना, नैतिकता एवं नशामुक्ति को अपना लेता है तो वह समझो स्वर्ग बन गया है। ❑

नशा वृत्ति है अत्यंत घातक

◈ **राजा साह** 9वीं
लाल बहादुर शास्त्री हिंदी
हाई स्कूल
गेट बाजार, भक्ति नगर
सिलीगुड़ी, पं. बंगाल

अपने देश अथवा अपनी जन्म भूमि के प्रति प्रेम होना मनुष्य की एक स्वाभाविक भावना है। देश प्रेम विश्व के सभी आकर्षणों से बढ़कर है। यह एक ऐसा पवित्र तथा सात्त्विक भाव है जो मनुष्य को लगातार त्याग की प्रेरणा देता है। देश प्रेम की भावना मनुष्य की उच्चतम भावना है। देश प्रेम के सामने व्यक्तिगत लाभ का कोई महत्त्व नहीं है।

देश हित में सद्भावना का सही अर्थ हुआ देश की सच्ची भावना। जब हम अपने देश का आदर, रक्षा बिना स्वार्थ एवं सच्ची लगन से करते हैं तो उसे सद्भावना कहा जाता है। हम सब भारतवासी हैं और हम सब को चाहिए कि अपने देश की भावना का आदर कर देश सेवा में अपने आप को तत्पर रखें।

मनुष्य जिस देश अथवा समाज में पैदा होता है, सबकी उन्नति में उसका सहयोग देना उसका प्रथम कर्तव्य है, अन्यथा उसका जन्म लेना व्यर्थ है। देश प्रेम की भावना ही मनुष्य को बलिदान एवं त्याग की भावना की प्रेरणा देती है। मनुष्य किस भूमि पर जन्म लेता है, उसका अन्न खाकर, जल पीकर अपना विकास करता है। उसके प्रति प्रेम की भावना का उसके जीवन में सर्वोच्च स्थान होता है, इसी भावना से ओतप्रोत होकर कहा गया है 'जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है।'

देश प्रेम में सद्भावना की भावना मनुष्य में स्वाभाविक रूप से विद्यमान होती है। अपनी जन्म भूमि के लिए प्रत्येक मनुष्य के हृदय में मोह तथा लगाव अवश्य होता है। अपनी जन्म भूमि के लिए मनुष्य ही नहीं पशु-पक्षियों में

भी प्रेम होता है। वे उसके लिए मर-मिटने की भावना रखते हैं।

सद्भावना प्रत्येक युग में सर्वत्र विद्यमान बनी रहती है। मनुष्य जहाँ रहता है वहाँ अनेक कठिनाइयों के बाद भी उस स्थान के प्रति उसका लगाव बना रहता है। देश प्रेम के समक्ष कोई सुविधा एवं दुविधा नहीं होती। विश्व के अनेक ऐसे प्रदेश एवं राष्ट्र हैं, जहाँ जीवन अत्यंत कठिन है फिर भी वहाँ के निवासियों ने खुद को उन परिस्थितियों के अनुरूप बना लिया तथा सदैव उसी देश के निवासी बने रहे।

मनुष्य तथा पशु आदि जीवधारियों की बात तो क्या, फूल-पौधों में भी अपने देश के लिए मिटने की चाह होती है। पंडित माखन लाल चतुर्वेदी ने पुष्प के माध्यम से इस अभिलाषा का सुंदर वर्णन किया है

मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर तुम देना फेंक,
मातभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जायें वीर अनेक।

अपने देश अथवा अपनी जन्म भूमि के प्रति प्रेम होना मनुष्य की एक स्वाभाविक भावना है। देश प्रेम विश्व के सभी आकर्षणों से बढ़कर है। यह एक ऐसा पवित्र तथा सात्त्विक भाव है जो मनुष्य को लगातार त्याग की प्रेरणा देता है। देश प्रेम की भावना मनुष्य की उच्चतम भावना है। देश प्रेम के सामने व्यक्तिगत लाभ का कोई महत्त्व नहीं है। जिस मनुष्य के मन में देश के प्रति अपार प्रेम और लगाव नहीं है, उस मानव के हृदय को केवल पाषाण खंड कहना ही उपयुक्त होगा।

जो मानव अपने देश के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर कर देता है तो वह अमर हो जाता है, किंतु जो देश प्रेम, सद्भावना व नैतिकता को महत्त्व नहीं देता वह तो जीवित रहते हुए भी मृतक जैसा है।

केवल राष्ट्रहित में राजनीति करने वाला व्यक्ति ही देशप्रेमी नहीं होता, स्वस्थ्य व्यक्ति सेना में भर्ती होकर मजदूर, किसान तथा अध्यापक अपना कार्य मेहनत, निष्ठा तथा लगन से करके तथा छात्र अनुशासन में रहकर देश प्रेम का परिचय दे सकता है।

युवाओं में नशावृत्ति घातक होती जा रही है। हमें युवाओं को इस प्रकृति से

दूर करने के लिए दिन-रात लगना पड़ेगा। वह देश के निर्माण में अपना संपूर्ण सहयोग दें। हम देश में कही भी रहें, किसी भी रूप में रहें, अपने कर्म को ईमानदारी से तथा देश को सर्पोपरि मानकर करें।

आज देश अनेक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं से जूझ रहा है। ऐसे समय में प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि अपने व्यक्तिगत सुखों का त्याग करके देश रक्षा तथा मान-सम्मान के लिए अपने तन-मन एवं धन को अर्पित करे और यह तभी संभव है जब सद्भावना, नैतिकता को आचरण मैं लाकर, नशामुक्त भारत के लिए कदम से कदम मिलाकर चलें। ❑

विकृति को त्यागें, नैतिकता अपनाएँ

अब समय रहते हमें अपनी विचारधारा बदलने की आवश्यकता है। भारत जैसे विशाल देश में आदर्श और नैतिकता के गिरते स्तर को उठाने में हमें अपनी सार्थक पहल करके दिखानी है, तभी हमारा भविष्य उज्ज्वल बन सकेगा। यह सनातन सत्य है कि जमाना हमसे बनता है, हम जमाने से नहीं बनते।

◈ **सलोनी अग्रवाल** 10वीं
सेवेन स्क्वेयर अकादमी आइडियल पार्क, दीपक हॉस्पिटल लेन
मीरा रोड (पूर्व), ठाणे, महाराष्ट्र

राष्ट्र का निर्माण लोग भूतकाल से करते हुए आ रहे हैं, वर्तमान में कर रहे हैं और भविष्य में भी करने की सोच रहे हैं। परंतु राष्ट्र निर्माण का अर्थ केवल राष्ट्र को विकसित कर उसे सुंदर व साफ बनाना है? उस गंदगी का क्या जो समाज को दीमक के समान खोखला कर रही है। राष्ट्र के निर्माण में नैतिकता, सद्भावना और नशामुक्ति की बहुत आवश्यकता व महत्त्वपूर्ण भूमिका है, जो हम अपनाना व निभाना भूल गए हैं। हमें यह याद दिलाने व समझाने की बहुत से लोगों ने कोशिश भी की परंतु जनता के कानों पर जूँ नहीं रेंगी।

सद्भावना अर्थात् अच्छी व नुकसानहीन भावना। श्रेष्ठ और शुभाचरण का पर्याय सद्भावना व सच्चरित्रता है। सत्यवादिता, दयालुता, अहिंसा, सदाचार, निर्भयता, दान, संतोष और शुचिता सद्भावना के लक्षण हैं। सच्चरित्रता व सद्भावना मानव की श्रेष्ठता की कसौटी है, जीवन की शांति के लिए अमूल्य वस्तु है, सत्पुरुषों का भूषण है। सद्भावना मनुष्य रूपी वृक्ष का सुंदर सुगंधित पुष्प है।

सद्भावना सुख, संतोष व शांति प्रदान करती है और लोग ऐसे व्यक्ति का

अनुकरण करने के लिए लालायित रहते हैं। अतः बर्टल के शब्दों में, 'चरित्र एक ऐसा हीरा है, जो हर किसी पत्थर को घिस सकता है।' अर्थात् अच्छे चरित्र की पुकार इतनी तेज है कि उसकी गूँज दूर तक पहुँचती है। हमें अच्छे चरित्र व सद्भावना को ही अपनी तलवार बनानी चाहिए। यह निर्धन का धन भी माना गया है। लोग सद्भावना को अपना धर्म व जन्म सिद्ध कर्तव्य भी मानते हैं।

उन्नति और प्रगति के इस दौर में हमने एक ओर बहुत कुछ खोया है और दूसरी ओर बहुत कम पाया है। हमने भौतिकता के माध्यम से शिखरों को छू लिया लेकिन हम पतन की ओर ऐसे गिरे कि पराकाष्ठा की ओर हमने अपना ध्यान दिया ही नहीं। हमारे देश के धर्मग्रंथ वेद में एक उक्ति है 'मनुर्भवः देवं जनय' जिसका अर्थ हुआ कि हे मनुष्य! तू मानव बन और दिव्य संतान को उत्पन्न कर कि तेरी आने वाली संतान चरित्रवान और दिव्यतापूर्ण हो, दानव नहीं।

आज मनुष्य ने अपना परिष्कार और परिमार्जन त्याग दिया है, साथ ही संस्कार आधारित शिक्षा का त्याग कर अपनी नैतिकता को खूँटी पर टाँग दिया है। आज मानव अपनी नैतिकता के सार को गिराकर स्वयं किलकारी मारकर हँस रहा है। समाज के अधिकांश प्राणी अपना नैतिक कर्तव्य भूलकर मानवता की जगह दानवता का परचम लहराने में अपनी शान, ईमान समझते हैं। यदि देखा जाए तो आज देश के नेताओं के चरित्र का पतन हो चुका है और वह अपने नैतिक मूल्यों से इतना गिर चुके हैं कि देश की अस्मिता का सौदा करने में भी पीछे नहीं है।

नैतिकता का स्तर समाज में इतना गिर चुका है कि देश के शहीदों के पार्थिव शरीरों को उनके परिजनों तक सौंपने के लिए जिन ताबूतों को व्यापारियों से खरीदा जाता है, उनमें से दलाली की बू आती है। नैतिकता के गिरते स्तर पर गीतकार श्रवण 'राही' का एक गीत कितना सक्षम बन पड़ा है

राम की तो बातें मेरे देश में ही चलती हैं,
लोगों में तो राम का चरित्र मिलता नहीं।

मानव के इस प्रकार के घिनौने कर्तव्य और पतन को देखकर तो शैतान भी भयभीत हो उठे और यदि इस प्रकार चलता रहा तो मानव का अस्तित्व ही मिट जाएगा।

इसके अतिरिक्त राष्ट्र की सबसे बड़ी समस्याओं में एक है नशीले पदार्थों का सेवन जो आज इस कदर बढ़ता जा रहा है कि मानो उसे रोकना असंभव सा हो गया है। नशीली वस्तुओं पर प्रतिबंध या इनका व्यवस्थित प्रयोग नशाबंदी है। किसी प्रकार के अधिकार, प्रवृत्ति, बल आदि मनोविकार की अधिकता, तीव्रता या प्रबलता के कारण उत्पन्न होने वाली अनियंत्रित मानसिक अवस्था नशा है। जैसे अफीम, शराब, ताड़ी, चरस, कोकीन आदि।

वर्तमान समय में नशामुक्ति का तात्पर्य शराब और ड्रग्स पर प्रतिबंध या उसके व्यवस्थित प्रयोग से है। 'अति' सदा विनाशकारी होती है। इससे 'किडनी' और 'लीवर' दुर्बल हो जाते हैं। परिणामतः अनेक बीमारियाँ बिना माँगे ही शरीर से चिपट गईं। ड्रग्स ने तो शरीर की हाजमे की शक्ति को रौंद डाला, जो व्यक्ति को विह्वल कर देता है।

नशा करने के अनेक दुर्गुण हैं। नशे में धुत होकर लोग अपना होश, विवेक खो देते हैं। बच्चों और पत्नी की दुर्दशा करते है। शराब पीकर गाड़ी चलाते समय वह दूसरों के लिए भी खतरनाक सिद्ध होते हैं, विशेषकर लत, फैशन के रूप में युवकों के बीच फैली है। वह नशीले पदार्थों को अपना सहारा मान चुके हैं। 'दीर्धनिकाय' का वचन है, मदिरा तत्काल धन की हानि करती है, कलह को बढ़ाती है, रोगों का घर है, लज्जा का नाश करती है और बुद्धि को दुर्बल।

इस खोखलेपन को भरने के लिए हमें अपनी सभी कमियों को सुधारना होगा। हमें हमेशा सच्चरित्र व दूसरों के प्रति अच्छी भावना रखनी चाहिए। अगर कोई मदद की गुहार लगाए तो रिश्तों के नाते नहीं बल्कि मानवता के नाते उसकी सुननी चाहिए। जैसे चमकहीन मोती का कोई मूल्य नहीं होता, उसी प्रकार सद्भावना के अभाव में मानव का कोई काम नहीं।

अब समय रहते हमें अपनी विचारधारा बदलने की आवश्यकता है। भारत जैसे विशाल देश में आदर्श और नैतिकता गिरते स्तर को उठाने में हमें अपनी

सार्थक पहल करके दिखानी है, तभी हमारा भविष्य उज्ज्वल बन सकेगा। यह सनातन सत्य है कि जमाना हमसे बनता है, हम जमाने से नहीं बनते।

प्रत्येक मनुष्य इस संसार में इकाई मात्र है लेकिन इन्हीं इकाइयों में सबका कर्तव्य है कि हम इस बदले हुए मानव का अनुसरण करना छोड़ें और हर विकृति को त्यागकर अपनी नैतिकता की रक्षा करें।

राष्ट्र निर्माण में नशामुक्ति की बहुत बड़ी भूमिका है क्योंकि नशे के कारण देश का भविष्य डूब रहा है। जो वस्तु खुले आम नहीं मिलती वह काले बाजार की शरण में आ जाती है। लोगों के लिए यदि हम एक रास्ता बंद करेंगे तो वह दूसरे व अत्यधिक खतरनाक वाले रास्ते को चुनेंगे। इसके लिए सुरालयों की संख्या कम करके, देसी भट्टियों को जड़मूल से नष्ट करके, सार्वजनिक रूप में शराब पीने पर पूर्णतः प्रतिबंध लगाकर इसके दुरुपयोग को रोका जा सकता है।

हमें लोगों को सही रास्ते पर लाने के लिए बीमारियों को जड़ से ऊखाड़ फैंक देना चाहिए। लोगों में जागृति फैलाने की बहुत आवश्यकता है और यह केवल हमारी सरकार का काम नहीं बल्कि समस्त राष्ट्र को नींद से जगाने की आवश्यकता है। ❑

युवाओं के कंधों पर बड़ी जिम्मेदारी

◈ **प्रशांत चौधरी** 11वीं
ज्ञानदीप शिक्षा भारती
गोवर्धन रोड, मथुरा
उत्तर प्रदेश

नशा करने का सबसे प्रमुख कारण मनुष्य में निहित संस्कार, शिक्षा एवं नैतिकता का अभाव होना है। लोगों की उनके प्रति लत तथा जानकारी न होना। नशे का उत्पादन करने वाली औद्योगिक इकाइयाँ इस जहर को फैलाने में सर्वाधिक भूमिका अदा कर रही हैं। चंद रुपया कमाने के लिए वे लोग अपने देश के साथ गद्दारी कर रहे हैं।

हमारे देश के इतिहास में लिखा हुआ है कि प्रशासन की सबसे छोटी इकाई कुल है। एक कुल में, एक घर में एक छत के नीचे रहने वाले लोग शामिल होते हैं। एक ग्राम कई कुलों से मिलकर बना होता है। ग्रामों का संगठन विशू कहलाता है और विशों का संगठन जन। कई जन मिलकर राष्ट्र का निर्माण करते हैं।

राष्ट्र का निर्माण एवं उत्थान वहाँ के निवासियों पर निर्भर करता है। जिस देश के लोग कर्मठ, सच्चरित्र, नैतिक मूल्यों को जानने वाले एवं उनका पालन करने वाले, नशे से दूर एवं परिश्रमी होते हैं वह देश निश्चय ही संपन्न एवं समृद्ध होता है। मानव प्रकृति द्वारा प्रदत्त एक अनमोल एवं अनूठा तोहफा है। हर असंभव लगने वाले काम को उसने संभव कर दिखाया है। एक के बाद एक लगातार नए-नए आविष्कार किए जा रहे हैं एवं अपने राष्ट्र का गौरव बढ़ता जा रहा है।

नशा करने के दुष्परिणाम : मनुष्य का उसके विवेक, संयम, संस्कार एवं स्वयं के ऊपर से नियंत्रण खत्म हो जाना नशा कहलाता है। इससे प्रभावित मनुष्य न खुद के लिए कुछ कर पाता है और न अपने परिवार व समाज

के लिए, देश के लिए कुछ करना तो बहुत दूर की बात है। वह देश का व अपना नुकसान अवश्य करता है।

नशा करने का सबसे प्रमुख कारण मनुष्य में निहित संस्कार, शिक्षा एवं नैतिकता का अभाव होना है। लोगों की उनके प्रति लत तथा जानकारी न होना। नशे का उत्पादन करने वाली औद्योगिक इकाइयाँ इस जहर को फैलाने में सर्वाधिक भूमिका अदा कर रही हैं। चंद रुपया कमाने के लिए वे लोग अपने देश के साथ गद्दारी कर रहे हैं।

इस दूषण को रोकने का सबसे उचित उपाय है कि लोगों को नशे के प्रति जागरूक कर उन्हें इसके दुष्परिणामों को गिनाए। समझदार लोग एवं बुजुर्ग लोग इसके सेवन से बचें और दूसरे लोगों को भी बचाएँ। सभी लोग संगठन बनाकर सरकार से नशीले पदार्थों के उत्पादन पर प्रतिबंध लगाएँ।

नैतिकता : नैतिकता का अर्थ उन नैतिक कार्यों से है जो हमें दूसरों के दिलों का सितारा भी बना सकते हैं और गलत काम करने पर उन्हीं की नजरों में गिरा भी सकते हैं। जिस प्रकार एक काँटा चुभ जाने पर पीड़ा होती है, उसी प्रकार एक असभ्य व्यक्ति की अनैतिक बातों से पीड़ा होती है। अगर मनुष्य श्रीराम के एक भी गुण को अपनाने लगे तो राम राज्य की कल्पना साकार होते देर न लगेगी।

हमारी शिक्षा पद्धति में भी शुरुआत से बच्चों को नैतिकता का पाठ पढ़ाया जाता है। क्योंकि हमारे देश का भविष्य बच्चे ही हैं, युवा वर्तमान एवं बुजुर्ग भूतकाल हैं। अगर बच्चों में अच्छे संस्कार होंगे तो देश का भविष्य भी उज्ज्वल रहेगा। जैसा बच्चों को सिखाया जाता है वे वैसा ही बन जाते हैं। अर्थात् उनका मन एक कोरे कागज की तरह होता है जो उसमें लिखोगे वह अमिट हो जाएगा। अतः अभिभावकों, गुरुजनों एवं बुजुर्गों को यही कोशिश करनी चाहिए कि वे बच्चों को अच्छे संस्कार दें, अच्छी बातें बताएँ। गलत बातों को बच्चों से दूर रखें।

सद्भावना : जिसकी जैसी भावना है, उसके मन में भगवान की वैसी ही मूर्ति होती है। अतः मनुष्य को देश व देशवासियों के प्रति सद्भावना रखनी चाहिए। क्योंकि नकारात्मकता एक ऐसा वायरस है जो इंसान को अंदर से

खोखला कर देता है और फिर वह खोखली जगह गलत विचारों के आवागमन का मार्ग बन जाती है। इसका एक ही इलाज हो सकता है सकारात्मकता। यह एक एंटीवैक्टेरियल की तरह काम करके मानव को सद्मार्ग दिखाती है और सद्भावना जागृत करती है।

हम अपने देश भारत का ही उदाहरण लें तो पुराने समय में सोने की चिड़िया कहा जाता था हमारा देश। यह कई शासकों का अत्याचार सहने एवं शोषण सहने के बाद भी सन् 1947 की लड़ाई में स्वतंत्र हुआ और अपने पैरों पर खड़ा हुआ। आज भारत सबसे बड़े लोकतांत्रिक देशों में शुमार है। इसकी ख्याति फिर से दूर-दराज के देशों में फैलने लगी है जिसका श्रेय हमारे देश की महान आत्माओं को जाता है।

महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सुभाषचंद्र बोस, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, विवेकानंद इत्यादि कई और हस्तियाँ भी हैं जिनका नाम हमारी जानकारी में भी नहीं, उन सभी के बलिदानों के कारण ही आज हम सुखी जीवन जी रहे हैं। फिर भी कभी-कभी ऐसा लगता है कि हर स्वतंत्रता दिवस के बाद हम इन महान लोगों को भूलते जा रहे हैं। क्योंकि उनके देश में भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, महँगाई, एकता में खंडता, जाति-पाति के आधार पर इंसानों का बँटवारा, हिंसात्मक झगड़े आदि अपने पैर फैलाए जा रहे हैं।

यह समस्या युवाओं को सबसे ज्यादा हानि पहुँचा रही है। भारत में सर्वाधिक युवा आबादी है। यदि सभी युवा ठान लें तो हिमालय तक को उखाड़ फेकें, नदियों का प्रवाह बदल दें। किंतु आज नशे की लत, ईर्ष्या, युवाओं को पथभ्रमित कर रही है। भ्रष्टाचार हमारे देश की जड़ों को खोखला किए जा रहा है। जिस प्रकार दीमक लकड़ी को खोखला कर देती है उसी तरह यह दुरात्माएँ हमारे देश रूपी वृक्ष की डाल को खोखला कर रही हैं। अतः उचित यही रहेगा कि समय रहते ही इसका उपाय खोजा जाए और इसे देश से दूर रखा जाए।

यह तभी संभव है जब सब लोग बुजुर्ग, महिला, बच्चे एवं खासकर युवा नैतिकता का पाठ पढ़कर, मन में सद्भावना लिए, नशे से दूर रहने की कसम खाकर देश के लिए कुछ करने की ठान लें। ❑

ईमानदारी से कहा जाए तो नैतिक मूल्यों के बिना भौतिक विकास संभव ही नहीं है परंतु नैतिक मूल्यों के बिना भौतिक विनाश जरूर संभव है। समाज में विद्यमान धीमे जहर अर्थात् अपराध, भ्रष्टाचार और कालाबाजारी राष्ट्र की प्रगति में अवरोध हैं। यदि इनकी मात्रा समाप्त न की जाए तो राष्ट्र नष्ट हो सकता है।

सद्भावना राष्ट्र निर्माण का स्तंभ

◈ **जागृति प्रजापति** 10वीं
दिल्ली पब्लिक स्कूल
गांधीनगर, गुजरात

आज के दौर में भारत को एक विकसित होते देश के रूप में देखा जाता है। इस राष्ट्र को विकसित करने की हर कोई अपने स्तर पर पूरी चेष्टा कर रहा है। राष्ट्र निर्माण में बहुत-सी चीजों की आवश्यकता होती है, जैसे न्यायसंगत और उचित कार्यप्रणाली, जिम्मेदार नायक एवं जिम्मेदार नागरिक इत्यादि। परंतु राष्ट्र निर्माण में केवल भौतिक ही नहीं, भावनात्मक चीजों की भी आवश्यकता है, जैसे सदाचार, भाईचारा, सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति इत्यादि। राष्ट्र निर्माण में सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति की एक अहम् भूमिका है।

सद्भावना का अर्थ है दूसरों के लिए अच्छी भावनाएँ। लोगों के बीच अच्छा विश्वास स्थापित करने हेतु ईमानदारी, पारदर्शिता और प्रेम की आवश्यकता है। सद्भावना ने हम सभी देशवासियों को एक साथ बाँधकर रखा हुआ है। एक-दूसरे के प्रति समर्पण, आदर और निश्छलता के भाव से भारत आज पूरे विश्व के समक्ष एक अखंड राष्ट्र के रूप में खड़ा है।

सद्भावना का सबसे अच्छा उदाहरण है भारतीय सेना। भारतीय सैनिक अपनी जिंदगी की परवाह न करके केवल देश के लिए ही लड़ते हैं। कई

सारे तो अंत में शांति से भारत माँ की गोद में भी सो जाते हैं। भारतीय सैनिक के इस बलिदान के हम सब कर्जदार हैं। इस देश में सद्भावना को प्रोत्साहित करने हेतु 20 अगस्त को 'सद्भावना दिवस' भी मनाया जाता है। यह दिवस हमारे पूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी जी के जन्मदिवस के दिन मनाया जाता है। जिस प्रकार सद्भावना राष्ट्र निर्माण का एक स्तंभ है, उसी प्रकार नैतिकता भी दूसरा अहम् स्तंभ है।

ईमानदारी से कहा जाए तो नैतिक मूल्यों के बिना भौतिक विकास संभव ही नहीं है परंतु नैतिक मूल्यों के बिना भौतिक विनाश जरूर संभव है। समाज में विद्यमान धीमे जहर अर्थात् अपराध, भ्रष्टाचार और कालाबाजारी राष्ट्र की प्रगति में अवरोध हैं। यदि इनकी मात्रा समाप्त न की जाए तो राष्ट्र नष्ट हो सकता है।

जनसामान्य में नैतिक मूल्यों की स्थापना और उसके प्रति निष्ठा से इन बुराइयों को जड़ से उखाड़ा जा सकता है। यदि नैतिक मूल्य सशक्त और स्पष्ट हैं तो हथियार के कई सदुपयोग हो सकते हैं। जैसे मोबाइल फोन को ही ले लीजिए, एक सर्वेक्षण के मुताबिक मोबाइल फोन के आविष्कार के बाद से लोगों में झूठ बोलने की प्रवृत्ति अधिक बढ़ गई है। परंतु इस तथ्य के आधार पर हम यह तो नहीं कह सकते हैं कि इसका आविष्कार झूठ बोलने हेतु किया गया था बल्कि इसका आविष्कार तो लोगों के बीच संवाद स्थापित करने के लिए किया गया था।

भारत के प्राचीन इतिहास के पृष्ठ पलटें तो हम देखते हैं कि यह देश सदैव से नैतिक मूल्यों का हामी रहा है परंतु इतिहास ही हमें कुछ ऐसी घटनाओं का उदाहरण देता है जिससे हमें नैतिक मूल्यों के पतन का परिणाम देखने को मिलता है। उदाहरण के तौर पर जैसे ही रावण सांसारिक संसाधनों के भोग में डूब गया और नैतिक मूल्यों की अनदेखी कर दी, वह समाजकंटक बन गया। अहंकारी होकर रावण ने भौतिक संसाधनों का उपयोग समाज पर अत्याचार करने में किया। अतः नैतिक मूल्यों के तत्कालीन सशक्त संरक्षक और उपासक मर्यादा पुरुषोत्तम राम को उसका अंत ही करना पड़ा।

यही स्थिति कंस के साथ भी हुई थी। आचार्य चाणक्य ने भी एक साधारण

से बालक को महान सम्राट चंद्रगुप्त बनाकर नैतिक मूल्य खो चुके मगध के राजा घनानंद का दंभ धूल में मिलाया था। नैतिक मूल्यों के अभाव में आज अपराधों का लेखाचित्र (ग्राफ) प्रति वर्ष बढ़ता जा रहा है।

राष्ट्र निर्माण का तीसरा स्तंभ है नशामुक्ति। मदिरापान करना अपनी मृत्यु को घर बुलाने के समान है। यह केवल व्यक्ति के लिए ही नहीं बल्कि पूरे राष्ट्र के लिए घातक सिद्ध होता है। आज के दौर में नशीले पदार्थों की बहुत जोर-शोर से बिक्री हो रही है।

नीतिकारों का कथन है 'कंचन, कामिनी और कादंबरी का मोह मनुष्य को मनुष्यता से पतित करता है।' और यह सत्य भी है। मदीरापान हमें कहीं का नहीं छोड़ती है। इसके सेवन से मनुष्य का शरीर बीमारियों का घर हो जाता है। व्यक्ति अपनी सारी सुध-बुध खो देता है और कई बार अपराधों को जन्म दे देता है। इससे व्यक्ति को बस क्षण-भर के सुख की अनुभूति होती है परंतु बहुत सी परेशानियाँ अपने आप उसके खाते में चली जाती हैं।

यह बुरी लत मनुष्य शरीर को क्षति तो पहुँचाती है परंतु यह राष्ट्र व समाज को भी नहीं छोड़ती। नशीले पदार्थ हमारे देश के मानव संसाधन को खंडित करने में लगे हुए हैं। किसी भी देश को आगे बढ़ाने हेतु मानव संसाधन की बहुत आवश्यकता पड़ती है। आज बड़े-बड़े नेताओं से लेकर आम आदमी भी इसकी चपेट में आया हुआ है। लोगों को तो बस इसके सेवन का मौका चाहिए। कोई सुख की घड़ी में पीता है तो कोई दुःख में।

हमारे राष्ट्र की उन्नति अभी अपेक्षाकृत धीमी गति से है और वह तभी पूर्ण विकास को प्राप्त कर पाएगी जब मदिरापान जैसी घातक बीमारियाँ हमारे देश से दूर चली जाएँगी और मानव हृदय में सदाचार, सद्‌भावना, भाईचारा, नैतिकता, सहयोग, शांति, समृद्धि की भावनाओं का संचार होगा। ❑

सद्‌भावना का अलख जगाएँ

◈ **मोमीना महबूब शेख** 8वीं
आर.बी.टी. विद्यालय
एस.पी. मुखर्जी क्रास रोड
डोंबिवली (पूर्व) ठाणे, महाराष्ट्र

हमारे देश में अनेक जाति, धर्मों के लोग रहते हैं जिनमें कोई मुसलमान तो कोई हिंदू तो फिर कोई सिख। ऐसे अनेक धर्मों के लोग हमारे देश में रहते हैं। हम सभी एक-दूसरे को सम्मान देते हैं, एक-दूसरे के पर्व, त्योहारों को मिल-जुलकर मनाते हैं। यह सद्‌भावना के कारण ही संभव हो पाता है। यदि हम समाज में सद्‌भावना की भावना लोगों तक पहुँचाने की कोशिश करें तो हमारा राष्ट्र निर्माण की राह पर जाएगा।

सद्‌भावना का अर्थ है सभी के प्रति सत्य भावना। हमारे देश में अनेक जाति, धर्मों के लोग रहते हैं। एक-दूसरे का सम्मान करना, एक-दूसरे के प्रति सद्‌भावना होने के कारण ही यह संभव हो पाता है। नैतिकता से लोगों में सोचने की क्षमता आती है। लोग एक-दूसरे के हित में सोचते हैं। नशे के कारण लोगों को अनेक प्रकार की बीमारियाँ होती हैं। नशा करने वाले व्यक्ति अपने साथ-साथ दूसरों को भी नुकसान पहुँचाते हैं।

राष्ट्र और उसका निर्माण : हमारे देश में अनेक प्रकार के लोग रहते हैं। किसी की बोली अलग तो किसी का पहनावा अलग, इसी प्रकार कई चीजें अलग हैं। फिर भी एक-दूसरे के प्रति सम्मान करना यही सद्‌भावना कहलाता है। यदि हम एक-दूसरे का साथ दें तो हमारा राष्ट्र निर्माण करेगा।

नैतिकता में कुछ मूल्य होते हैं। यदि हम उन मूल्यों के आधार पर चलें तो हमारे राष्ट्र के लोग सभी को समान समझेंगे जिससे हमारा राष्ट्र निर्माण करेगा।

सद्‌भावना की भूमिका : हमारे देश में अनेक जाति, धर्मों के लोग रहते हैं

जिनमें कोई मुसलमान तो कोई हिंदू तो फिर कोई सिख। ऐसे अनेक धर्मों के लोग हमारे देश में रहते हैं। हम सभी एक-दूसरे को सम्मान देते हैं, एक-दूसरे के पर्व, त्योहारों को मिल-जुलकर मनाते हैं। यह सद्‌भावना के कारण ही संभव हो पाता है। यदि हम समाज में सद्‌भावना की भावना लोगों तक पहुँचाने की कोशिश करें तो हमारा राष्ट्र निर्माण की राह पर जाएगा।

नैतिकता की भूमिका : नैतिकता लोगों में न होने पर लोग एक-दूसरे के प्रति सद्‌भावना नहीं रख सकते हैं। हम जानते हैं कि नैतिकता के कुछ आधार होते हैं, जिनमें से कुछ हैं, स्त्री-पुरुष समानता, नियमितता, राष्ट्रीय एकता, राष्ट्र भक्ति और स्वच्छता। स्त्री-पुरुष समानता में हम स्त्री-पुरुष को समान देखना चाहते हैं।

नशामुक्ति की भूमिका : हम सभी जानते हैं कि हर किसी के अंदर कुछ बुरी आदतें होती हैं तो कुछ अच्छी आदतें होती हैं। इन बुरी आदतों को ही नशा कहते हैं। हमारे देश में कई लोग पान तथा गुटखा खाते हैं जिससे कैंसर रोग होने का खतरा बढ़ता है। उन्हीं चीजों को खाने के बाद सड़कों तथा सार्वभौम स्थलों पर थूकते हैं। उस पर मक्खियाँ तथा मच्छर घूमते हैं जिससे कई प्रकार के रोग फैलते हैं, कई लोग बीमार हो जाते हैं। इस प्रकार हम अपने साथ-साथ कई लोगों को भी नुकसान पहुँचाते हैं। हमें लोगों को ऐसा करने से रोकना होगा तभी हमारा राष्ट्र उन्नति की राह पर जाएगा।

पारस्परिक सामंजस्य : हम सभी एक-दूसरे को अपने परिवार का हिस्सा मानें, सभी के सुख-दुख में उनका साथ दें तो खुशहाल जिंदगी जिएँगे। कभी भी झगड़े नहीं होंगे, इस प्रकार हमारा देश सदैव एक रहेगा। सभी नागरिक एक-दूसरे के सहयोग में रहें तो हमारा राष्ट्र विकसित होगा।

विकास-पथ पर ध्यान : हम सभी लोग अपने-अपने कर्तव्यों को समझें तथा अपने कर्तव्यों का पालन पूरी ईमानदारी तथा निष्ठा से करें, अपने अधिकारों का सदुपयोग करें तथा अपने से पहले लोगों के बारे में सोचें तो हमारा राष्ट्र विकास पथ पर बढ़ता जाएगा।

सभी लोग सद्‌भावना, नैतिकता के मूल्यों को अपने मन में बिठाएँ तथा लोगों तक पहुँचाएँ तथा नशा छोड़ने के लिए मजबूर हों तो हमारा राष्ट्र उन्नति की ओर जाएगा। इंसान का इंसान से भाईचारा हो, दुर्भावना समाप्त हो और समाज में सद्‌भावना बढ़े, इसी से हर किसी का कल्याण हो सकता है।

नैतिकता के मूल्यों को लोग मानने लगें और सभी को समान समझें तो राष्ट्र विकसित होगा। नशा करने से हम अपने साथ-ही-साथ दूसरे को भी नुकसान पहुँचाते हैं, इससे राष्ट्र कदापि निर्माण नहीं करेगा। इसलिए राष्ट्र का निर्माण करने के लिए हमें इन्हीं मूल्यों को अपनाना होगा। ❑

वाह! क्या बात है! आज तक सभी ने विचार ही किया लेकिन इस दिशा में कोई सार्थक कदम नहीं उठाया। अगर ईमानदारी से सोचें तो पाएँगे कि इस महान समस्या को फैलाने वाले कोई और नहीं अपितु हमारे बड़े ही हैं, समाज में गिरती नैतिकता केवल पतन का ही नहीं बल्कि बड़ों की असफलता का भी प्रतीक है। असफलता विश्व की सबसे कीमती धरोहर अपनी नई पीढ़ी को न दे पाने की।

माँ-बाप बच्चों पर दें विशेष ध्यान

◈ **रीतिक पेंर** 9वीं
सैक्रेड हार्ट स्कूल
हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखंड

नैतिक मूल्य एक तरह से भारतीय संस्कृति की पहचान, पुरखों से विरासत में मिली अनमोल धरोहर है। संपूर्ण विश्व में भारत की पहचान का प्रतीक नैतिकता है। लेकिन कहते हुए बेहद अफसोस होता है कि आज की हमारी नई एवं आधुनिक पीढ़ी जिसमें मैं भी आता हूँ, इस बेशकीमती धरोहर को खोते जा रहे हैं। युवाओं का रुष्ट और रूखा व्यवहार, बड़ों के प्रति अनादर, कुतर्क, मनमानी यह सब दर्शाता है कि युवाओं में नैतिक मूल्यों का स्तर किस हद तक गिर चुका है।

कितनी अजीब बात है, यह सब कुछ दशकों के छोटे से अंतराल में हुआ है। आज से कुछ दशक पूर्व अपने बड़ों का आदर करना, उन्हें उचित प्रेम देना कर्तव्य माना जाता था, लोग मिलनसार थे, रिश्तों में गर्माहट थी, लेकिन यह कहते हुए भी लज्जा आती है कि जिन बूढ़े माँ-बाप ने पाल-पोसकर बड़ा किया वही माँ-बाप आज बच्चों पर बोझ है।

मोबाइल फोन में युवा इतने ध्यानमग्न हैं कि मेल-मिलाप के लिए वक्त ही कहाँ? और रिश्ते तो आजकल फेसबुक पर बनते हैं तो गर्मजोशी का कोई

सवाल ही नहीं उठता। संवेदनहीनता की हद तो इस बात से आँकी जा सकती है कि सड़क पर तड़पते हुए घायल की जान बचाने के बजाय हमारे युवा उसकी दर्दनाक तस्वीर अपने स्मार्ट फोन के कैमरों में कैद करने को ज्यादा प्राथमिकता देते हैं ताकि उसे फब पर अपलोड कर सकें और बाकी के युवक संवेदनशीलता का स्वांग रचाते हुए बड़ी फुर्ती से उस पर लाइक और कमेंट्स करते हैं। छोटी-सी उम्र में ही युवा वह सब कुछ करना चाहते हैं, वह सब कुछ पाना चाहते हैं जो ना ही उनके लिए उचित है और ना ही उसका अभी वक्त आया है।

धूम्रपान, शराब, पैसा, अय्यासी सब कुछ और वह भी शॉर्टकट से। ऐशो-आराम की महत्त्वाकांक्षा ऐसी कि जब अपने किसी जूनियर या सहपाठी से पूछता हूँ, 'तुम्हारा सपना क्या है?' तो हर बार जवाब मिलता है 'पैसा'। जैसे जीवन में सब कुछ पैसा ही हो, इसके लिए कुछ भी कर गुजरने की ललक उनके चेहरों पर साफ झलकती है।

ना जाने कितने ऐसे उदाहरण हैं, जो रोज अखबारों में छपते हैं और हमारे आसपास घटित होते हैं। ये दर्शाते हैं कि युवा किस हद तक खुद को भुला चुके हैं, गिर चुके हैं और सबसे ज्यादा तकलीफ तो इस बात की होती है कि न तो उन्हें इसकी भनक है और न ही अफसोस। मदहोशियों और मदमस्तियों में वे चले जा रहे हैं किसी पागल हाथी की तरह अपने रास्ते में आने वाली हर चीज को रौंदते-कुचलते हुए। वे आसमानों में उड़ रहे हैं इस बात से बेखबर कि जमीन पर गिरेंगे तो क्या होगा?

कैसी विडंबना है यह? जिस भूमि पर मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम और अर्जुन जैसे महान शिष्य का जन्म हुआ उस ही धरा पर आज दूसरे क्षण मर्यादा लाँघी जा रही है। आए दिन गुरुओं को अपमानित किया जाता है, कितना दुर्भाग्यपूर्ण है यह सब, कहते हैं असफलता तभी आती है जब हम अपने आदर्श, उद्देश्य और सिद्धांत भूल जाते हैं।

और कड़वा सच तो देखिए हमारे आज के युवाओं को तो आदर्श, उद्देश्य और सिद्धांत का मतलब भी ज्ञात नहीं और उनकी इस अनैतिकता के चलते हर रोज समाज पतन की नई गहराइयाँ नाप रहा है। बड़े जोर-शोर से चारों

तरफ गिरते नैतिक मूल्यों की चर्चा होती है सभाओं में, प्रख्यात, प्रकांड पंडित ज्ञान का बघार लगाते हैं, चिंता जताते हैं और घर चले जाते हैं।

वाह! क्या बात है आज तक सभी ने विचार ही किया लेकिन इस दिशा में कोई सार्थक कदम नहीं उठाया। अगर ईमानदारी से सोचें तो पाएँगे कि इस महान समस्या को फैलाने वाले कोई और नहीं अपितु हमारे बड़े ही हैं, समाज में गिरती नैतिकता केवल पतन का ही नहीं बल्कि बड़ों की असफलता का भी प्रतीक है। असफलता विश्व की सबसे कीमती धरोहर अपनी नई पीढ़ी को न दे पाने की।

अपने बच्चों को अच्छे संस्कार और शिक्षा देने के बजाय उनके हाथों में लेपटॉप और इंटरनेट थमा दिए। जरा बड़े हुए नहीं कि महँगे मोबाइल और गाड़ियाँ दिला दीं और समझ लिया कि हमने हमारा फर्ज पूरा कर दिया। एक बच्चा कोरे कागज की तरह होता है और उस कागज पर नैतिक मूल्यों और अच्छी आदतों की तहरीर लिखना माता-पिता का फर्ज है पर माता-पिता अपनी निजी जिंदगियों में ही इतने व्यस्त हो गए कि वे भूल ही गए कि वे किसी के माता-पिता भी हैं। अपनी व्यस्तताओं में इस बात का ध्यान ही नहीं रहा कि उनके बच्चों की, देश की अगली पीढ़ी की असली जरूरत क्या है?

कल राष्ट्र की कमान युवाओं के हाथों में होगी, क्या सँभालेंगे देश को जो खुद ही को नहीं सँभाल सकते। गहरी नींद से जागने का वक्त अब आ चुका है। जरूरत है युवाओं पर दोष मढ़ने के बजाय बड़े इस और कुछ सार्थक कदम उठाएँ। ज्यादा-से-ज्यादा वक्त अपने बच्चों के साथ-साथ युवाओं के साथ व्यतीत करें। उन्हें उचित मार्गदर्शन दें। देश के सांस्कृतिक गौरव से अवगत कराएँ और युवाओं को भी आवश्यकता है समझने की अपने आपको और अपने देश को, पाश्चात्य रंगों में रंगने की बजाय अपनी पहचान बनाने के प्रयत्न करने होंगे।

अंत में, चंद पंक्तियों के साथ यही कहना चाहूँगा और आशा करता हूँ कि अगर मन के किसी कोने में देश के प्रति लगाव और नैतिकता की एक चिंगारी भी मौजूद होगी तो वह ज्वाला का रूप लेगी। ❑

मोह निद्रा से जागना ही होगा

◈ **नितिशा त्रिवेदी** 9वीं
तीरथबाई कलाचंद विद्यालय
इंदौर, मध्य प्रदेश

राष्ट्र निर्माण के महत्त्वपूर्ण पाँच बिंदु-शिक्षा, उद्योग-धंधे, सैन्य क्षमता, कृषि और राजनीति हैं। कोई भी देश यदि अपनी संपूर्ण शक्ति एवं क्षमताओं को सद्भावनापूर्वक अपना नैतिक दायित्व मानकर काम करे तो राष्ट्र निर्माण को कोई नहीं रोक सकता और इन सभी क्षेत्रों में युवाओं तथा नशामुक्ति की महत्त्वपूर्ण भूमिका को नकारा नहीं जा सकता।

भारत युवाओं का देश है क्योंकि विश्व के सबसे ज्यादा युवा भारत में रहते हैं, परंतु दुर्भाग्य की बात है कि युवाओं की असीमित ऊर्जा और मेधा राष्ट्र निर्माण में न लग कर नशाखोरी, अनैतिकता, दुर्भावना से ग्रस्त है जिससे युवाओं की अधिकतम संख्या राष्ट्र निर्माण के पुण्य कर्म से वंचित होकर पथभ्रष्ट हो जाती है।

एक ऐसा जनसमूह जो भौगोलिक सीमाओं में एक निश्चित देश में रहता हो, समान परंपरा, समान हितों तथा समान भावनाओं में बँटा हो और जिसमें एकता के सूत्र में बाँधने की समान उत्सुकता तथा राजनीतिक महत्त्वाकांक्षाएँ पाई जाती हैं।

राष्ट्र निर्माण एक ऐसी परिकल्पना है जिसमें राष्ट्र से जुड़े हर पहलू का ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक है। राष्ट्र निर्माण मात्र राजनीति से जुड़ा हुआ नहीं है। राष्ट्र निर्माण प्रत्येक राष्ट्रवासी तथा उसकी सद्भावना, नैतिकता और संस्कारों की नींव पर निर्भर करता है।

बालू की भित्ति पर महल खड़ा नहीं किया जा सकता। किसी भी राष्ट्र का

निर्माण तब तक संभव नहीं हो सकता जब तक उस राष्ट्र के नागरिकों के चरित्र का निर्माण न हुआ हो अर्थात् सद्भावना, नैतिकता के भाव उनमें अंतर्निहित न हुए हों। स्वामी विवेकानंद के अनुसार राष्ट्र निर्माण के लिए सबसे पहला गुण है पवित्रता और दूसरा गुण है नैतिकता व सदाचार। चरित्र गठन हो जाने से मनुष्य को मनसा, वाचा, कर्मणा, पवित्र रहने की क्षमता स्वतः प्राप्त हो जाती है तथा अन्य मनुष्यों के साथ उसका व्यवहार नैतिकतापूर्ण हो जाता है। राष्ट्र को महान संस्कृति विरासत में मिली है। सद्भावना, नैतिकता तथा नशामुक्ति द्वारा चरित्र गठन करने के पश्चात् ही युवा राष्ट्र निर्माण में अपनी अहम् भूमिका निभा सकते हैं।

राष्ट्र निर्माण के महत्त्वपूर्ण पाँच बिंदु शिक्षा, उद्योग-धंधे, सैन्य क्षमता, कृषि और राजनीति हैं। कोई भी देश यदि अपनी संपूर्ण शक्ति एवं क्षमताओं को सद्भावनापूर्वक अपना नैतिक दायित्व मान कर काम करे तो राष्ट्र निर्माण को कोई नहीं रोक सकता और इन सभी क्षेत्रों में युवाओं तथा नशामुक्ति की महत्त्वपूर्ण भूमिका को नकारा नहीं जा सकता।

सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति राष्ट्र की सर्वोपरि संपदा है। चरित्रवान् निष्ठावान, नागरिक और मनुष्य में निहित सद्भावना और मनुष्य की सर्वापरि संपदा है उसकी चरित्रनिष्ठा जो कि निहित सद्भावना और उसकी नैतिकता पर ही आधारित है। किसी भी देश का उत्कर्ष उसके चरित्रवान नागरिकों पर निर्भर करता है।

जब किसी समाज या राष्ट्र पर संकट के बादल घिर आते हैं, जनसमुदाय ऐसे चरित्रवान, सद्भावना, नीतिवान व्यक्तियों से ही मार्गदर्शन एवं राष्ट्र निर्माण की अपेक्षा करता है और उसे अपना नेतृत्व सौंपता है। जिस देश के देशवासियों में सद्भावना, नैतिकता, सदाचार तथा संस्कारों के बीज जितने गहरे और दृढ़ उन्नत होंगे, उस राष्ट्र का निर्माण भी उतना ही पुष्ट होगा। चारित्रिक मूल्य में वृद्धि ही व्यक्तिवादी प्रगति एवं राष्ट्र निर्माण में सबसे बड़ी साधक है। चरित्र साधना से व्यक्ति जीवन में सरसता तथा सामाजिक जीवन में सुव्यवस्था आती है, परिणामस्वरूप राष्ट्र निर्माण व प्रगति की संभावना बढ़ती है।

किसी भी मनुष्य, समाज या राष्ट्र की उन्नति का लक्षण है सुख, शांति और संपन्नता। यह तीनों बातें एक-दूसरे पर उसी प्रकार निर्भर हैं, जिस प्रकार किरणें सूर्य पर और सूर्य किरणों पर निर्भर है। जिस प्रकार सुख-शांति के अभाव में संपन्नता की संभावना नहीं, उसी तरह बिना संपन्नता के सुख-शांति का तथा राष्ट्र निर्माण का सपना अधूरा है।

सदाचार की शक्ति को जीवन में प्रतिष्ठित करा देने वाली ऊर्जा से भरपूर पौरुष के साथ संत सुलभ सर्वजन प्रेमी बुद्धि से संपन्न युवा शक्ति का निर्माण करने पर बल देना होगा। नशे की खरपतवार को उखाड़ फेंक सद्भावना तथा नैतिकता के जल से राष्ट्र को सींचना होगा तभी राष्ट्र निर्माण संभव है।

पाश्चात्य भोगवादी संस्कृति की आँधी को सारी शक्ति लगाकर रोकना होगा। जब तक सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति जैसे चरित्र की शक्ति से राष्ट्र का युवा संपन्न नहीं होगा, तब तक वह राष्ट्र निर्माण के लिए सच्चे अर्थों में रचनात्मक शक्ति से संपन्न नहीं हो सकता।

सद्भावना और नैतिकता के प्रति पूरी तरह से उदासीन बने रहने के फलस्वरूप केवल ऊँची-ऊँची डिग्रियों को प्राप्त करने की होड़ में नकारात्मक गुण चरित्र में प्रविष्ट हो जाएँगे और वे इस तथाकथित शिक्षा को बिलकुल ही व्यर्थ बना देंगे।

अब केवल एक ही मार्ग शेष है राष्ट्र निर्माण की इस वेला में भारत के नागरिकों को 'मोहनिद्रा' से जागृत करने के लिए अब हम लोगों को स्वयं उठ खड़े होना होगा। युवाओं का हनन तथा राष्ट्र निर्माण में बाधा डालने के लिए नशा सुरसा के समान मुँह फैलाए खड़ा है। इसका दृढ़तापूर्वक दमन करना होगा। राष्ट्र निर्माण में नशे का प्रभाव बाधा है।

ईमानदारी, सत्यता, विवेक, करुणा, पवित्रता ये नैतिक मूल्यों के आदर्श तत्त्व हैं। इन आदर्श तत्त्वों से जीवन में आध्यात्मिकता का जन्म होता है। एक आदर्श परिवार या देश के संचालन हेतु परिवार के सभी सदस्यों अथवा देश के सभी नागरिकों में शिष्टाचार, त्याग, मर्यादा, अनुशासन, परिश्रम की

आवश्यकता है। यदि जीवन में शिष्टाचार, सदाचार, त्याग, मर्यादा, अनुशासन है तो परिवार और देश में शांति रहेगी।

यदि जीवन में उच्च आदर्शों, नैतिक मूल्यों को महत्त्व दिया जाए तो परिवार से लेकर समाज एवं समाज से लेकर राष्ट्र हर क्षेत्र में चहुँमुखी विकास कर सकता है। नैतिकता द्वारा चरित्र गठन होगा तथा सद्भावना में वृद्धि होगी, फलस्वरूप चोरी, डकैती, बलात्कार, हत्याएँ इन सभी पर अंकुश लगेगा। इस प्रकार सद्भावना एवं नैतिकता राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभा सकेंगे।

जब किसी विध्वंसात्मक हथियार का प्रयोग नहीं किया जा सकता, तब शक्तिशाली विशाल समुदाय को नशे की लत डालकर सद्वृत्ति, नैतिकता को ही नष्ट किया जाता है और वह लक्षित समुदाय है भारत का विशाल और ऊर्जावान युवा वर्ग। युवा मन को विकृत करने वाले साहित्य का जो विशाल भंडार आज बाजार में नशे के रूप में या इंटरनेट पर उपलब्ध है वह परमाणु आयुधों के भंडारण से भी अधिक खतरनाक है, वह नशा मदिरा सेवन का हो अथवा इंटरनेट का।

एक पूर्ण नशामुक्त व्यक्ति अपने परिवार, समाज एवं राष्ट्र की सेवा कर सकता है और राष्ट्र तथा समाज के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है। नशामुक्ति से समाज में दुष्प्रभाव कम होंगे एवं जन-धन की हानि से मुक्ति मिलेगी। ❑

राजनीति अपने दायित्व को समझे

◈ **अदिति शर्मा** 10वीं
के.एम. पब्लिक स्कूल
भिवानी, हरियाणा

एक नशामुक्त समाज एक बेहतर समाज का उदाहरण है। वह न केवल वर्तमान में देश की प्रगति करेगा, अपितु भावी पीढ़ी को भी बहुत कुछ सिखाएगा व सजग बनाएगा और प्रगति-चक्र अपनी गति से आगे बढ़ता रहेगा। इस प्रकार देश का विकास होगा। परंतु हमारे देश में यह सब हो पाना इतना सरल नहीं। बेरोजगारी के कारण युवा पीढ़ी तनाव का शिकार होती जा रही है जिस कारण इन सब चीजों का सेवन बढ़ता जा रहा है।

व्यक्ति समाज की एक इकाई है। व्यक्ति के बिना समाज नहीं बनता और समाज के बिना व्यक्ति नहीं पनपता। यही बात एक देश के लिए भी लागू होती है। समाज निरपेक्ष व्यक्ति और व्यक्ति निरपेक्ष समाज एक ऐसा सपना है जो कभी सच नहीं बनता। व्यक्ति को समाज का सहयोग चाहिए और समाज को व्यक्ति का। व्यक्ति की आवश्यकताएँ समाज पूरी करता है और समाज की आवश्यकताएँ व्यक्ति।

समाज और व्यक्ति के बीच एक ऐसा संबंध सूत्र है जो दोनों को ऊर्जा प्रदान करता है, शक्ति और सामर्थ्य देता है, स्वास्थ्य और संबल देता है। जब इस संबंध सूत्र की विस्मृति होती है तो व्यक्ति और समाज दोनों समस्या से घिर जाते हैं। यदि किसी राष्ट्र का समाज प्रसन्न है, सद्भावना रखता है, नैतिक मूल्यों का धनी है, नशामुक्त है, संतोषी है तथा हर्ष, आनंद, संतोष, स्नेह व प्रेम आदि संवेगों से भरा हुआ है तब उस देश के निर्माण को रोकना असंभव है।

परंतु आज यह बात विशेष ध्यान देने योग्य है कि पदार्थवादी, अर्थवादी एवं प्रदर्शनवादी प्रवृत्तियों की बहुलता के कारण नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों का

पतन हो रहा है। झूठ, बेईमानी, विश्वासघात, भ्रष्टाचार, धोखाधड़ी, हिंसा, आतंक एवं अपसंस्कृति का सर्वत्र बोलबाला है। ऐसे बदरंगे परिवेश में मानव जीवन की अनमोलता को विस्मृत कर दिया गया है। यहाँ तक शाश्वत सत्य को भी भुला दिया गया है कि मानव अपने गुणों, धैर्य, परिश्रम, प्रेम, एकता, सूक्ष्म दृष्टि, ज्ञान एवं विवेक के कारण ही पशु-पक्षी, असुर आदि अन्य जीवों से श्रेष्ठ माना जाता है।

आश्चर्य नहीं कि इन्हीं सब गुणों द्वारा व्यक्ति का चरित्र निर्माण होता है और वह देश को प्रगतिशील बना देता है। यूँ तो प्राचीनकाल से ही भारत के लोग नैतिकवादी रहे हैं। शायद इसी कारण ये सब 'आर्य' कहे जाते थे और उन्हीं के निवास के कारण यह देश 'आर्यावर्त' नाम से विख्यात हुआ। दिलचस्प है कि उस समय भारत में एक सभ्य समाज निवास कर रहा था। दरअसल, सिंधु घाटी की सभ्यता, वैदिक सभ्यता ही थी। पते की बात तो यह है कि जिन सिद्धांतों, आदर्शों और मूल्यों का उस समय विकास हुआ, वे परवर्ती काल में नैतिकता के मानदंड बन गए।

कहने का तात्पर्य यह है कि नैतिकता एक ऐसा आचरण है जो न सिर्फ किसी व्यक्ति का निर्माण करता है, अपितु पूरे समाज तथा पूरे राष्ट्र को प्रगति के पथ पर ला देता है। परंतु सिर्फ नैतिक मूल्यों का पालन करके पूर्णतया उन्नति की प्राप्ति नहीं की जा सकती। व्यक्ति का चरित्र, उसकी सोच तथा उसका लोगों को देखने का नजरिया भी महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं। सदाचार, संयम, सद्भावना, अहिंसा, धैर्य, धर्म, देश-प्रेम आदि गुणों से व्यक्ति उच्च चरित्र वाला बनता है।

नशामुक्त समाज भी देश की प्रगति को गति देता है। परंतु आजकल की युवा पीढ़ी नशीली दवाइयाँ, शराब, तंबाकू आदि हानिकारक पदार्थों का सेवन कर रही है। सभी जानते हैं कि किसी भी देश की उन्नति के पीछे उसके नौजवानों का हाथ होता है। यदि वे नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करते हैं तो वे बहुत सी बीमारियों से बच सकेंगे, उनकी याददाश्त मजबूत होगी, वे प्रदूषण भी नहीं फैलाएँगे और न वे मानसिक व शारीरिक रूप से अस्वस्थ होंगे।

अर्थ यह निकलता है कि वे अपने कार्यों को पूरी लगन के साथ कर पाएँगे। न वे स्वयं पर बोझ होंगे, न अपने परिवार पर और न देश पर। स्वस्थ समाज उत्पन्न होगा तो विदेशों से अनेक प्रकार की आयात की जाने वाली महँगी दवाइयाँ नहीं मँगवानी पड़ेंगी, करोड़ों का धन बचेगा। उस धन को देश के निर्माण में लगाया जाएगा तथा गरीबी काफी हद तक कम होगी और एक संतुष्टि भी मन में रहेगी कि अपने देश का रुपया-पैसा अपने देश के लोगों की ही भलाई में उपयोग किया गया।

अतः एक नशामुक्त समाज एक बेहतर समाज का उदाहरण है। वह न केवल वर्तमान में देश की प्रगति करेगा, अपितु भावी पीढ़ी को भी बहुत कुछ सिखाएगा व सजग बनाएगा और प्रगति-चक्र अपनी गति से आगे बढ़ता रहेगा। इस प्रकार देश का विकास होगा। परंतु हमारे देश में यह सब हो पाना इतना सरल नहीं। बेरोजगारी के कारण युवा पीढ़ी तनाव का शिकार होती जा रही है जिस कारण इन सब चीजों का सेवन बढ़ता जा रहा है।

फिर भी यदि राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक मानवीय मूल्यों की प्रतिस्थापना में अपने आपको भागीदार बनाए, दैनिक जीवनशैली में निहित भावनाओं में अमूल परिवर्तन करे तो निसंदेह यह सत्य है कि वर्तमान की समस्याओं का समाधान अवश्य निकलना चाहिए व निकलेगा। इस भावना को हम चरितार्थ कर सकेंगे और राष्ट्रीय क्षितिज पर एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत कर सकेंगे, यह मेरा विश्वास है। राजनीतिज्ञ वर्ग भी यदि अपने दायित्व का बोध करे तो बहुत कुछ सुधार देश की प्रगति में लाया जा सकता है। ❑

राष्ट्र निर्माण युवाओं के हाथों में

युवाओं को आज समझाने की जरूरत है कि सद्भावना, नैतिक मूल्य और नशामुक्ति कितने अहम् हैं। यदि वे इसे उपयोग में लाएँ तो उनका भविष्य चमक उठेगा। इसके लिए उन्हें शिक्षा की आवश्यकता है। स्कूलों, कॉलेजों में इन सबके बारे में बताने की, शिक्षा देने की जरूरत है ताकि यह जहर हमारे समाज से निकल जाए। यह विषैला पौधा जड़ों से निकल जाए।

◈ **गरिमा** 10वीं
डी.ए.वी. सी.सै. स्कूल
चम्बा, हिमाचल प्रदेश

हमारा प्यारा भारत देश, जो आज पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है, अभी प्रगति की राह पर है। भारत पूरी तरह प्रगतिशील नहीं बना है। भारत में आधे से ज्यादा युवा पीढ़ी है। भारत की यही युवा पीढ़ी भारत के विकास तथा निर्माण का आधार है। युवा पीढ़ी में जोश भरपूर है। यही युवा पीढ़ी आगे चलकर भारत के विकास में भागीदार बनेगी।

भारत की युवा पीढ़ी : भारत में सबसे ज्यादा युवा पीढ़ी पाई जाती है। यह वह पीढ़ी है जिसमें जोश और ऊर्जा चरम सीमा पर होती है। युवावस्था में या तो इंसान ऊपर बढ़ता है या तो अपने भविष्य को अंधकार में कर लेता है। भारत की युवा पीढ़ी में वह क्षमता है जो न केवल उसके भविष्य को सँवारेगी बल्कि भारत के निर्माण में भी योगदान करेगी। युवा पीढ़ी में आज लड़कियाँ सबसे ऊपर हैं।

इकत्तीस प्रतिशत तो सिर्फ लड़कियाँ ही हैं जो आई.टी. सेक्टर में काम करती हैं। अतः युवा लड़कियाँ भारत के विकास की महत्त्वपूर्ण अंग हैं। अगर यह महिला वर्ग अपना पूर्ण संघर्ष करे तो भारत के विकास में चार चाँद लग

जाएँगे। केवल लड़कियाँ ही नहीं, बल्कि लड़के भी भारत के महत्त्वपूर्ण अंग हैं। अतः यही युवा पीढ़ी भारत के विकास का आधार है।

युवा पीढ़ी में कमी : भारत की युवा पीढ़ी जोश से धनी तो है परंतु आज भी उसमें सद्भावना और नैतिक मूल्यों का अभाव है। जिस प्रकार एक सिक्के के दो पहलू होते हैं, उसी प्रकार युवा पीढ़ी के भी दो पहलू हैं पहला जो भारत के विकास में भागीदार है और दूसरा जो भारत के विकास में बाधा बनता है। अब यह प्रश्न उठता है कि युवा पीढ़ी बाधा कैसे बन सकती है? इसका कारण है उसमें नैतिक मूल्यों व सद्भावना की कमी तथा नशे की तरफ झुकाव। बिना नैतिक मूल्यों के एक इंसान कभी इंसान नहीं कहला सकता और बिना सद्भावना के वह किसी भी समाज में रहने योग्य नहीं है।

भारत के कुछ नवयुवक-नवयुवतियाँ नशा करते हैं, जिससे वे अपना तो विनाश कर रहे हैं, साथ-ही-साथ अपने परिवार वालों तथा देश का भी विनाश कर रहे हैं। वे न जाने आँखें बंद करके नशे के पीछे-पीछे भागते हैं जिससे आज भारत का भविष्य संकट में है।

राष्ट्र निर्माण में सद्भावना की भूमिका : सद्भावना का अर्थ है अच्छा भाव। दूसरों के प्रति अच्छी भावना रखना। भारत के युवा आज सद्भावना को भूलते जा रहे हैं। वे तो इसे पता नहीं किस चिड़िया का नाम समझते हैं जबकि यह भारत के विकास की महत्त्वपूर्ण भागीदार है। सद्भावना से ही लोग एक-दूसरे से जुड़े होते हैं। जो लोग आपस में सद्भावना रखते हैं वे एक साथ प्रगति की ओर बढ़ते हैं। सद्भावना से लोगों में एक खुशी, एक जोश जागता है जो आगे चलकर राष्ट्र में अपनी भूमिका निभाता है। भारत की युवा पीढ़ी को सद्भावना का महत्त्व समझना होगा क्योंकि सद्भावना से ही वे एक-दूसरे से जुड़े हैं तथा प्रगति की ओर बढ़ रहे हैं।

नैतिक मूल्यों की भूमिका : किसी भी देश के या किसी भी समाज के विकास में नैतिक मूल्यों का योगदान सबसे अधिक होता है। नैतिक मूल्य एक इंसान को समाज में रहने के योग्य बनाते हैं ये नैतिक मूल्य हमें अपने बुजुर्गों से महान लोगों से मिलते हैं, अतः इन्हें संजोकर रखना हमारी जिम्मेदारी

है। भारत की युवा पीढ़ी को नैतिक मूल्य अपनाने चाहिए तथा राष्ट्र के विकास में इन्हें उपयोग में लाना चाहिए।

नशामुक्ति की भूमिका : भारत के लोग नशे की तरफ बढ़ रहे हैं। इसे छोड़ना तो दूर, इसके बिना रह तक नहीं पाते। नशा इंसान को बर्बाद कर देता है, उसे जिंदा नहीं रहने देता। परंतु भारत के लोग, विशेषतः युवा यह नहीं समझ पाते। वे इसे आनंद का आधार मानते हैं। नशा उनके जीवन का अंग बन गया है। युवा तो इसे हर समय करते हैं। वे अपना जीवन खत्म कर रहे हैं, साथ-ही-साथ अपने परिवार वालों का भी। नशा करने वालों को होश तक नहीं होता। जिसे अपना होश नहीं वह भारत के विकास में क्या योगदान देगा, अतः नशामुक्ति बहुत जरूरी है। नशे से मुक्त भारत ही आगे चलकर विश्व में अपना अनूठा स्थान बना सकता है।

युवाओं को आज समझाने की जरूरत है कि सद्भावना, नैतिक मूल्य और नशामुक्ति कितने अहम् हैं। यदि वे इसे उपयोग में लाएँ तो उनका भविष्य चमक उठेगा। इसके लिए उन्हें शिक्षा की आवश्यकता है। स्कूलों, कॉलेजों में इन सबके बारे में बताने की, शिक्षा देने की जरूरत है ताकि यह जहर हमारे समाज से निकल जाए। यह विषैला पौधा जड़ों से निकल जाए। भारत को ऐसी युवा पीढ़ी की जरूरत है जो सद्भावना और नैतिक मूल्यों से धनी हो तथा नशामुक्त हो। राष्ट्र निर्माण युवा के हाथों में ही है। ❑

नशाखोरी पर सरकार भी दोहरी

◈ **साक्षी मेहता** 8वीं
श्री जी पब्लिक सी.सै. स्कूल
नाथद्वारा, राजसमंद, राजस्थान

हम लोग भी हैं। हम अपने काम-धंधों में इतना उलझ गए हैं कि हमें फुर्सत ही नहीं है यह जानने की कि हमारा बच्चा कहाँ जा रहा है, क्या कर रहा है, कोई परवाह नहीं। बस बच्चों की माँगें पूरी करना ही अपनी जिम्मेदारी समझ बैठे हैं। अगर आज केंद्र एवं राज्य सरकार मिलकर इस नशाखोरी के खिलाफ सख्त कदम उठाने के साथ पूर्ण रूप से प्रतिबंध लगा दें तो एक स्वच्छ राष्ट्र के निर्माण में बहुत बड़ा योगदान होगा।

हमारा देश दुनिया में एकमात्र धर्म निरपेक्ष देश है। यहाँ पर सभी धर्म के लोग रहते हैं। यहाँ की भौगोलिक परिस्थिति विभिन्नताओं से भरी हुई है। फिर भी अनेकता में एकता का संदेश होता है। यहाँ पर लोकतंत्र है। यह देश हर व्यक्ति को पूर्ण रूप से स्वतंत्रता का उपयोग करते हुए अपनी संस्कृति की पालना करते हुए, जीने का संदेश देता है। यहाँ का संविधान बहुत ही लचीला है। इसकी इसी कमजोरी के कारण यहाँ पर बहुत सारे आपराधिक तत्त्वों का जन्म हो गया है।

यहाँ पर भ्रष्टाचार भी बहुत बड़ा मुद्दा है। भ्रष्टाचार राजतंत्र पर भी पूरी तरह से हावी हो गया है। भ्रष्टाचार के कारण ही यहाँ पर नौकरशाही तथा अफसरशाही बहुत हावी हो गई है। सरकार चलाने वाले को भी देश की चिंता नहीं है। यहाँ पर अपराधी को सजा मिलने में वर्षों लग जाते हैं। अपराधों का ग्राफ भी बढ़ता जा रहा है। अतः इस देश को, जो भगवान महावीर, भगवान राम, गौतम बुद्ध जैसों की धरती होने का गर्व है, इसलिए उसको एक अच्छा देश बनाने के लिए हम तीन महत्त्वपूर्ण विषयों पर पूर्ण रूप से ध्यान देकर देश को स्वर्गनुमा बना सकने की पूरी कोशिश कर सकते हैं।

यह तीन विषय हैं सद्‌भावना, नैतिकता और नशामुक्ति। इन तीन विषयों पर ध्यान देते हुए हम देश को एक नई दिशा दिलाने में पूर्ण रूप से सहयोग प्रदान कर सकते हैं। अगर हमारे देश की जनता थोड़ी जागरूक हो जाए तो इस देश को एक अच्छा राष्ट्र बनने में ज्यादा समय नहीं लगेगा।

सद्‌भावना : किसी भी राष्ट्र को एक अच्छा राष्ट्र बनाने के लिए 'सद्‌भावना' रूपी मंत्र का सभी नागरिकों को जाप करना सिखाना होगा। देश के अंदर विभिन्न धर्मों के धर्म गुरु गाँव-गाँव, शहर-शहर जाकर लोगों को सद्‌भावना रूपी मंत्र के बारे में जानकारी मुहैया कराते हैं। वे सभी वर्गों के लोगों को आपस में मिल-जुलकर रहने का संदेश देते हैं। देशहित के बारे में विभिन्न तरह के उपदेश जनता को देते हैं।

'सद्‌भावना' एक ऐसी चीज है जो विभिन्न धर्मों के लोगों को आपस में एक धागे में पिरोकर रहने का संदेश देती है। सरकार की तरफ से भी विभिन्न तरह के आयोजन रखकर देश हित के बारे में जनता से रू-ब-रू होना चाहिए। सभी लोग आपस में मिल-जुलकर काम करेंगे, सभी घरों के प्रति सद्‌भावना रखेंगे और देशहित के बारे में सभी कुछ करने को तैयार रहेंगे तो एक सशक्त राष्ट्र के निर्माण को कोई नहीं रोक सकता।

स्कूलों में भी सद्‌भावना के प्रति बच्चों में जागरूकता लाने के प्रयास करने होंगे। अगर शुरू से ही बच्चों में अच्छे संस्कार डालने के प्रयास होंगे तो उनका जीवन एक अच्छी दिशा की ओर जाएगा और राष्ट्र को भी एक नई दिशा मिलेगी। भारतवर्ष में बहुत सारे ऐसे संप्रदाय भी हैं जो उनके लोगों को कट्टरपंथी होने का एहसास कराते हैं। इससे देश में सांप्रदायिकता को बढ़ावा मिलता है।

बहुत सारे राजनीतिक दल भी इसका सहारा लेकर अपनी राजनीति की रोटियाँ सेक रहे हैं। राजनेता अपने वोट के खातिर पूरे देश को जाति आधार पर बाँटने में लगे हुए हैं। राजनेता धर्म के नाम पर वोट माँगकर जनता को गुमराह करने पर लगे हुए हैं। देश में जातीय आधार पर आरक्षण आजादी के समय केवल नीचे की जातियों को थोड़ा ऊपर उठाने के लिए चालू किया था। आरक्षण भी केवल दस साल के लिए ही शुरू किया था, लेकिन इन

नेताओं ने वोट के खातिर आज दिन तक इसको लागू कर रखा है। यह आरक्षण देश की जनता के लिए नुकसानदायक है। अव्वल बच्चे नौकरी से रह जाते हैं तो अभी इन नेताओं में 'सद्‌भावना' लाने के लिए देश की जनता को पूरे प्रयास करने होंगे। अगर जनता इसके प्रति जागरूक हो जाती हो तो एक अच्छे देश की गिनती दुनिया में बढ़ जाएगी।

पूरे देश में स्कूलों के अंदर भी बच्चों में देश के प्रति संपूर्ण की भावना जगाने के लिए सद्‌भावना रूपी मंत्र बहुत कारगर सिद्ध होगा। बच्चों को अपने माँ-बाप एवं गुरु के प्रति आदर एवं सम्मान की भावना के लिए संस्कारी बनाना होगा। जिस देश के बच्चे अगर संस्कारी हो जाएँगे तो वहाँ पर किसी भी तरह का अपराध भविष्य में नहीं होगा और वह देश एक संस्कारी देश कहलाएगा।

अच्छे राष्ट्र के निर्माण में नैतिकता का बहुत बड़ा योगदान रहता है। राष्ट्र में रहने वाला हर व्यक्ति चाहे वह व्यापारी हो, नौकरी-पेशा हो या समाजसेवी हो, सभी को नीति के साथ चलना होगा ताकि देश उत्तरोत्तर बढ़ता रहे। यहाँ पर संतों के द्वारा नैतिकता के बारे में देश में जगह-जगह प्रवचन होते हैं। लोगों को नैतिकता पर चलने का पाठ पढ़ाया जाता है। नीति पर चलने वाला व्यक्ति ही आगे जाकर अच्छा इंसान बन सकता है तथा राष्ट्र निर्माण में योगदान दे सकता है।

सब पर दया करना, कभी झूठ नहीं बोलना, बड़ों का आदर करना, दुर्बलों को तंग न करना, चोरी न करना, हत्या जैसा कार्य न करना, सच बोलना, सबको अपने समान समझते हुए उनसे प्रेम करना, सबकी मदद करना, किसी की बुराई न करना आदि कार्य नैतिक शिक्षा या नैतिक मूल्य कहलाते हैं। सरकारी नुमाइंदों को भी नैतिकता का पाठ पढ़ाना चाहिए क्योंकि भ्रष्टाचार पर लगाम लगाने के लिए बाध्य करना होगा।

सरकारी आदमी ही बहुत ज्यादा भ्रष्टाचार फैलाने वाले होते हैं। संवैधानिक प्रक्रिया भारत की बहुत लचीली होने के कारण सरकारी आदमी पर अंकुश लगाना बड़ी टेढ़ी खीर है। एक बच्चे को बहुत पहले ही घरवालों द्वारा नैतिक मूल्यों से अवगत करा दिया जाता है। जैसे-जैसे उसकी शिक्षा का

स्तर बढ़ता जाता है, उसके मूल्यों में विस्तार होना आवश्यक हो जाता है। यह मूल्य उसे सिखाते हैं कि उसे समाज में बड़ों के साथ, अपने मित्रों के साथ व अन्य लोगों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए। विद्यालयों में किताबों में वर्णित कहानियों और महत्त्वपूर्ण घटनाओं के द्वारा उसके मूल्यों को सँवारा व निखारा जाता है।

यदि एक देश का विद्यार्थी नैतिक मूल्यों से रहित होगा तो उस देश का कभी विकास नहीं हो सकता। लेकिन विडंबना यह है कि नैतिक मूल्य हमारे जीवन से धुँधले होते जा रहे हैं। हमारी शिक्षा प्रणाली से नैतिक मूल्यों का क्षरण हो रहा है। क्योंकि इनमें नैतिक शिक्षा का अभाव है। लोग अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए किसी भी हद तक गिर जाते हैं। यह इस बात का संकेत है कि समाज की स्थिति कितनी हद तक गिर चुकी है।

अन्य राष्ट्रों में भी नैतिकता को आधार बनाकर वहाँ शासन किया जाए तो वहाँ पर भी जनता को सुशासन का आनंद मिलेगा तथा धीरे-धीरे सभी राष्ट्र उत्तरोत्तर आगे की ओर बढ़ेंगे और एक दिन पूरा विश्व एक अच्छे राष्ट्र के रूप में नजर आने लगेगा। नैतिकता का आरंभ मनुष्य के बाल्यकाल से ही हो जाता है। सभी धर्म ग्रंथों का उद्देश्य रहा है कि मनुष्य के अंदर नैतिक गुणों का विकास करना ताकि वह मानवता और स्वयं को सही रास्ते पर ले जा सके। चोरी, डकैती करना, हत्याएँ करना, धोखा-धड़ी करना, जालसाजी करना, बेईमानी करना, झूठ बोलना, दूसरों और बड़ों का अनादर करना, गंदी आदतों को बढ़ावा देना नैतिक मूल्यों में आई कमी का परिणाम है।

यहाँ पर भगवान महावीर ने अहिंसा, नैतिकता, भाईचारा और मानवता के साथ जीवन जीने का संदेश दिया है। अतः भगवान महावीर, गौतम बुद्ध, श्रीराम भगवान के इस देश को नीति पर चलकर ही आगे बढ़ाया जा सकता है।

सरकार 'नैतिकता' को आधार बनाकर अपना काम काँच की तरह साफ-सुथरा करने लग जाए तो सरकारी तंत्र पर पूरी तरह से नकेल कसी जा सकती है। इसलिए हमें नैतिक शिक्षा के मूल्य को पहचानना चाहिए और अपने जीवन में अपनाना चाहिए।

नशामुक्ति : किसी भी राष्ट्र की सबसे बड़ी कमजोरी वहाँ पर फैली नशाखोरी है। विश्व में शायद ही ऐसा कोई देश होगा जो इस बीमारी से वंचित होगा। नशाखोरी से पूरा समाज खोखला होता नजर आ रहा है। अगर समाज खोखला हो जाएगा तो एक अच्छे राष्ट्र की कल्पना भी नहीं कर सकते।

भारत में भी नशाखोरी का ग्राफ बहुत बढ़ गया है। यहाँ पर सरकार की भी दोहरी नीति रहती है। एक तरफ तो सरकार शराब, गाँजा, भाँग आदि बहुत तरह के नशीले पदार्थ का लाइसेंस देकर जनता के बीच में यह नशीले पदार्थ बेचे जाते हैं। दूसरी ओर हर साल नशीले पदार्थ से मिलने वाली आमदनी का लक्ष्य बढ़ाया जाता है।

सरकार को अपनी 'रेवेन्यु' की चिंता रहती है। दूसरी तरफ सरकार करोड़ों रुपये खर्च कर नशा नहीं करने का संदेश समाचार-पत्र एवं टीवी पर देती है। सरकार अगर नशीले पदार्थों पर प्रतिबंध लगा दे तो नशामुक्ति अभियान तेजी से आगे बढ़ेगा। धीरे-धीरे नशाखोरी कम होती जाएगी। नशामुक्त भारत बनाने के लिए जनता को भी जागरूक होना पड़ेगा। सरकार भी दिखावे के लिए बहुत सारे निर्णय 'नशामुक्ति अभियान' के अंतर्गत लेती है। जैसे रात को आठ बजे के बाद शराब की दुकानें नहीं खुलेंगी, नेशनल हाई-वे से पाँच सौ मीटर दूर शराब की दुकानें होंगी, सार्वजनिक स्थानों पर शराब एवं धूम्रपान करने वालों को दंडित किया जाएगा। इस प्रकार के निर्णय से सरकार का दोहरा चेहरा नजर आता है। आजकल शहर और गाँवों में पढ़ने-खेलने की उम्र में स्कूल और कॉलेज के बच्चे एवं युवा वर्ग मादक पदार्थों के बाहुपाश में जकड़ते जा रहे हैं।

इस बुराई के कुछ हद तक जिम्मेदार हम लोग भी हैं। हम अपने काम-धंधों में इतना उलझ गए हैं कि हमें फुर्सत ही नहीं है यह जानने की कि हमारा बच्चा कहाँ जा रहा है, क्या कर रहा है, कोई परवाह नहीं। बस बच्चों की माँगें पूरी करना ही अपनी जिम्मेदारी समझ बैठे हैं। अगर आज केंद्र एवं राज्य सरकार मिलकर इस नशाखोरी के खिलाफ सख्त कदम उठाने के साथ पूर्ण रूप से प्रतिबंध लगा दे तो एक स्वच्छ राष्ट्र के निर्माण में बहुत बड़ा योगदान होगा।

बहुत सारे एन.जी.ओ. इस नशाखोरी के खिलाफ काम कर रहे हैं लेकिन सरकार का साथ नहीं होने पर उनकी मेहनत ऊँट के मुँह में जीरे के समान है। अगर एक नशामुक्त देश का निर्माण करना है तो हम सबको मिलकर आंदोलन करना होगा ताकि सरकार नशा कराने वाली वस्तुओं पर पूर्णरूप से प्रतिबंध लगाने पर मजबूर हो जाए।

अतः अंत में मैं यह कहना चाहती हूँ कि हमें इन तीनों चीजों को अपने जीवन में अपनाना चाहिए जिससे हमारा देश भी दूसरे देशों की तरह विकसित बन सके और इससे हमें अपने देश पर गर्व हो। ❑

नैतिक चेतना से छंटेगा अंधकार

◈ **समदिशा कालरा** 9वीं
क्वीन्स मेरी स्कूल
तीस हजारी, दिल्ली

देश की उज्ज्वलता को बरकरार रखने के लिए सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति की अहम् भूमिका रही है जैसे आत्मा के बिना शरीर की मुक्ति संभव नहीं, उसी प्रकार इन सभी के बिना राष्ट्र का निर्माण असंभव है। देश में फैली अराजकताओं को मिटाने के लिए आवश्यक है कि हम सभी आगे बढ़कर विश्वास व प्रेम से अपने देश के लिए शुभकामना करें व सभी में प्रेम, सद्भावना, निष्ठा जैसे मूल्यों की स्थापना करें।

'जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है, वह नर नहीं, निरा पशु समान है।' उक्त पंक्तियों से राष्ट्र प्रेम की धारा प्रस्फुटित होती है। जिस व्यक्ति के हृदय में अपनी मातृभूमि के प्रति प्रेम, त्याग व बलिदान की भावना न हो वह व्यक्ति हृदय शून्य होता है। जिस देश का अन्न खाकर, जल पीकर तथा हवा में साँस लेकर हम बड़े हुए हैं, उस देश के प्रति कुछ कर्तव्य भी बन जाते हैं। जब भी हमारी मातृभूमि पर आपत्ति के काले बादल मँडराने लगते हैं तब हमारा कर्तव्य बन जाता है कि हम अपने प्राणों की बाजी लगाकर अंतिम साँस तक उसकी रक्षा करें। हमारा प्यारा देश हमें उसी प्रकार प्रिय है जिस तरह सभी को अपनी जन्मभूमि प्रिय होती है। पक्षी दिन भर घूमकर रात को अपने घोंसले में ही बसेरा करते हैं। तभी तो महाकाव्यों में भी कहा गया है कि 'जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादिपि गरीयसी'।

हमारी प्यारी मातृभूमि ही हमारी जन्मभूमि व कर्मभूमि है और यही प्रेम हमारा राष्ट्र को और उन्नत बनाने में हमारी प्रेरणा बनता है। स्वदेश प्रेम शब्द प्रेम का वह रूप है जिसमें उसके प्रति अनुराग और गौरव का भाव सदा विद्यमान रहता है। इसलिए हर देशवासी का कर्तव्य बन जाता है कि

वह अपने राष्ट्र गौरव की रक्षा करे और उसके विकास में यथाशक्ति योगदान दे। यदि मनुष्य ने जन्म तो लिया परंतु उसमें सद्‌भावना व नैतिकता जैसे गुण न हों तो उसका जीवन निरर्थक माना जाता है, उसे पशु के समान कहा गया है।

आज का युग कम्प्यूटर, इंटरनेट का युग है जिसमें हर कार्य बड़ी ही तेजी से संपन्न हो जाते हैं परंतु सद्‌भावना (सभी के प्रति एक प्रेम वाली भावना) मानो गायब होती जा रही है और इसी को जागृत करने के लिए इंसानों को एक सच्ची आवाज दी जाती है जो उनकी आत्मा को झंझोड़ सके और उनमें मानवीयता के गुण स्थापित हों।

हमारा राष्ट्र, हमारी संस्कृति की अपनी एक अलग विशेषता है जिसमें समन्वय भावना छिपी हुई है। अनेक देवी-देवताओं का पूजन, अनेक धार्मिक स्थलों का स्थापन इसी देश में उन्नत हुआ है। यहाँ पर सभी धर्म अपना-अपना अस्तित्व रखकर विकसित हुए। अनेक धर्मों के लोग, चाहे वह हिंदू हों, सिक्ख हों या मुस्लिम हों, सभी को एक समान अधिकार दिए गए हैं। यहीं से सद्‌भावना की शुरुआत होती है। जैसे रक्त तो सभी के देह में एक जैसा है, धर्म अथवा मजहब बदल लेने से उसके रंग पर अंतर नहीं आता, उसी प्रकार हमारी मानवता सभी के एक समान देखने की प्रवृत्ति ही हमारे राष्ट्र निर्माण में हमारी सहयोगी बनती है। आज सभी देशों में होड़ लगी है एक-दूसरे से आगे निकलने की परंतु यदि हम इन सभी कार्यों के साथ-साथ प्यार, सद्‌भावना व मानवीयता जैसे गुणों को उजागर करेंगे तो हमारा देश उस ऊँचाई को प्राप्त कर सकेगा जो वह कल्पना भी नहीं कर पाता है।

आज के वर्तमान दौर में नागरिकों, विशेषकर विद्यार्थियों में भी नशे का अंधा अनुकरण होने लगा है परंतु इन सभी चीजों से परे हटकर अब उन्हें यह समझाना होगा कि यह सभी उनके स्वास्थ्य के लिए तो अहित कर रहा है, राष्ट्र के निर्माण में भी बाधा डाल रहा है। आज का विद्यार्थी ही कल का हमारा नेता व राष्ट्रपति होगा। यदि वही अपनी मंजिल से भटका होगा तो इस देश का क्या होगा, इसलिए हमें अपने घर-परिवार, देश, राष्ट्र को नशामुक्त करना होगा, तभी हम सही रूपों में अपने-अपने देश के सच्चे

नागरिक कहलाएँगे। हमारा देश सांस्कृतिक एकता की एकात्मकता का प्रमाण है। मानव की जन्मजात उच्छृंखल प्रवृत्तियों का परिचायक है, व्यक्ति व राष्ट्र की उन्नति का सोपान है, विश्व के विशाल प्रांगण में व्यक्ति की पहचान का प्रतीक है। हमारा देश विभेदों का समुद्र है शायद इसलिए इसे उपमहाद्वीप माना जाता है। यहाँ ढाई कोस पर बोली बदलती है। अनेक भाषाओं के साथ परिधान की विविधता के भी इंद्रधनुषी दर्शन होते हैं।

पर्व हमारे देश की आधारशिला है। इसी सद्‌भावना, नैतिकता व एकता के कारण ही भारतीय संस्कृति काल के अनेक थपेड़े खाकर भी आज अपने आदि स्वरूप में जीवित है। देश की एकता व अखंडता को स्थापित करने के लिए हम सभी का यह कर्तव्य बन जाता है कि हम सभी मिल-जुलकर देश में सद्‌भावना व नैतिकता को स्थापित करें, तभी हम अपनी मंजिल के पास पहुँच सकते हैं और उसके लिए हमें सभी से एकजुट होकर प्रेम करना होगा।

हमारा प्यार भारत अनेकता में एकता की मिसाल स्थापित किए हुए है। मानो कई देश, प्रांत इसी में समाहित हो गए हैं। यह वह प्रेम का रेशमी धागा है जो अनेक फूलों के संकलन से सुशोभित हुआ है। इसी प्रेम व प्यार के कारण ही हम सभी अपना अस्तित्व स्थापित कर सके हैं। हमारी नैतिक चेतना इसी भाव में हितकर होनी चाहिए कि देश में फैले सभी दुराचार, भ्रष्टाचार, अंधविश्वास, अविश्वास, नशा जैसे संदेह के बादल छँट जाएँ व लोगों में आपस में परस्पर प्रेम बना रहे और हम वैज्ञानिक युग में जैसे तपते जीवन को शांति प्राप्त हो।

देश की उज्ज्वलता को बरकरार रखने के लिए सद्‌भावना, नैतिकता व नशामुक्ति की अहम् भूमिका रही है क्योंकि जैसे आत्मा के बिना शरीर की मुक्ति संभव नहीं, उसी प्रकार इन सभी के बिना राष्ट्र का निर्माण होना असंभव है। देश में फैली अराजकताओं को मिटाने के लिए आवश्यक है कि हम सभी आगे बढ़कर विश्वास व प्रेम से अपने देश के लिए शुभकामना करें व सभी में प्रेम, सद्‌भावना, निष्ठा जैसे मूल्यों की स्थापना करें, तभी हम अपनी मातृभूमि को एक सफल राष्ट्र की संज्ञा दे पाएँगे। ❑

विकास हेतु भाईचारा जरूरी

राष्ट्र का नागरिक सद्भावना, नैतिक गुणों एवं नशामुक्ति से युक्त हो तो वह मिल-जुलकर निस्वार्थ भाव से शांतिपूर्ण वातावरण एवं परस्पर प्रेम के कारण अपना पूरा ध्यान विकास हेतु देता है। इस कार्य में समाज में उसे पूरा सहयोग मिलता है। आंतरिक कलह न होने से ऐसा देश द्रुत गति से विकास करता है और अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच जाता है।

◈ **शेख महबूबी मीरा** 9वीं
आर.बी.टी. विद्यालय
एस.पी. मुखर्जी रोड
डोंबिवली (पूर्व), ठाणे, महाराष्ट्र

राष्ट्र वह अमूर्त रूप है जिसके निर्माण में व्यक्ति व समाज के बहुआयामी क्रियाशीलता का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। देश के नागरिकों के आचार-व्यवहार, नैतिकता, लगनशीलता, परिश्रम, शिक्षा के तद्नुकूल ही राष्ट्र का उत्थान या पतन होता है। राष्ट्र का निर्माण वहाँ के नागरिकों पर निर्भर करता है। जिस देश के नागरिक जितने शिक्षित, मानवीय विचारधारा से युक्त, परस्पर प्रेम करने वाले एवं नशामुक्त रहेंगे, वह देश उतना ही विकास करेगा, साथ ही वहाँ शांति एवं समृद्धि का विकास होगा।

राष्ट्र का निर्माण व्यक्ति और समाज के चरित्र पर निर्भर करता है। सद्भावना एक मानवीय गुण है, यह व्यक्ति को एक-दूसरे के उत्थान में प्रेरणा ही नहीं देता वरन् प्रोत्साहन देता है। यह गुण मनुष्य को परस्पर प्रतिद्वंद्विता से मुक्ति दिला सबको आगे बढ़ने में सहयोग करता है। जिस देश के नागरिक परस्पर ईर्ष्या और द्वेष से मुक्त हों, सबके प्रति अच्छी भावना रखते हों, उस समाज में कोई भी व्यक्ति किसी के विकास को देखकर दुःखी नहीं होता अपितु प्रसन्न होता है और यथाशक्ति सहयोग करता है।

समाज में जब ऐसे पारस्परिक प्रेम की भावना का विकास होता है तो वहाँ

आपसी कलह, झगड़े और कार्यों में अवरोध उत्पन्न करने में कोई अपनी शक्ति का प्रयोग न कर सब अपने विकास पर ध्यान केंद्रित करते हैं जिससे राष्ट्र का अबाध गति से विकास होता है। अपने जीवन को और समाज के जीवन को आगे ले जाने एवं सुखी बनाने के लिए मनुष्य को जिन सामाजिक, व्यावहारिक, आचारिक, धार्मिक तथा राजनीतिक व नियमों की आवश्यकता पड़ती है उन नियमों को ही नैतिकता कहा जाता है।

नैतिकता में ईमानदारी, सत्य पालन, सहानुभूति, परोपकार, आत्मत्याग, समय पालन, सदाचार, शिष्टाचार, विनम्रता, साहस, अनुशासन, आत्मनिर्भरता, आत्म-संयम, समाजसेवा, सहयोग, क्षमादान, उदारता आदि गुणों का समायोजन होता है। इन गुणों को मनुष्य अपने जीवन में ग्रहण करता है और जीवन-पर्यंत इनका पालन करता है। समाज और देश के निर्माण में महत्ती भूमिका निभाता है।

नैतिकता के मानवीय एवं दैविक तत्त्वों में सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, संतोष, स्वाध्याय, तप, ईश्वर प्राणिधान हैं। ये नैतिकता के महाव्रत हैं जिनके पालन से मनुष्य महान बनता है। नैतिकता हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में बड़ा महत्त्व रखती है। नैतिकता पर आचरण किए बिना जीवन का विकास नहीं हो सकता।

जिस देश के व्यक्तियों का व्यक्तित्व विकसित रहता है, उस देश के व्यक्ति कर्तव्यपरायण एवं राष्ट्रभक्त भी होते हैं। जिस देश की जनता सुविकसित एवं राष्ट्रभक्त होती है वह देश शक्तिशाली होता है। वहाँ की जनता तन-मन-धन से राष्ट्र की सहायता करती है और राष्ट्रहित में हर प्रकार का त्याग करने के लिए तैयार रहती है। ऐसे देश की ओर कोई आँख उठाकर नहीं देख सकता। जिस देश के लोग स्वार्थी होते हैं वहाँ अनैतिकता का नंगा नाच देखने को मिलता है। वहाँ भ्रष्टाचार का बोलबाला रहता है। वहाँ लोग समय पड़ने पर एकजुट होकर शत्रु का सामना नहीं कर पाते और शीघ्र ही धराशायी होकर परतंत्रता की बेड़ी में जकड़े जाते हैं।

मनुष्य में जीवन और गति के साथ विवेक होता है जो प्रकृति के अन्य प्राणियों से इसे अलग करता है। मानव अपनी बुद्धि के बल पर राष्ट्र के

विकास के शीर्ष पर पहुँचता है लेकिन जब मनुष्य विभिन्न प्रकार के नशीले व्यसन में आसक्त हो जाता है तो उसका विवेक कार्य करना बंद कर देता है। बुद्धिमान से बुद्धिमान प्राणि मादक पदार्थों के सेवन से निस्तेज और विवेकहीन हो जाता है। किसी भी राष्ट्र के पतन में वहाँ के नागरिकों का मादक पदार्थों का सेवन भी है।

सद्‌भावना, नैतिकता और नशामुक्त शक्ति और समाज में परस्पर अनन्य प्रेम व सहयोग की भावना होती है। संकीर्ण विचारधारा का इस समाज में स्थान नहीं होता। लोगों में स्वार्थ की भावना नहीं होती। ऐसा समाज 'सर्वे भवंतु सुखिनः, सर्वे संतु निरामया' की सहिष्णु भावना से प्रेरित होता है जिसके बलबूते पर एक समृद्ध एवं सशक्त राष्ट्र का निर्माण होता है।

राष्ट्र का नागरिक सद्‌भावना, नैतिक गुणों एवं नशामुक्ति से युक्त हो तो वह मिल-जुलकर निस्वार्थ भाव से शांतिपूर्ण वातावरण एवं परस्पर प्रेम के कारण अपना पूरा ध्यान विकास हेतु देता है। इस कार्य में समाज में उसे पूरा सहयोग मिलता है। आंतरिक कलह न होने से ऐसा देश द्रुत गति से विकास करता है और अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच जाता है।

देश के विकास हेतु नागरिकों में आपसी भाईचारा एवं आपसी सद्‌भावना की आवश्यकता होती है। नैतिक गुणों के अनुपालन से समाज सुदृढ़ एवं संगठित होता है। मुट्ठी की तरह परस्पर जुड़े होने से अतिवादी या शत्रु देश हमारी शक्ति से भय खाते हैं। समाज निर्द्वंद्व अमन-चैन से अपना जीवन-यापन करता है।

सद्‌भावना, नैतिकता और नशामुक्त समाज मानसिक, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से अंतरसंबंधित होते हैं। ऐसा समाज सभी प्रकार के भेदभाव से मुक्त होता है। फलतः अटूट पारस्परिक सद्‌भावना के कारण उसमें एकात्मता की भावना का विकास होता है जो राष्ट्र की उन्नति में 'मील का पत्थर' साबित होता है। इस प्रकार विभिन्न मानवीय गुणों से युक्त, सबके प्रति मन में अच्छी भावना रखने वाले नागरिकों से युक्त समाज ही एक विकसित राष्ट्र का निर्माण करने में सक्षम है। ❑

राष्ट्रीयता पर संकट के बादल

◈ **बोरोले विवेक एम.** 8वीं
प्राणलाल हीरालाल
बचकानीवाला विद्या मंदिर
सूरत, गुजरात

अनेक कारणों से आज हमारी राष्ट्रीयता के सामने वस्तुतः अस्तित्व का संकट मँडरा रहा है। भीतरी और बाहरी कई प्रकार की शक्तियाँ और अराजक तत्त्व हमारी एकता को खंडित कर राष्ट्रीयता को भी विभाजित कर देना चाहते हैं। हमें उनसे पूरी तरह सावधान रहना है। ऐसे लोग कई बार धर्म का नाम लेते हैं, कई बार जाति या वर्ग-विशेष का और कई बार प्रांतीयता की संकीर्ण भावनाओं को उभारने की चेष्टा किया करते हैं।

राष्ट्र और राष्ट्रीयता पूर्ण रूप से परस्पर संबंद्ध हैं। किसी विशेष भू-भाग पर रहने वाले ऐसे लोग राष्ट्र कहलाते हैं, जिनके सुख-दुःख, आशा-विश्वास, रीति-रिवाज और परंपराएँ, उत्सव-त्योहार और भाषा आदि सब कुछ साँझा हुआ करता है। उनके धार्मिक विश्वास और सांप्रदायिक मान्यताएँ अलग हो सकती हैं, पर सभ्यता-संस्कृति की चेतना बड़ी सूक्ष्मता के साथ परस्पर जुड़ी हुई या फिर एक ही हुआ करती है। राष्ट्र और संबद्ध प्रत्येक जन का आपस में गहरा संबंध होता है। राष्ट्र एक व्यापक भावनात्मक सत्ता का नाम है। वह मानव-प्राणियों के अस्तित्व के कारण ही अपना सूक्ष्म या अमूर्त स्वरूपाकार ग्रहण किया करता है। राष्ट्र-जन भी उसी के कारण ही अपनेपन में सुरक्षित रहा करते हैं। अतः जब हम मानव-प्राणियों की बात कहते हैं तो पुरुष के साथ नारी का अस्तित्व स्वतः ही साकार हो उठता है।

देश और राष्ट्र में सूक्ष्म अंतर रेखांकित किया जाता है। यद्यपि सामान्य स्तर पर दोनों एक मान लिए गए हैं। 'राष्ट्र' उस सूक्ष्म और व्यापक भावना का नाम है जो किसी विशेष भू-भाग पर बसे देश और वासियों की अनेकता में एकता बनाए रखने में समर्थ हुआ करती है। लेकिन यह तभी संभव हुआ

करती है जब देश में रहने वाले राष्ट्रजन जागरूक, समझदार, सहनशील और उदार हृदय वाले हों। यह बात कभी भी नहीं भूलनी चाहिए कि देश रहेगा, राष्ट्र रहेगा, तभी हमारा अस्तित्व रह पाएगा। अस्तित्व रहेगा तभी हमारे धर्म, जाति, समाज और वर्ग का हित भी रह सकता है। उसके लिए भावना के स्तर पर एकत्व या एकता ही भावना पहली एवं अनिवार्य शर्त है।

हमारा देश भारत सभी स्तरों पर विविधताओं वाला देश है। स्वयं प्रकृति ने ही इसे अनेक प्रकार की विविधताएँ प्रदान कर रखी हैं। भारत देश की भूमि पर कहीं तो मीलों तक मैदान हैं और कहीं घने जंगल, कहीं हरी-भरी और बर्फानी पर्वतमालाएँ हैं तो कहीं लंबे-चौड़े रेगिस्तान। अनेक कारणों से आज हमारी राष्ट्रीयता के सामने वस्तुतः अस्तित्व का संकट मँडरा रहा है। भीतरी और बाहरी कई प्रकार की शक्तियाँ और अराजक तत्त्व हमारी एकता को खंडित कर राष्ट्रीयता को भी विभाजित कर देना चाहते हैं। हमें उनसे पूरी तरह सावधान रहना है। ऐसे लोग कई बार धर्म का नाम लेते हैं, कई बार जाति या वर्ग-विशेष का और कई बार प्रांतीयता की संकीर्ण भावनाओं को उभारने की चेष्टा किया करते हैं।

रूप कोई भी हो, यदि हम भटक जाते हैं तो खंडित एक ही वस्तु के होने का खतरा रहता है, वह वस्तु है हमारी पवित्र और महान राष्ट्रीयता, हमारी राष्ट्रीय मानवीयता और उससे प्राप्त ऊर्जस्विता। हमने उसे धर्म, जाति, वर्ग, संप्रदाय, प्रांत आदि किसी के नाम पर भी खंडित या चुकने नहीं होने देना है। अखंडता ही हमारी शक्ति है, हमारी आन और पहचान है।

याद रहे, आज का विश्व जिन विघटनकारी प्रवृत्तियों के दौर से गुजर रहा है, निहित स्वार्थी तत्त्व अपने स्वार्थ-सीमा-विस्तार के लिए भारत जैसे सभी दृष्टियों से शक्तिशाली होकर उभर रहे देशों को विनष्ट कर देने, पिछड़ा हुआ बना देने की ताक में हमेशा रहा करते हैं। ऐसे लोगों के प्रयत्नों, चालों से हमें सावधान रहना है। उनका मुँह तोड़ उत्तर देना है। मुँह तोड़ उत्तर देने का एक ही कारगर तरीका है और वह है हमारी सुदृढ़ राष्ट्रीय एकता। सद्भावना, नशामुक्ति से हम हर मूल्य पर उनकी कूट नीतियों का कारगर उत्तर दे सकते हैं। ❑

नशे से रहें दूर तो प्रगति होगी भरपूर

◈ **श्रेया गुप्ता** 8वीं
राजा राममोहन राय पब्लिक स्कूल
सैक्टर 8, रोहिणी, दिल्ली

नैतिकता से तात्पर्य ऐसे नियमों के पालन से है जिनसे समाज के सभी वर्गों का पोषण हो तथा समाज अपना विकास करे। ऐसे बहुत से नियम हो सकते हैं जिनके द्वारा किसी भी समाज की नीतियाँ निर्धारित हो सकें। उदाहरणतः महिलाओं, वृद्धों व बच्चों के प्रति सम्मान करना, सहायता करना व उनकी रक्षा करना।

किसी भी भू-खंड तथा उसमें रहने वाले व्यक्तियों के समूह मात्र से किसी राष्ट्र की कल्पना भी संभव नहीं है। अतः राष्ट्र कैसे बनता है, इसके मूल तत्त्वों के ज्ञान की आवश्यकता है। हालाँकि राष्ट्र के आवश्यक तत्त्व सर्वप्रथम एक भौगोलिक सीमाएँ होती हैं जिसके अंदर व्याप्त सभी जीव-जंतु, वनस्पतियाँ, प्राकृतिक संपदाओं के साथ-साथ वहाँ के निवासी या वहाँ के व्यक्ति जो एक समाज का निर्माण करते हैं। ऐसी परिस्थिति के साथ-साथ उस समाज के लक्ष्य, सिद्धांत, विचारधारा व विकासशीलता एक राष्ट्र का निर्माण करती है।

मनुष्य भिन्न-भिन्न विचारधाराओं के होते हैं, उनके गुण भी समान नहीं होते तथा प्रत्येक व्यक्ति की एक अपनी पहचान होती है। उदाहरणतयाः किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके रंग-रूप, कद-काठी आदि से और उसके व्यक्तिगत गुण जैसे अधिक बोलने वाला, चालाक, ईमानदार परिश्रमी आदि गुणों से भी की जाती है।

इसी प्रकार किसी भी समाज की पहचान होती है व प्रत्येक समाज के गुण होते हैं जो उसमें रहने वाले व्यक्तियों के द्वारा ही प्रकट होते हैं। अतः किसी भी समाज की पहचान का होना भी किसी एक व्यक्ति की पहचान से पृथक

नहीं होता है। यह कहना कदापि उचित नहीं हो सकता कि व्यक्तियों के समूह को समाज कहते हैं।

समाज के लिए मनुष्यों का होना आवश्यक है जो किसी भौगोलिक सीमाओं के भीतर प्राकृतिक संपदाओं के साथ किसी भी राष्ट्र के शरीर का निर्माण करते हैं, नियमों व कानूनों की आवश्यकता है और समाज के लिए उसके धर्म का होना भी आवश्यक है।

धर्म का सही अर्थ है धारण, रक्षण व पोषण। अतः हम कह सकते हैं ऐसे नियम जिनसे किसी भी समाज का निर्माण हो, उनका पोषण हो व उनका रक्षण हो। अतः राष्ट्र को परिभाषित करने के लिए यह उचित होगा ऐसा समाज जो आपस में प्रेम व सद्भावना से निर्मित होकर किसी विशेष भू-खंड पर अपने विशिष्ट गुण व धर्म के साथ सभी की रक्षा व विकास करे।

किसी भी राष्ट्र के निर्माण के लिए वहाँ पर रहने वाले समाज के व्यक्तियों की भावना अच्छी होनी चाहिए, आपस में प्रेम की भावना के साथ ऐसी प्रवृत्ति का निर्माण करना चाहिए जिससे हम किसी भी व्यक्ति को अपने स्वार्थ के लिए नुकसान न पहुँचाएँ। हमें किसी की भी भावनाओं को आहत नहीं करना चाहिए। सभी को मिल-जुलकर एक सशक्त समाज का निर्माण करना चाहिए।

नैतिकता से तात्पर्य ऐसे नियमों के पालन से है जिनसे समाज के सभी वर्गों का पोषण हो तथा समाज अपना विकास करे। ऐसे बहुत से नियम हो सकते हैं जिनके द्वारा किसी भी समाज की नीतियाँ निर्धारित हो सकें। उदाहरणतः महिलाओं, वृद्धों व बच्चों के प्रति सम्मान करना, सहायता करना व उनकी रक्षा करना। हमें अपने परिवार के उत्तरदायित्व के साथ-साथ सामाजिक उत्तरदायित्व का भी ध्यान रखना होगा। हमें समाज के विकास के लिए वस्तुओं व प्राकृतिक स्रोतों का उपभोग करना पड़ता है। इसके बारे में भी हमें सोचना होगा कि हम विकास करते-करते कितने प्राकृतिक स्रोतों वन्य प्राणियों व संपदाओं का खनन करते हुए कहीं उन्हें नष्ट तो नहीं कर रहे। प्रकृति के प्रति हमारे अंदर उसकी रक्षा करने की प्रवृत्ति बढ़े ऐसे प्रयासों के साथ वातावरण को प्रदूषण से बचाना, यह भी हमारी एक नैतिक जिम्मेदारी है।

किसी राष्ट्र के निर्माण के लिए एक स्वस्थ व विवेकशील समाज की आवश्यकता होती है। यदि किसी समाज के नागरिक किसी भी नशीली वस्तु का सेवन करेंगे तो उनकी बुद्धि नष्ट होगी तथा बुद्धि नष्ट होने से समाज का विवेक समाप्त हो जाएगा। तब किसी भी व्यक्ति के लिए उचित व अनुचित के बीच का मतभेद करने की क्षमता समाप्त हो जाती है, जिसके कारण समाज में भिन्न-भिन्न प्रकार के अपराधों व विकृतियों का जन्म होता है।

अपराधों की संख्या में बृद्धि होने के कारण समाज के अंदर एक असुरक्षा का भाव उत्पन्न होता है जिसके फलस्वरूप उस समाज की सद्भावना के साथ-साथ उसकी गरिमा का भी पतन हो जाता है। अतः राष्ट्र के विकास के लिए व उसके निर्माण के लिए उसके समाज के भीतर व्याप्त नशाखोरी की आदतों को समाप्त करना अत्यंत आवश्यक है।

यदि समाज नशामुक्त होगा तभी राष्ट्र के लिए सही नीतियों का निर्माण उस विवेकशील समाज के द्वारा ही संभव है। बुद्धिमान, विवेकशील व नशामुक्त समाज ही किसी राष्ट्र की सद्भावनाओं को पोषित करते हुए अपनी नैतिकता का रक्षण करने के साथ-साथ राष्ट्र के विकास के लिए सुलभ, सही व सुदृढ़ आर्थिक व सामाजिक नीतियों का निर्माण कर एक राष्ट्र का निर्माण करता है। ❑

युवाओं के अंदर अनैतिकता के चलते समाज पतन की नई गहराइयाँ नाप रहा है। बड़े पंडित, प्रख्यात विद्वान ज्ञान की बघार लगाते हैं, चिंता जताते हैं और घर चले जाते हैं। इस महान समस्या को फैलाने वाले कोई नहीं अपितु हमारे बड़े ही हैं। इन सभी समस्याओं को देखकर पता चलता है जो अपने आपको संभाल नहीं सकते वे क्या देश को संभालेंगे। अतः उन्हें उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

बच्चों को संस्कृति का बोध कराएँ

◈ **यशवंति प्रजापत** 10वीं
श्रीमती त्रिवेणी देवी धानुका बालिका
माध्यमिक आदर्श विद्या मंदिर
रतनगढ़, चुरू, राजस्थान

भारत देश में सद्भावना तथा नैतिकता का अत्यंत महत्त्व रहा है। देश में सद्गुणों का ही सम्मान होता है, अवगुणों का नहीं। सद्भावना का अर्थ है अच्छे विचार। देश में अच्छे विचारों के होने के कारण देश प्रगति करता है। विचारों से ही व्यक्ति की समाज तथा देश में पहचान बनती है। नैतिकता का अर्थ है शिष्टाचार। महापुरुषों के जीवन से दया, करुणा, प्रेम, अनुशासन, परोपकार, स्वधर्म, कर्तव्य, स्व संस्कृति, सेवा, साहस, सद्गुण, स्वदेश के प्रति सक्रिय निष्ठा तथा आदर-सत्कार आदि गुणों से मानव तथा देश विकास संभव है।

अपने पूर्वजों द्वारा स्थापित आदर्श, सदाचार, संस्कृति का बोध हमारे लिए आवश्यक है। उत्तम आचरण का दैनिक जीवन में उपयोग ही व्यवहार है। सदाचार को हमें उन्नतिशील बनाए रखना है। सद्गुणों से ही मनुष्य श्रेष्ठ बनता है। जो सदाचार से विमुख है, वह श्रेष्ठ कदापि नहीं हो सकता। सद्गुण 'शिष्टता' का वाचक है, और शिष्टता का अर्थ है संस्कारों का अभ्यास। शिष्ट बनने के लिए दुर्गुणों से बचना चाहिए तथा सद्गुणों को ग्रहण करना चाहिए। इससे मानव जीवन का उचित मूल्यांकन संभव है। यदि

हम सदाचार को नहीं समझ पाते हैं तो कभी जीवन में उचित व्यवहार नहीं अपना सकते। नशामुक्ति का अर्थ है 'मादक द्रव्यों से दूर रहना' अर्थात् नशे से मुक्त व्यक्ति देश के निर्माण तथा प्रगति में सहायक होता है।

सद्भावना, नैतिकता तथा नशामुक्ति की अत्यंत आवश्यकता है। क्योंकि देश का प्रत्येक व्यक्ति सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति आदि गुणों को अपनाकर देश में अना नाम उच्च कर सकता है। महापुरुषों ने अपने अच्छे व्यवहार, अच्छे विचार तथा नशे से मुक्त रहकर अपनी प्रतिष्ठा तथा अपने नाम को समाज तथा देश में उच्च स्थान पर पहुँचा दिया। यदि कोई व्यक्ति नशे से मुक्त रहेगा तो वह अपना मन कार्य में लगा सकेगा तथा उसकी स्मरण शक्ति अच्छी रहती है। वह व्यक्ति देश के नुकसान, लाभ, बुरा तथा अच्छा सोच सकता है।

अपने देश को विकासशील से विकसित देश बनाने में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। आज देश में सद्भाव, देशवासियों को मिल-जुलकर रहने की परम आवश्यकता है। यदि हम प्रेम तथा सद्भाव से रहें तो कितना अच्छा है। जब भारत पर विदेशी शत्रुओं का आक्रमण हुआ तो सारे देश में एकता की लहरें उठ गईं। आज इसी एकता की लहर की कमी प्रतीत होती है। आज इस एकता की लहर की अत्यंत आवश्यकता है। विदेशी आज भी इस देश को अपने अधिकार में लेना चाहते हैं तो भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में अनेकता में एकता का स्वर गूँजता है। उसकी रक्षा के लिए एकता की महत्ती आवश्यकता है।

कुछ ही समय पहले लोग सद्भावना, नैतिकता तथा नशामुक्ति से युक्त थे। वे लोग हमेशा एक-दूसरे की सहायता के लिए तत्पर रहते थे। उनकी स्मरण शक्ति भी बहुत अच्छी थी। हमारे पूर्वज अपनी संस्कृति तथा सदाचार का बोध कराया करते थे। वे सिखाते थे कि सभी के साथ सद्व्यवहार कैसे किया जाता है। वे एक व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते थे परंतु आज इस देश में अत्यधिक बदलाव आ गया है। आज सभी अपनी संस्कृति, गुणों को भूल रहे हैं। नैतिक मूल्यों तथा संस्कारों में कमी होती जा रही है। मनुष्य में स्वार्थ बढ़ता जा रहा है। आज हमारे सामने एक

और बड़ी समस्या उत्पन्न हो गई है युवाओं के नशे का शिकार होना। कल के होने वाले देश के जाबांज कर्णधार हैं आज वही सबसे ज्यादा नशे के शिकार हैं। जिनको देश की उन्नति में अपनी ऊर्जा लगानी चाहिए थी, वो आज अपनी अनमोल, शारीरिक व मानसिक ऊर्जा चोरी, लूटपाट, डकैती तथा हत्याएँ जैसी सामाजिक कुरीतियों में नष्ट कर रहे हैं।

नैतिकता को अपनाने से व्यक्ति में स्वधर्म, स्व संस्कृति, स्वदेश की प्रति निष्ठा एवं ज्ञानयुक्त परोपकार, आदर-सत्कार आदि सद्‌गुणों का विकास होता है। व्यक्ति में बड़ों का आदर करना, देश के प्रति प्रेम तथा रिश्तों की अहमियत आदि आते हैं। इससे व्यक्ति की समाज में प्रतिष्ठा बढ़ती है। देश में सम्मान बढ़ता है तथा व्यक्ति के नशे से मुक्त रहने पर वह अपने परिवार, समाज तथा देश के प्रति अपना कर्तव्य निभाता है।

किसी व्यक्ति का किसी व्यक्ति द्वारा अपमान करने पर, ऐसा व्यक्ति जो सद्‌भावना युक्त, नैतिकता युक्त तथा नशे से मुक्त हो, वह इसका बहिष्कार कर सकता है। किसी व्यक्ति के दुखों में उसकी सहायता कर तथा समाज में अच्छे विचारों से लोगों के मन में अच्छा स्थान प्राप्त कर लेगा। देश के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देगा। लोग व्यक्ति के आचार, शिष्टाचार, व्यवहार से प्रसन्न होकर दुःख में उस व्यक्ति की सहायता करेंगे। मानव के हृदय में संपूर्ण विश्व की पहचान का प्रतीक है नैतिकता।

देश के विकास में युवा वर्ग का अत्यंत योगदान रहा है। उन्हीं के द्वारा सुमार्ग पर चलने के कारण देश के भविष्य में प्रगति होती है। युवा वर्ग नशे से मुक्त रहने पर देश में नुकसान तथा फायदे के बारे में अधिक सोच सकेंगे। उनके नशे से मुक्त रहने के कारण देश में नई-नई योजनाएँ विकसित होंगी। शिक्षा के लिए अनेक नई-नई योजनाओं, नए-नए आविष्कारों, शिक्षा के प्रचार-प्रसार से देश विकासशील से विकसित होगा। लोग निःस्वार्थ भाव से देश में सहयोग करेंगे। यदि इसी के विपरीत युवा वर्ग नशे से युक्त हो तो देश प्रगति की बजाय अवनति पर आ जाएगा।

युवाओं के अंदर अनैतिकता के चलते समाज पतन की नई गहराइयाँ नाप रहा है। बड़े पंडित, प्रख्यात विद्वान ज्ञान की बघार लगाते हैं, चिंता जताते

हैं और घर चले जाते हैं। इस महान समस्या को फैलाने वाले कोई नहीं अपितु हमारे बड़े ही हैं। इन सभी समस्याओं को देखकर पता चलता है जो अपने आपको संभाल नहीं सकते वे क्या देश को संभालेंगे। अतः उन्हें उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

आदर्श, सदाचार, संस्कृति का बोध करने के लिए आवश्यक है बच्चों को हमें शुरुआत से शिष्टाचार, सभ्यता, अनुशासन, दया, प्रेम, करुणा तथा ईमानदारी जैसे सद्‌गुणों को सिखाना चाहिए। क्योंकि उनका मन कोरे कागज की तरह होता है। उस कागज पर सद्‌भावना, नैतिकता के मूल्यों और अच्छी आदतों को लिखना सिखाना चाहिए।

माता-पिता बच्चों को मोबाइल तथा लेपटॉप से दूर रखें। अब युवाओं को दोष देने के बजाय बड़े और कुछ सार्थक कदम उठाएँ। ज्यादा से ज्यादा समय माता-पिता को बच्चों के साथ व्यतीत करना चाहिए। ❑

नैतिकता है देश का आईना

आज नैतिक मूल्यों के अभाव में परिवार टूट रहे हैं, अपने स्वयं के बच्चे, पत्नी के अलावा अन्य सदस्यों पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। पहले नैतिक मूल्यों के कारण संयुक्त परिवार में सभी परिवार के सदस्य इकट्ठे रहते थे। यदि जीवन में उच्च आदर्शों, नैतिक मूल्यों को महत्त्व दिया जाए तो परिवार से लेकर समाज एवं समाज से लेकर राष्ट्र हर क्षेत्र में चहुँमुखी विकास कर सकता है।

◈ **सुवाली अरोड़ा** 9वीं
बाल बाड़ी पब्लिक स्कूल
मोदी नगर, उत्तर प्रदेश

जिस प्रकार शब्द से अर्थ को और अर्थ से शब्द को तथा शरीर से प्राण को और प्राण से शरीर को अलग नहीं किया जा सकता, उसी प्रकार हम अपने आपको भी अपने राष्ट्र से अलग नहीं कर सकते। हमारा राष्ट्र निर्माण तभी संभव है जब देश में विकास और समृद्धि का वातावरण और राष्ट्र निर्माण में अहम् भूमिका हो। देश के नागरिकों को आपसी भाईचारे के साथ सद्भावनापूर्वक रहना चाहिए ताकि देश में शांति का वातावरण बने। क्योंकि कोई भी देश भीतरी शांति के बिना विकसित और समृद्ध नहीं बन सकता।

जिस प्रकार हम लोग परिवार से मिल-जुलकर तथा प्यार और शांति से रहते हैं, उसी प्रकार सभी देशवासियों को भी मिल-जुलकर और सद्भावना से रहना चाहिए, तभी हमारा देश संपन्न और सुरक्षित बन सकता है। अगर देश में सद्भावना और मेल-मिलाप नहीं होगा तो पड़ोसी देश इस बात का फायदा उठा लेते हैं।

समाज में नैतिकता का होना भी अत्यंत आवश्यक है। नैतिकता ही समाज और देश का दर्पण है। समाज जितना अधिक नैतिक होगा, देश भी उतना

ही शक्तिशाली और खुशहाल होगा। राष्ट्र निर्माण में जनता की अहम् भूमिका होती है। देश के नागरिक ही अपने श्रम और सेवा से देश का विकास करते हैं। इसलिए लोगों का स्वस्थ होना महत्त्वपूर्ण है।

आज मंत्री से लेकर आई.ए.एस. अधिकारी भ्रष्टाचार में डूबे हुए हैं। मंत्रालयों में अरबों रुपये के घोटाले होते हैं। कारण स्पष्ट है कि भौतिकता की चकाचौंध में नैतिक मूल्यों में गिरावट आती जा रही है।

लालबहादुर शास्त्री, अटल जी ऐसे नेता थे जो नैतिक मूल्यों को महत्त्व देते थे, आज अंतर्रात्मा की आवाज न सुनकर केवल भौतिक सुविधाओं की ओर ध्यान दिया जा रहा है। नैतिकता और सदाचार ही मनुष्य का असली आभूषण है।

आज नैतिक मूल्यों के अभाव में परिवार टूट रहे हैं, अपने स्वयं के बच्चे, पत्नी के अलावा अन्य सदस्यों पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। पहले नैतिक मूल्यों के कारण संयुक्त परिवार में सभी परिवार के सदस्य इकट्ठे रहते थे। यदि जीवन में उच्च आदर्शों, नैतिक मूल्यों को महत्त्व दिया जाए तो परिवार से लेकर समाज एवं समाज से लेकर राष्ट्र हर क्षेत्र में चहुँमुखी विकास कर सकता है। आज न्यायालय भी नैतिक मूल्यों के अभाव में सही निर्णय देने में असमर्थ होते जा रहे हैं।

आज के बच्चे ही कल के भविष्य हैं, अतः शिक्षा के साथ-साथ नैतिक मूल्यों को जीवन में स्थान दें, हम हर कार्य अपनी अंतर्रात्मा एवं उच्च आदर्शों को ध्यान में रखकर करें। ईमानदारी, सत्यता, विवेक, करुणा, प्रलोभनों से दूर रहना, पवित्रता ये नैतिक मूल्यों के आदर्श तत्त्व हैं। इन आदर्श तत्त्वों से जीवन में आध्यात्मिकता का जन्म होता है। एक आदर्श परिवार या देश के संचालन हेतु परिवार के सभी सदस्यों या देश के सभी नागरिकों में शिष्टाचार, सदाचार, अनुशासन, मर्यादा, परिश्रम की आवश्यकता है।

यदि जीवन में शिष्टाचार, सदाचार, अनुशासन, मर्यादा है तो परिवार और देश में शांति रहेगी। हमें अपने व्यक्तिगत जीवन में स्थान देना होगा तभी हम एक आदर्श परिवार का सृजन कर सकते हैं, एक आदर्श और खुशहाल राष्ट्र का स्वप्न साकार कर सकते हैं।

आजकल देखा जा रहा है कि हमारे राष्ट्र की सबसे बड़ी समस्या नशा है। नशा एक अभिशाप है। नशामुक्ति के द्वारा कई लोगों के स्वास्थ्य में सुधार किया जा सकता है। आने वाली पीढ़ी भी नशामुक्ति से स्वस्थ समाज के रूप में राष्ट्र का निर्माण कर सकती है। कई प्रकार के नशे युवा पीढ़ी को अपने जाल में फँसा रहे हैं। यह राष्ट्र के लिए घातक है। नशामुक्ति से युवाओं को एक नई विकास की राह दिखाई जा सकती है।

किसी भी तरह के नशे से मुक्ति के लिए सिर्फ एक ही उपाय है, वह है संयम। वैसे तो संयम कई समस्याओं का समाधान है लेकिन जहाँ तक नशामुक्ति का सवाल है, संयम से बेहतर और दूसरा विकल्प नहीं है। हाँ सेल्फ मोटिवेशन भी नशामुक्ति में बेहद कारगर है या फिर किसी को मोटिवेट करके या किसी के द्वारा मोटीवेट होके भी नशे से मुक्त हुआ जा सकता है।

व्यसनों से मुक्ति पाने के लिए नशा करने वाले साथियों से अधिक से अधिक दूर रहें। मेहमानों का स्वागत नशे से न करें। घर में या जेब में बीड़ी-सिगरेट नहीं रखनी चाहिए। सबसे खास बात इस धीमे जहर के सेवन न करने के प्रति खुद को मोटिवेट करें।

अतः सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति राष्ट्र निर्माण में महत्त्वपूर्ण कारक हैं। यदि हम इन्हें अपने जीवन में अपनाएँ तो हमारा देश बहुत उन्नति करेगा। ❑

नशामुक्त अभियान पर हो विशेष ध्यान

नशा करने वाले व्यक्ति का घर-परिवार और मौहल्ला परेशान रहता है। ऐसे व्यक्ति के बच्चों का सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता और वे देश के निर्माण में समुचित योगदान नहीं दे पाते। नशा करने वाला व्यक्ति अपनी पूरी क्षमता का उपयोग खुशीपूर्वक नहीं कर पाता और देश के निर्माण का भागीदार बनने से वंचित रह जाता है।

◈ **शशांक शाही** 7वीं
माउंट कार्मेल विद्यालय
आनंद निकेतन, धौला कुआँ
दिल्ली

किसी भी विकासशील और गौरवशाली देश के निर्माण में सद्भावना, नैतिकता एवं नशामुक्ति की अहम् भूमिका होती है। सद्भावना देश को प्रगतिशील बनाने की सबसे महत्त्वपूर्ण कड़ी है। यह हमें आपस में भाईचारे के साथ रहना सिखाती है। इससे हमें एक-दूसरे की मदद करने की प्रेरणा मिलती है। इससे समाज में संतुलन बढ़ता है और देश के हर क्षेत्र का सामरिक विकास होता है और देश प्रगतिशील बनता है।

हम सबको यह कोशिश करनी चाहिए कि हम सब सद्भावना के साथ रहें, एक-दूसरे की सहायता करें और समाज का सर्वांगीण विकास करें ताकि हम एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण कर सकें। सद्भावना के जागृत होने से देश के जाति-पाति और धर्म समुदाय जैसे भेदभाव दूर हो जाते हैं और एक संगठित राष्ट्र का निर्माण होता है।

ठीक इसी तरह नैतिकता का भी देश के निर्माण में अहम् योगदान होता है। हर इंसान की जिंदगी में नैतिकता का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जिस देश के नागरिक अपने नैतिक मूल्यों को समझते हैं और उनका आदर करते हैं वे हमेशा खुशहाल रहते हैं और एक शक्तिशाली देश के निर्माण का हिस्सा

बनते हैं। किसी भी देश के मजबूत निर्माण के लिए नैतिक सिद्धांतों को अपने जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान देते हैं तो हमारी कार्यक्षमता बढ़ती है और हम एक शक्तिशाली देश के निर्माण की ओर अग्रसर होते हैं।

जिस देश के नागरिक अपने नैतिक मूल्यों का आदर करते हों उस देश को शिखर पर जाने से कोई नहीं रोक सकता। सद्‌भावना और नैतिकता देश निर्माण के बहुत बड़े अस्त्र हैं। सद्‌भावना और नैतिकता की तरह ही नशामुक्ति भी देश निर्माण के लिए बहुत जरूरी है। किसी भी देश का मजबूत निर्माण तभी हो सकता है जब वह नशामुक्त हो। जिस देश के नागरिक नशा करते हैं वे अपने देश के समय और पैसे की बर्बादी तो करते ही हैं, साथ में समाज में अशांति फैलाते हैं। वे अपने बच्चों के चरित्र निर्माण के लिए भरपूर समय नहीं दे पाते।

नशा करने वाले व्यक्ति का घर-परिवार और मौहल्ला परेशान रहता है। ऐसे व्यक्ति के बच्चों का सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता और वे देश के निर्माण में समुचित योगदान नहीं दे पाते। नशा करने वाला व्यक्ति अपनी पूरी क्षमता का उपयोग खुशीपूर्वक नहीं कर पाता और देश के निर्माण का भागीदार बनने से वंचित रह जाता है। नशा, समाज में कुरीतियाँ फैलाता है और दिन-प्रतिदिन नए लोगों को व्यसन में संलिप्त करते जाता है और देश की युवा शक्ति का सही उपयोग नहीं हो पाता जिससे देश का विकास अवरुद्ध होता है।

नशा करने वाले लोग देश के विकास के बहुत बड़े बाधक होते हैं। हमें देश को नशामुक्त बनाने के लिए कारगर कदम उठाने होंगे। देश में जो सामाजिक संस्थाएँ और नशा उन्मूलन केंद्र काम कर रहे हैं उनका हम सबको सहयोग करना चाहिए। हमें देश के हर गली और हर मौहल्ले में नशामुक्ति अभियान चलाना चाहिए। हम अपने देश को नशामुक्त बनाकर एक स्वस्थ एवं विकसित राष्ट्र बना सकते हैं। हर देश को अपने सशक्त निर्माण के लिए अपने देश के नागरिकों को सद्‌भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के लिए जागरूक करना पड़ेगा।

हमें इन सबको अपनी शिक्षा प्रणाली की मुख्य धारा से जोड़ना होगा। देश

के हर बच्चे को सद्‌भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के बारे में बताना होगा ताकि वे देश के अच्छे नागरिक बन सकें और एक गौरवशाली और शक्तिशाली देश का निर्माण कर सकें।

देश के हर नागरिक की यह जिम्मेदारी है कि वह अपने देश के मजबूत एवं स्थायी निर्माण के लिए समाज के हर कोने में सद्‌भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के प्रति लोगों को जागृत करे, तभी हम एक सशक्त, विकसित, स्वस्थ एवं गौरवशाली राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। ❑

राष्ट्र निर्माण के लिए आवश्यक है कि हमारे देश के प्रत्येक नागरिक के विचार अच्छे हों। उसका व्यवहार सुसंस्कृत हो। व्यक्ति का चरित्र अच्छा हो। किसी प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री ने कहा था कि 'धन नष्ट हुआ तो कुछ नष्ट नहीं हुआ। स्वास्थ्य नष्ट हुआ तो कुछ नष्ट हुआ परंतु यदि चरित्र नष्ट हुआ तो सब कुछ नष्ट हो गया।' हमें चाहिए कि हम अपने अंदर अध्ययन, योग्यता के अनुसार नैतिक मूल्यों का विकास करें।

सद्भावना का विकास एक चुनौती

◈ **गर्वित सिंह** 8वीं
स्कॉलर्स एकेडमिक होम
दड़ायल नयाबाद, हल्द्वानी
नैनीताल

वर्तमान युग भौतिक सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण है। हमारे सामने अनेक प्रकार की सुख-सुविधाओं के फलस्वरूप हमारे व्यवहार, सोच व विचारों में अत्यधिक परिवर्तन हुआ है। व्यक्ति की सुख-सुविधाओं में वृद्धि होने के फलस्वरूप आज वह भौतिक सुख-सुविधाओं के साथ-साथ अनेक प्रकार की गलत आदतों को अपनाने लगा है। आज भारत के अधिकांश नवयुवकों में सद्भावना, नैतिकता की कमी है। देश के विकास के लिए आवश्यक है हमारे समाज में जो अनेक बुराइयाँ हैं, उन्हें दूर किया जाए।

राष्ट्र निर्माण : राष्ट्रीयता मन की वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति की सर्वोपरि कर्तव्यनिष्ठा राष्ट्र के प्रति अनुभव की जाती है, राष्ट्रीयता की भावना लोगों को आपसी भेदभाव भुलाकर राष्ट्रीय हित में मिलकर रहने की प्रेरणा देती है। राष्ट्रीयता में व्यक्ति भौगोलिक, जातीय, भाषायी, धार्मिक एवं ऐतिहासिक एकता के प्रति व्यक्तिगत रूप से कर्तव्यनिष्ठ रहता हुआ आध्यात्मिक कला की भाँति इसमें अलौकिक समर्पण रखता है।

सद्भावना की भूमिका : राष्ट्र निर्माण के लिए आवश्यक है कि हमारे देश के प्रत्येक नागरिक के विचार अच्छे होने चाहिए। आज समाज में अच्छे

विचारों व अच्छी सोच का अभाव है। व्यक्ति केवल अपने हित की बात सोचता है। उसे अपने अधिकारों का ज्ञान है परंतु अपने कर्तव्यों का ज्ञान नहीं है जो देश की प्रगति में बाधक है। देश के प्रत्येक नागरिक की भावना व विचार अच्छे होने चाहिए।

आज सद्भावना के अभाव में हमारे समाज में धर्म, संप्रदाय, क्षेत्रवाद व जाति के आधार पर लड़ाई-झगड़े हो रहे हैं। इस कारण देश व समाज की अत्यधिक क्षति होती है व देश का विकास प्रभावित होता है। हमारा समाज टुकड़ों में विभाजित हो रहा है। आज सद्भावना का विकास करना एक चुनौती है। हम सभी को अने अंदर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना का विकास करना होगा।

हम अपने व्यक्तिगत स्वार्थों को त्याग कर देश के विकास के लिए सोचें। हम सब आपस में मिलकर रहें तथा देश की प्रगति में अपना अधिक से अधिक योगदान दें। जिस दिन हम आपसी भेदभावों व स्वार्थों को भुलाकर पूरे देश को अपना परिवार समझ लेंगे, उस दिन हमारे देश को वास्तविक आजादी प्राप्त हो जाएगी।

नैतिकता : राष्ट्र के विकास में नैतिक विचारों का होना आवश्यक है। आज समाज में नैतिक मूल्यों का लगातार ह्रास हो रहा है। अपराध बढ़ रहे हैं जिसका प्रमुख कारण नैतिक मूल्यों का अभाव है। अत्यधिक व्यस्त व भाग-दौड़ के जीवन में नवयुवक केवल शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, संस्कार नहीं जिसके फलस्वरूप आज समाज में चोरी, डकैती, हत्या व अन्य घटनाएँ बढ़ने लगी हैं। नैतिकता के अभाव में हमारा समाज लगातार पतन की ओर अग्रसर हो रहा है।

राष्ट्र निर्माण के लिए आवश्यक है कि हमारे देश के प्रत्येक नागरिक के विचार अच्छे हों। उसका व्यवहार सुसंस्कृत हो। व्यक्ति का चरित्र अच्छा हो। किसी प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री ने कहा था कि 'धन नष्ट हुआ तो कुछ नष्ट नहीं हुआ। स्वास्थ्य नष्ट हुआ तो कुछ नष्ट हुआ परंतु यदि चरित्र नष्ट हुआ तो सब कुछ नष्ट हो गया।' हमें चाहिए कि हम अपने अंदर अध्ययन, योग्यता के अनुसार नैतिक मूल्यों का विकास करें। हमारा आचरण अच्छा हो। हमारे

अंदर बुरे विचार उत्पन्न न हों। हम प्रत्येक नागरिक से वह व्यवहार करें जैसा कि हम दूसरों से अपने लिए चाहते हैं।

नशामुक्ति : आज हमारे देश के सम्मुख आतंकवाद के समान एक चुनौती है युवाओं में नशे की लत। आज के नवयुवक नशे की लत के कारण खोखले होते जा रहे हैं जो हमारे देश के सामने कठिन समस्या है। हजारों नवयुवक नशे की लत के कारण असमय ही काल का ग्रास बन रहे हैं। नशे के कारण युवाओं में अनेक बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं। नशे की लत के कारण युवा वर्ग अपनी नशे की लत को पूरा करने के लिए अनेक प्रकार के अपराधों को करता है तथा नशा करने के बाद भी अपराध करता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि राष्ट्र के विकास व संपन्नता हेतु देश के नागरिकों का सर्वगुण संपन्न होना आवश्यक है। व्यक्तियों में शिक्षा के साथ-साथ संस्कार होना भी आवश्यक है। राष्ट्र के निर्माण में आवश्यक है कि देश के नागरिक स्वस्थ, शिक्षित, प्रशिक्षित, संस्कारवान हों। हमें अपने व्यक्तित्व का विकास करते हुए प्रत्येक बुराइयों से स्वयं को दूर करने का प्रयास करना चाहिए। ❑

एकता है, फिर भी दूरियाँ क्यों?

◈ **अनु** 10वीं
भिवानी पब्लिक स्कूल
भिवानी, हरियाणा

लोगों में एकता है बखूबी परंतु फिर भी कहीं न कहीं मिल जाती हैं वही काली, घिनौनी, कठोर सच्चाइयाँ। मिल जाती हैं कहीं-कहीं लोगों में दूरियाँ, नहीं मिलते हैं ख्यालात और हो जाती हैं खड़ी बड़ी दीवार। बँट जाते हैं लोग और बन जाते हैं एकल परिवार। एक भाई बन जाता है दूसरे का दुश्मन, हो जाते हैं लोग एक-दूसरे के खून के प्यासे, बह जाती हैं खून की नदियाँ।

'बूँद-बूँद से सागर भरता है। यह कहावत राष्ट्र निर्माण में भी पूरी तरह चरितार्थ होती है। एक-एक बूँद पूरे सागर का निर्माण करती है, उसी तरह राष्ट्र का निर्माण देश के जन-जन के कंधों पर निर्भर है। अतः नींव के रूप में उनका मजबूत होना आवश्यक है। लोगों को अपने दिल में विभिन्न आदर्शों व मूल्यों को अपनाना होगा। यह कार्य केवल शारीरिक व मानसिक रूप से ही नहीं पूरा होगा अपितु इसके लिए आवश्यक है आत्मीयता की मजबूती। इस मजबूती के बिंदु हैं सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति इत्यादि। हमें इन्हें अपने जीवन का आधार बनाना होगा।

राष्ट्र निर्माण में आवश्यक तत्त्व : राजनीतिक रूप से किसी देश या राष्ट्र का निर्माण करने के लिए निश्चित सीमाएँ निर्धारित कर दी जाती हैं लेकिन आध्यात्मिक या वैचारिक आधार पर किसी राष्ट्र का निर्माण वहाँ होता है जहाँ पर भाईचारा, सद्भावना, आत्मीयता आदि का भाव देखने को मिलता है। विश्व के जो देश आज उन्नति के चरमोत्कर्ष पर पहुँच गए हैं उनका कारण यही मूल्य हैं।

छोटे से देश जापान का उदाहरण सामने है। द्वितीय विश्व युद्ध में सर्वनाश

होने के बावजूद इस देश ने जो आशातीत प्रगति की है, उसका श्रेय जाता है वहाँ लोगों के बीच में सद्भावना, प्रेम, एकता आदि का होना।

नैतिकता व उस पर प्रहार : आज हम अपने देश की राजनीतिक तथा सामाजिक परिस्थितियों को देखें तो स्पष्ट हो जाएगा कि आज जिस प्रकार से चारों ओर भ्रष्टाचार, बेईमानी, रिश्वतखोरी, भाई-भतीजावाद, सांप्रदायिकता तथा आलस्य आदि का बोलबाला है, उसी के कारण विश्व में हमारी छवि धूमिल हुई है। वह देश जो कभी स्वयं विश्व के लिए प्रकाश-स्तंभ था, स्वयं अँधेरे के गर्त में डूबता जा रहा है।

नैतिक मूल्यों की चर्चा केवल पुस्तकों में, भाषणों में, गोष्ठियों में या वाद-विवादों में ही की जाती है। हम अपने प्राचीन आदर्शों को भूलते जा रहे हैं जिसके कारण हम स्वयं ही अपने बल, बुद्धि और वैभव को अपने हाथों से खो बैठे हैं तथा हमारा समाज पतन के गर्त में गिरता जा रहा है। हम अपने देश में व्याप्त भ्रष्टाचार तथा अन्य समस्याओं के लिए कभी तो नेताओं पर दोषारोपण करते हैं, तो कभी पुलिस विभाग पर तो कभी अन्य अधिकारियों पर।

क्या हमने कभी सोचा है कि ये अधिकारी अथवा नेता कहाँ से आते हैं? क्या ये समाज का हिस्सा नहीं हैं? क्या ये समाज का प्रतिबिंब प्रस्तुत नहीं करते हैं? आज हमारे देश के पतन का एकमात्र कारण है जीवन-मूल्यों की रिक्तता अथवा नैतिक मूल्यों की हीनता।

यदि देश का हर व्यक्ति, हर बच्चा, हर बूढ़ा, हर स्त्री नैतिक मूल्यों को अपने जीवन में उतार लेग तो वह दिन दूर नहीं जब हमारा देश या कोई और देश जो इन मूल्यों को जीवन में उतारेगा निश्चय ही सफल होगा, उन्नति करेगा। सबसे बड़ा उपयोगी विकल्प है नन्हें बच्चों में उन सभी संस्कारों, मूल्यों की पूर्ति करना क्योंकि यही देश का भविष्य है। यही वो कच्ची मिट्टी है जो कड़ी धूप में पककर ईंट बनेगी और एक सुंदर से भवन अर्थात् देश का निर्माण करेंगे।

महान कवि निराला जी ने कहा है *'पद रज भी नहीं है, पूरा यह विश्व भार। जागो फिर एक बार'।*

सद्भावना का सिकुड़ता दायरा : सद्भावना का अर्थ होता है लोगों में एक-दूसरे के प्रति आदर व प्रेम का भाव। उनमें भाईचारा, एकता का भाव जो कि एक राष्ट्र निर्माण में अहम् भूमिका रखता है। लोगों में आपसी एकता का भाव होना आवश्यक है। इस एकता में कई खूबियाँ हैं। एकता से सारी शक्तियाँ केंद्रित होती हैं और एक शक्ति-स्रोत का जन्म होता है। जिस भी क्षेत्र में एकता होती है, वह क्षेत्र तीव्र गति से लक्ष्य प्राप्त करता है। अतः यह राष्ट्रीय एकता समाप्त नहीं होनी चाहिए।

हमारे देश में अनेक विभिन्नताएँ हैं। वे विभिन्नताएँ इतनी प्रखर हो गई हैं कि एकता समाप्त हो गई है। कहीं ग्रामीण-शहरी का, कहीं अमीर-गरीब की खाई है तो कहीं ब्राह्मण-अब्राह्मण की, इन्हीं से देश में अस्थिरता आती है और राष्ट्र कमजोर होता है। देश की किसी भी भाषा या क्षेत्र का साहित्यकार हो, वह सारे भारत की वंदना करता है।

लोगों में एकता है बखूबी परंतु फिर भी कहीं न कहीं मिल जाती हैं वही काली, घिनौनी, कठोर सच्चाइयाँ। मिल जाती हैं कहीं-कहीं लोगों में दूरियाँ, नहीं मिलते हैं खयालात और हो जाती हैं खड़ी बड़ी दीवार। बँट जाते हैं लोग और बन जाते हैं एकल परिवार। एक भाई बन जाता है दूसरे का दुश्मन, हो जाते हैं लोग एक-दूसरे के खून के प्यासे, बह जाती हैं खून की नदियाँ।

महानगरों का परिचय रेत के महल की भाँति होता है। लोग भीड़ बनाकर तमाशबीन की भाँति खड़े तो हो जाते हैं परंतु वे साथ नहीं होते। शादी-ब्याह के मौके पर वे फूलों का गुच्छा और पैसों से भरा लिफाफा तो ला सकते हैं किंतु समय नहीं दे सकते। दुख के अवसर पर भी उनकी सांत्वना बहुत उथली, हल्की और व्यर्थ होती है। तब अहसास होता है कि हमें समझने-जानने वाले हमारे अपने लोगों की क्या कीमत है। तब हम अपने साथियों में आत्मीयता ढूँढ़ते हैं। पर जो हृदय अपने माता-पिता और भाई-बहनों का अपना न हो सका वह मित्रों का अपना कैसे होगा?

आज एकल और संयुक्त परिवार की व्यवसथा में संतुलन बैठाने की आवश्यकता है। हमें आपसी समझदारी विकसित करनी होगी। लोगों को अपने मन में

एकता का भाव मजबूती से बैठाना होगा। हमें अपने रिश्तों को संजोकर रखना होगा। जब हम एक-दूसरे के साथ मिलेंगे, समझेंगे, हमारी आपस में भाईचारे की भावना मजबूती होगी तब ही देश तरक्की कर पाएगा।

नशामुक्ति : किसी विद्वान का, कथन है 'जहाँ शैतान स्वयं नहीं पहुँच सकता, वहाँ मदिरा को भेज देता है। जब मदिरा भीतर जाती है तो हमारे सारे संस्कार, विचार, सद्भाव बाहर निकल जाते हैं। मदिरा का सीधा और पहला हमला स्वयं पीने वाले पर होता है। उसकी नसें, फेफड़े, गुर्दे और अन्य अंग शिथिल होने लगते हैं।

दुर्भाग्य से हमारे देश में इसका सेवन अधिक होता है, जो हमारे देश के लिए अत्यंत शर्मनाक बात है। क्या इससे हम अपने देश का निर्माण करेंगे? क्या यह हमारी भविष्य में अपने देश को उन्नति पर ले जाने की सोच का पहला कदम है।

यदि हमें देश का भविष्य उज्ज्वल बना है तो इसे रोकना होगा। लोगों को रोकना होगा। सरकार को मदिरा बेचने वाली दुकानों पर रोक लगानी होगी। बच्चों को भी इसके प्रति जागरूक करना आवश्यक है। सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण लोगों को स्वयं इसके खिलाफ आवाज उठानी होगी। ❑

पुण्य कर्म है राष्ट्र निर्माण

◈ **प्रकृति** 8वीं
डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल
पुष्पांजलि एन्क्लेव
पीतमपुरा, दिल्ली

मानव को उचित-अनुचित का ज्ञान कराकर आदर्श नीति सम्मत आचरण की प्रेरणा देने वाली शिक्षा नैतिक शिक्षा है। जिसने नैतिक शिक्षा को जीवन में उतार लिया, उसने ईश्वर को ही हृदय में मूर्तिमान कर लिया, जिसने नैतिकता का दीपक बुझ जाने दिया, वह आचार और व्यवहार में अंधा हो गया। भारत में नैतिकता का निर्माण विद्यालयों में नैतिक शिक्षा की अनिवार्यता द्वारा ही संभव है।

माँ यदि जन्मदात्री है तो देश की धरती जीवनदात्री। अतः हमारे मन-प्राणों में अपने देश के प्रति आदर के फूल ना खिलें, पूजा के दीप ना जलें तथा राष्ट्र निर्माण में हम सहयोग ना दें तो यह अस्वाभाविक है। राष्ट्र निर्माण एक पुण्य कर्म है। राष्ट्रीय सुरक्षा, विकास, प्रगति और ख्याति के लिए किए गए कार्यों से समस्त देशवासियों की सुरक्षा और उन्नति संभव है। राष्ट्र निर्माण में सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति की बेहद अहम् भूमिका है। सद्भावना दो शब्दों से मिलकर बना है सद् अच्छा और भावना। सद्भावना का अर्थ है अच्छी मनोभावनाएँ जैसे

सत्यवादिता : सत्य दृष्टि का प्रतिबिंब है, ज्ञान की प्रतिलिपि है, आत्मा की वाणी है। सत्यवादिता के लिए केवल निष्कपट मन चाहिए। सत्य बोलने और करने में किसी का अकारण बुरा करने का उद्देश्य नहीं होना चाहिए। यह मनोभावना राष्ट्र निर्माण में अहम् भूमिका निभाती है।

स्वावलंबन : स्वावलंबन का अर्थ है अपना काम आप करना और साथ ही आत्मनिश्चय। संसार के महापुरुषों को स्वावलंबन ने ही प्रगति के शिखर पर

ला खड़ा किया। एक अंग्रेजी विचारक ने कहा है, 'पतन से भी बड़ा पतन यह है कि किसी को सबसे पहले अपने घर पर ही भरोसा ना हो।'

अनुशासन : अनुशासन जीवन की चतुर्दिक सफलता का महामंत्र है। अनुशासन कायिक एवं वैचारिक नियमों का पालन है। अनुशासित समाज ही राष्ट्रीय निर्माण में भूमिका निभाता है।

एकता : राष्ट्रीय एकता राष्ट्र के विकास, प्रगति, सुख-शांति एवं समृद्धि की परिचायक है। किसी भी राष्ट्र के विकास एवं राष्ट्र निर्माण में एकता का होना अति आवश्यक है।

परोपकार : परोपकार अर्थात् दूसरों की निःस्वार्थ भलाई। भूखों को अन्न, नंगों को वस्त्र, बीमारों को सेवा-सुश्रूषा और अज्ञों को ज्ञान देकर हम विभिन्न प्रकार से उपकार कर राष्ट्र निर्माण में योगदान दे सकते हैं।

राष्ट्र के विकास में नैतिकता का बहुत ही अमूल्य योगदान है। नीतियुक्त आचरण या व्यवहार जीवन को सरलता से सफलतापूर्वक तय करने का मार्ग है। जीवन की वेदनाओं, पीड़ाओं, कष्टों को धैर्य के साथ हँसते-हँसते सह लेने का दिव्य संदेश है। 'नीयते जीवः आनंद स्वरूपम् प्रति यया सा नीतिः। सात्त्विकी बुद्धि अर्थात् जिसके द्वारा जीव अपने तिरोहित आनंद स्वरूप को प्राप्त कर लेता है वह सात्त्विक बुद्धि ही नीति है और उसकी प्रेरणा से आचरित कर्म ही नैतिक सिद्ध होता है।

मानव को उचित-अनुचित का ज्ञान कराकर आदर्श नीति सम्मत आचरण की प्रेरणा देने वाली शिक्षा नैतिक शिक्षा है। जिसने नैतिक शिक्षा को जीवन में उतार लिया, उसने ईश्वर को ही हृदय में मूर्तिमान कर लिया, जिसने नैतिकता का दीपक बुझ जाने दिया, वह आचार और व्यवहार में अंधा हो गया। भारत में नैतिकता का निर्माण विद्यालयों में नैतिक शिक्षा की अनिवार्यता द्वारा ही संभव है।

वे पदार्थ जिनके सेवन से मानसिक विकृति उत्पन्न होती है, नशीले या मादक द्रव्य हैं। नशीली वस्तुओं पर प्रतिबंध या इनका व्यवस्थित प्रयोग नशाबंदी है। किसी प्रकार के अधिकार, प्रवृत्ति, बल आदि मनोविकार की अधिकता,

तीव्रता या प्रबलता के कारण उत्पन्न होने वाली अनियंत्रित या असंतुलित मानसिक अवस्था नशा है। जैसे जवानी का नशा, मोहब्बत का नशा या दौलत का नशा। इनको व्यवस्थित रूप देना नशामुक्ति है।

मादक द्रव्य वे हैं जिनसे मानसिक विकृति उत्पन्न होती है, जैसे शराब, अफीम, गाँजा, भाँग, चरस आदि। कुछ स्वास्थ्य विशेषज्ञ तंबाकू, चाय और बीड़ी-सिगरेट को भी इसी सूची में सम्मिलित करते हैं।

वर्तमान समय में नशामुक्ति का तात्पर्य शराब और ड्रग्स पर प्रतिबंध या उसके व्यवस्थित प्रयोग से है। सुरालयों की संख्या कम करके, देसी भट्ठियों को जड़मूल से नष्ट करके, सार्वजनिक रूप में शराब पीने पर पूर्णतः प्रतिबंध लगाकर इसके दुरुपयोग को रोका जा सकता है, इसे हतोत्साहित किया जा सकता है।

समाज में कृत्रिमता व स्वार्थी आवरण को हटाते हुए हमें चरित्र निर्माण की स्थापना और राष्ट्रहित को महत्त्व देने के लिए संघर्ष करना होगा। यदि हम सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति को बढ़ावा दें तो अवश्य ही भारत उन्नति के पथ पर होगा। ❑

सरकार ने युवा पीढ़ी को नशे की लत से मुक्ति दिलाने के लिए कई प्रयास किए हैं। रेडियो, दूरदर्शन आदि के माध्यम से इसके विरोध में प्रचार होना चाहिए ताकि युवा इसकी हानियों से सचेत हो सकें। इसका उन्मूलन सम्मिलित प्रयासों से ही संभव है। नशामुक्ति से ही राष्ट्र का उत्थान संभव है। इस प्रकार सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति किसी भी राष्ट्र के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

सद्भावना से मिलता है सुख

◈ **राघव** 8वीं
वैश्य मॉडल सी.सै. स्कूल
भिवानी, हरियाणा

धन-दौलत, सुख और वैभव नैतिकता पर खड़े हैं। चरित्र-बल का धनी व्यक्ति अपने किसी भी आचरण से पूर्व यह विचार अवश्य करता है कि उसका आचरण समाज अथवा देश के लिए अहितकर तो नहीं है। किसी भी राष्ट्र के निर्माण में सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति की भूमिका अत्यधिक होती है। यदि हम इनके एक-एक गुण पर प्रकाश डालें तो हम देखते हैं कि किसी भी राष्ट्र के विकास, निर्माण व उत्थान में ये तीनों महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

सद्भावना शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है सत्. भावना अर्थात् सच्ची व अच्छी भावना। यदि किसी राष्ट्र के लोग देश की सेवा व उन्नति के प्रति सद्भावना रखते हैं तो वह देश सदा उन्नति के पथ पर बढ़ता रहेगा। इसके लिए ईमानदारी व सच्ची लगन का होना बहुत जरूरी है। यह एक ऐसा गुण है जो कि मनुष्य को सृष्टि के अन्य प्राणियों की तुलना में श्रेष्ठता प्रदान करता है। यह वह गुण है जो मनुष्य को देवत्व प्रदान करता है।

सद्भावना मनुष्य को आत्मिक सुख व शांति प्रदान करती है। यदि हम किसी को हानि पहुँचाते हैं तो हमारा अपना सुख भी समाप्त हो जाता है व चित्त भी अशांत बना रहता है। हमारे द्वारा किए गए पर-पीड़ा के कार्य हमें दिन-रात

कचोटते रहते हैं। इसके लिए परोपकार की भावना सबसे अधिक जरूरी है। परोपकार से जहाँ व्यक्ति का उत्थान होता है वहीं सामाजिक उत्थान भी होता है। परोपकार की भावना से आज के संघर्षरत विश्व में शांति स्थापित की जा सकती है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्।' की भावना से ही सुखी एवं समृद्ध समाज की रचना की जा सकती है।

नैतिक बल वह शक्ति है जो मनुष्य की आत्मिक शक्ति विकसित करती है। चरित्रवान व्यक्तियों से ही हमारा राष्ट्र चरित्रवान बनेगा व विकसित होगा। नैतिकता मानवीय सद्वृत्तियों को उजागर करती है। छात्र-छात्राओं के नैतिक गुणों को प्रफुल्लित करना तथा इन गुणों को विकसित करना नैतिक शिक्षा से ही संभव है। नैतिकता को आचरण में स्वीकार किए बिना मनुष्य जीवन में वास्तविक सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। इसलिए नैतिकता से विद्यार्थियों में देश-भक्ति की अटूट भावना पल्लवित होती है। इससे उनमें विश्व-बंधुत्व की भावना को जागृत किया जा सकता है।

नशामुक्ति की भावना भी राष्ट्र के निर्माण में सहायक होती है। नशा चाहे कोई भी हो, हानिकारक होता है। आजकल के युवा चरस, गाँजा, अफीम, स्मैक, धूम्रपान, मदिरा तथा न जाने कितने ही प्रकार के व्यसनों में संलिप्त होकर अपना जीवन गर्त में डाल रहे हैं। नशीली दवाओं के सेवन के परिणामों को जानते हुए भी इन दवाओं का जाल देश में तेजी से फैल रहा है।

प्रायः यार-दोस्त के साथ किया गया अनुभव ही व्यसन की जड़ बन जाता है। कुछ लोग जीवन के कठिन क्षणों के दबाव और तनाव, बेरोजगारी, स्कूल-कॉलेज के जीवन में शैक्षणिक असफलता, परिवार में बिखराव, स्नेह के अभाव में नशे की दुनिया में चले जाते हैं। नशामुक्ति से राष्ट्र का निर्माण हो सकता है।

सरकार ने युवा पीढ़ी को नशे की लत से मुक्ति दिलाने के लिए कई प्रयास किए हैं। रेडियो, दूरदर्शन आदि के माध्यम से इसके विरोध में प्रचार होना चाहिए ताकि युवा इसकी हानियों से सचेत हो सकें। इसका उन्मूलन सम्मिलित प्रयासों से ही संभव है। नशामुक्ति से ही राष्ट्र का उत्थान संभव है। इस प्रकार सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति किसी भी राष्ट्र के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। ❑

नैतिकता का ह्रास चिंतनीय

महाभारत में प्रह्लाद की कथा आती है। प्रह्लाद अपने समय का बड़ा प्रतापी और दानी राजा हुआ है। उसने नैतिकता का सहारा लेकर इंद्र का राज्य ले लिया। इंद्र ने ब्राह्मण का रूप धारण करके प्रह्लाद से नैतिकता माँग ली। प्रह्लाद की नैतिकता के जाते ही धर्म, सत्य, सदाचार, बल, लक्ष्मी सब चले गए क्योंकि ये सब वहीं रहते हैं जहाँ नैतिकता हो। इससे यह साबित होता है कि नैतिकता का कितना मूल्य है? इसके बिना मनुष्य का कोई मूल्य नहीं।

◈ **योगिता बोदड़े** 9वीं
जिनवाणी भारती पब्लिक स्कूल
सेक्टर-4, द्वारका, दिल्ली

आज के इस बदलते दौर में राष्ट्र निर्माण अहम् है। हमारा देश जितना विभिन्न है, उतना ही विभिन्न प्रकार की समस्याओं से घिरा हुआ है। अतीतकाल में भारत संसार का गुरु था। वह सोने की चिड़िया के नाम से जाना जाता था परंतु अब हमारे देश में समस्याएँ अनेकानेक हैं। अब हमारा देश समस्या प्रधान देश है। आज हमारे देश की समस्याएँ हैं महँगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, अशिक्षा, दहेज प्रथा, रूढ़िवादिता, अंधविश्वास आदि।

ये राष्ट्र की कमर तोड़ रही हैं। इन समस्याओं को समाप्त करके ही देश व राष्ट्र का उत्थान संभव है। इसके लिए सभी देशवासियों को नैतिकता, सद्भावना तथा नशामुक्ति की भूमिका को समझना होगा।

नैतिकता का अर्थ है मानवीय मूल्यों का सम्मान। सारा धन-दौलत, सुख और वैभव नैतिकता पर खड़े हैं। जब तक मानवीय मूल्यों की अवहेलना की जाती रहेगी तब तक समाज के अंदर से हिंसा-वृत्ति का निराकरण नहीं हो सकता। जो राष्ट्र अपने को नैतिक गुणों से विमुख रखकर भौतिक साधनों, चाहे वे कितने ही महत्त्वपूर्ण व बहुमूल्य हों, में लिप्त है, वह आत्मा रहित शरीर के समान है।

नैतिकता नर-नारी का ही नहीं सारे समाज व राष्ट्र का ऐसा दिव्य गुण है जिससे महान से महान शक्ति का संचार होता है। इससे राष्ट्र की संस्कृति और सभ्यता महानता के शिखर पर आसीन होती है। सच बोलना, चोरी न करना, अहिंसा, दूसरों के प्रति उदारता, शिष्टता, विनम्रता, सुशीलता आदि गुण नैतिकता में आते हैं। इनसे मानव जीवन शांत और सुखी बनता है।

आज भौतिकता के युग में नैतिकता का जो ह्रास हो चुका है उसे देखकर संसार के कम ही राष्ट्र और समाज हैं, जिनमें नैतिकता का दमखम रह गया है। आश्चर्य की बात यह है कि भारत, जो नैतिकता के इस सिद्धांत का पालन करता था, वह आज इससे लुप्त हो रहा है। नैतिकता के अभाव से ही आज छात्र-जगत में अनुशासनहीनता का बोलबाला है। छात्रों द्वारा अध्यापकों के प्रति अनुचित व्यवहार, गंदी राजनीति, भ्रष्टाचार आदि कुपरिणामों का कारण भी नैतिक शिक्षा की कमी है।

महाभारत में प्रह्लाद की कथा आती है। प्रह्लाद अपने समय का बड़ा प्रतापी और दानी राजा हुआ है। उसने नैतिकता का सहारा लेकर इंद्र का राज्य ले लिया। इंद्र ने ब्राह्मण का रूप धारण करके प्रह्लाद से नैतिकता माँग ली। प्रह्लाद की नैतिकता के जाते ही धर्म, सत्य, सदाचार, बल, लक्ष्मी सब चले गए क्योंकि ये सब वहीं रहते हैं जहाँ नैतिकता हो। इससे यह साबित होता है कि नैतिकता का कितना मूल्य है? इसके बिना मनुष्य का कोई मूल्य नहीं।

सद्भावना का अर्थ है वो भावना जिससे किसी को बुरा न लगे। जिससे सबका कल्याण हो। जिन व्यक्तियों में सद्भावना हो वे सज्जन कहलाते हैं। सज्जन मनुष्य कभी किसी का बुरा नहीं सोचते और न ही किसी से कटु वचन कहते हैं। राष्ट्र शांति के लिए भाईचारे की भावना सबसे पहले जरूरी है। भाईचारे, मेल-मिलाप की भावना और परस्पर हित-चिंतन की भावना राष्ट्र शांति की दिशा में अहम् कदम है। अगर इस तरह की सद्भावना और श्रेष्ठ विचार प्राणी-प्राणी के मन में उत्पन्न हो जाए तो किसी प्रकार से राष्ट्र में अशांति और अव्यवस्था की भावना नहीं हो सकती है।

इतिहास साक्षी है कई वीर हैं जिनकी कहानियाँ आज हम पढ़ते हैं। उन्होंने

सद्भावना को सहारा बनाकर इतिहास में अपनी जगह बनाई। उनमें कई नाम हैं महावीर, गौतम बुद्ध आदि। राजा विक्रमादित्य इसका सबसे अच्छा उदाहरण है।

जो राष्ट्र सद्भावना को अपनाता है वह राष्ट्र अन्य राष्ट्रों की तुलना में अधिक मूल्यवान और श्रेष्ठतर सिद्ध होता है। सभी इससे प्रभावित और आकर्षित होते हैं। इससे जीवन में प्रगति की सीढ़ी पर चढ़ने में सहायता मिलती है।

आज के युवाओं को नशा खोखला बना रहा है। नशे के जाल में वे आधुनिकता के नाम पर फँस रहे हैं। ये नशीले पदार्थ सामाजिक वातावरण को प्रदूषित करते हैं। ये जहरीले हैं। युवा इसे जीवन जीने का आधार मानते हैं परंतु जानते नहीं हैं कि इनके माध्यम से वे जीवन को ही खो देते हैं। नशे के पीछे आज कितने नवयुवक और युवतियाँ अपना जीवन बर्बाद कर रहे हैं। इनमें शराब, ड्रग्स, गाँजा इत्यादि मादक पदार्थ हैं जिनके वे गुलाम बने हुए हैं।

बहुत से लोग इसका सेवन फैशन और शौक से करते हैं। कुछ मानसिक या पारिवारिक परेशानी के कारण तो कुछ दबाव में आकर। परंतु इस नशे के कारण परिवार बेबसी और गरीबी का जीवन जीने को विवश हैं। इसके साथ ही देश का युवा इसके पीछे स्वयं को नष्ट कर रहा है।

नशे से मुक्ति के लिए कई संस्थाओं ने अस्पताल खोल रखे हैं। परंतु इसकी गिरफ्त में आने वाला व्यक्ति यहाँ आने से पहले ही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। कई ऐसे लोग हैं जो ठोकर लगने के बाद यहाँ आते हैं। नशे से मुक्त करवाने के लिए किरण बेदी ने 'नव ज्योति संस्थान' की स्थापना की है, जहाँ नशे से मुक्त होने के लिए लोग आते हैं। अतः नशामुक्ति से समाज में शांति आती है और शांति से होता है देश का विकास। ❑

ENGLISH

Nation building is a normative concept

◈ **Ayushi Mohadikar** XII
The Emerald Heights International School
Indore, Madhya Pradesh

What country needs is educated young men, incorruptible and dedicated young men, who will take upon themselves the responsibility of doing something for the society around them. In today's world, where altruism is contrasted with egotism and selfishness, one should be benevolent and have a disposition to do good. There should reside a spark within.

Others should be referred to as how we refer to ourselves. We all are equal children before our mother and Indians just ask each one of us, in what so ever role we play in the complex drama of nation building, to do our duty with integrity, commitment and unflinching loyalty. Nation building is a normative concept that means different things to different people. To some, nation building programs are those in which dysfunctional or unstable or "failed states" or economics are given assistance in the development of governmental infrastructure, civil society, dispute resolution mechanisms, as well as economic assistance in order to increase stability.

No nation is safe unless fortified by goodwill. Goodwill in simple terms refers to a favourably disposed attitude towards someone or something. Goodwill is the only asset that competition cannot undersell or destroy. We are not leading the nation, we are not building house, rather we are just sitting under the blossoming tree! In this malevolent world, the good

are barricaded and suppressed; only the bad intentions persist. The government is turning more and more materialised. It only knows how to cleverly break our legs, hand us a crutch and say, " see, if it weren't the government, you wouldn't be able to walk". In times of domestic crises, men of goodwill and generosity should be able to unite regardless of party or politics.

We can be the heroes of our own inspiration. There should stand a bulwark of goodwill around oneself to not let these things even enter our premises of life. People should have religious tolerance within them. It comes when people allow others to think about God in ways that they may not think to be true. They tolerate religious beliefs and practice which are different from their own beliefs. We live in a country with state religion, where tolerance means that the government allows other religions to be equally dominant.

We are all humans until, race disconnects us, religion separates us, politics divide us and wealth classifies us. Religious intolerance, rather, is when a group specifically refuses to tolerate practices, persons or beliefs on religious grounds. This diversity thus, acts as a bane to our society and disputes, because of this arrested development.

Have the narcotics, and then they will have us. An alcoholic or drug addict is not just the man that tatters, knocks flat on the road after a binge. Rather, an alcoholic is one whose drinking causes continuing problems in any area of his life (such as family relationship, job, financial status or health) and who continues to drink in spite of these problems. He has developed a psychical and psychological dependence on alcohol. This is known as addiction. Once the 'JIN' in the bottle gets you, you are trapped.

A whole new ethos of human co-existence was to be developed. It should not be that when a nation would be filled

with strife, then only patriots should flourish. As argument says that when a nation is surrounded by weaponised nation, it has to equip herself. Pens and books should be the weapons to beat terrorism instead. Youth comes, but once in a lifetime.

What a country needs is educated young men, incorruptible and dedicated young men, who will take upon themselves the responsibility of doing something for the society around them. In today's world, where altruism is contrasted with egotism and selfishness, one should be benevolent and have a disposition to do good. There should reside a spark within, then one doesn't need to be pushed as his vision and dedication would automatically pull him.

Our nation is divided into states, the states being jigsaws portraying diversities. It the jigsaws would be fitted together, they would make a perfect picture! Justice and some goodwill will outlast passion and build a nation very beautiful! ◈

Addiction can be defined as a bad habit for any activity. This all happens due to surrounding environment also, the environment around us moulds our thinking. If we focus on only one thing we will surely be an addictive to that. Many people think that addiction is the process of taking drugs for sensation.

Morality highly impacts us

◈ **Tanuja Sanguri** XI
Sacred Heart Sr. Sec. School
Haldwani, Uttrakhand

The nation emphasizes the physical dimensions and boundaries of a geographical area along with a particular community of people with shared history and culture. The nation consists of cities, villages and each area where people live. So we also can say that nation is the mirror of people and of their mentality. As the people think, that group them on that way and slowly this movement becomes a resolution for the nation.

The base for the nation is the people who define the nation. If the activity and mentality of the citizens would be perfect and matured then definitely the nation will grow every time. After the freedom definitely we progressed a lot in different sectors specially in IT sector, but today there is also a major requirement in many other fields /sectors. Today all the developed countries not only progress in a single way. If we would focus on them, then we will find that all those countries are developed because every citizen of those countries works

for the nation. Here also we require such spirit in our citizen. The basic need is to understand the techniques behind the development of nation. Unfortunately in our country maximum of people think that this is the duty of some people to work for the nation to grow. They don't understand that this is a compiled movement by all.

This compiled movement should be designed with the thinking as well as activity. As we think that the major part of any of the human is his/her goodwill over his/her society. The goodwill put our level up with our self respect.

Although goodwill is the result of our thinking, it is also the result of our opinion over different issues, because it brings our image over people and after some time it becomes as our habits and activity. It also means to think for the betterment for each with non intensity of greed. This will bring the developed society of our nation.

The term morality may be defined as we treat one another, with respect to justice, other's welfare and rights. In order to know how individuals understand morality it is essential to measure their benefits, emotions, attitudes & behaviour. Morality is also defined with the culture we follow, because culture is that set of program that defines us the last one happened before us.

Morality highly impacts us as well as our nation also. As our beliefs could be strong, it would bring us more effective. The beliefs may be on each other, on supreme power or on every system made for our betterment and upliftment.

Another way to judge our morality is to justice for each and every condition. The justice system brings the best support for the national development. The justice may be on every activity either on social or in criminal activities.

Addiction can be defined as a bad habit for any activity. This

all happens due to surrounding environment also, the environment around us moulds our thinking. If we focus on only one thing we will surely be addictive to that. Many people think that addiction is the process of taking drugs for sensation but this is not enough to know about. Only way, we would keep ourselves beyond addiction is socialization for our maximum time. Often the people with spare time become addicted. As we all know, that nation is a huge group of people, so the activities of the group would directly impact the nation.

For this purpose we should try for the maximum busyness, otherwise stress may fall. And later people become addictive. Today several institutions work for de-addiction and national development program to reduce the addiction towards bad habits. Addiction of bad habits can be improved by moral behaviour of surroundings by which the nation develops more and becomes a great nation.

As we entered 21st century and there is no doubt that our nation is developing in all fields/sectors. Now, superstition among the people is removed that is most essential to remove for building of the nation. But there is also need to improve the nation to become healthy-wealthy nation by increasing goodwill, morality.

De-addiction leads to the building of nation conveniently. Goodwill, morality and de-addiction play an important role in building the nation. ◈

Morality is vitally important

◈ **Ayush Raghuwanshi** X
Demonstration Multipurpose School
Bhopal, Madhya Pradesh

It is the most important duty of the teachers. If a child misbehaves or tells a lie, people blame the parents and teachers. Children resort to lie for their personal gains. They are really clever and try to get what they want by any means. It is an unrealistic approach.

Every person does something for his nation smaller or greater. Even we also do something for our nation as we are the future of our nation. Nation wants the contribution of all people to itself. Bad persons can change the nation by their bad qualities. Children also take a great part in nation building. These good things of people made the nation famous among all countries. Good qualities came into the people's mind by thinking personality. Becoming a good person takes long time but to become a bad person it takes a few seconds. If people of the nation have good qualities then that nation becomes good. Good qualities that make our nation good are goodwill, morality and de-addiction. These qualities play a greater role in our life and for nation building. Good things make persons great and also the nation.

Goodwill is the feeling of co-operation and help-fullness. Without goodwill success cannot be achieved in nation building as nobody can exist in isolation. Goodwill is the

friendly feelings towards other people. There has to be goodwill among people, children, states and countries. Goodwill is one's wish for the best for another; for their happiness, success and well-being. It is a higher vibration and emotion, related to spiritual aspects of harmony, goodness and love.

Nothing that I can do will change the structure of the universe. Goodwill is the quality which changes a person completely. When any person comes in our country from another country, the qualities of person and children made nation pride. These qualities of people made our nation incredible. There are so many stories of goodwill quality across the country which feel nation pride. Aamir Khan and so many actors and actresses broadcast their show in which goodwill stories of people are telecast. These shows and advertisements feel pride of our nation. So every person accepts the quality of goodwill which is a big contribution for nation building and in the fight of independence.

Goodwill quality also takes greater role in freedom fighters of India. Mahatma Gandhi is one of them who had the quality of goodwill. Like Mahatma Gandhi there are so many freedom fighters which pride our nation. We also take these qualities from them.

Morality (from the latin "moralitas'-manner, character, proper behaviour") is the differentiation of intentions, decisions and actions between those that are good or right and those that are bad or wrong. Morality can be a body of standards that a person believes should be universal. Morality defines the difference between good and bad and gives the wisdom to choose the good. Morality is simply the attitude we adopt towards people whom we personally dislike.

Morality is essentially the knowledge of knowing what is right and what is wrong. Though some may not realize it, our moral

sense guides us each and every day in making decision, from thinking about how to save money to protect those who cannot protect themselves. Morality is vitally important because it directly affects the behaviour and actions of a person which help in nation building.

It is the most important duty of the teachers. If a child misbehaves or tells a lie, people blame the parents and teachers. Children resort to lie for their personal gains. They are really clever and try to get what they want by any means. It is an unrealistic approach. Moral values are required for the progress of a country otherwise the country would lose its residents and the ones in charge would be greedy and selfish creating more problems than solution. It is important to play moral values into effect when making decisions to not only get best results but feel good about them. Morality plays a greater role in becoming our nation incredible.

De-addiction is the opposite of addiction. Addiction is a term defined as a chronic relapsing disorder for people abusing substances like smoking, alcohol, rave drugs, medical drugs. It is a tendency to make one feel euphoric (well being). There are several drugs which are available in the market which are used for abuse. Addiction of drugs is very common in India and it is a major problem of our nation.

There are so many reasons for which a young person gets addicted to these harmful drugs. Curiosities, spiritual search, desire for pleasure, social communication, mental gap, lack of self-reliance are some of the reasons of addiction. The problem of drug addiction is all the more serious because the addicts are mostly young school or college going boys and girls, the future citizens of a country, on whom will depend the future or its welfare and the welfare of its people. So it is imperative to see that such young boys and girls may be no means fall victims to drug addiction. There is also solution for drug addiction.

Rehabilitation of the young drug-addicts is a major social problem. The need of raising the level of consciousness of self realization through proper education has been suggested as proper step. Those who are able to overcome their addiction can teach other young addicts. The need of forming a healthy environment where the needs of these youths can be met is equally important. The places that grow cocoa, opium etc. should be brought under vigilance. International projects should be taken to prohibit manufacturing of such harmful drugs. When these steps are taken against addiction, then we say with pride—addiction free India, incredible India. These 3 things goodwill, morality and de-addiction make our nation famous, happy, incredible, joyful, prideful, attractive around the world. ◈

Weaker sections should be developed

◈ **Gurleen Kaur** VII
Mata Gujri Public School
Greater Kailash, New Delhi

To generate sense of service, patriotism, humanity, social responsibility, love for environmental improvements, unbiased gender attitude amongst the people, tolerance and respect for values. To help in establishing special schools and centres for person with physical disabilities.

Nation Building means assisting development of governmental infrastructure, civil society, economic assistance for stability and growth.

Genuine self rules are able to make decisions about resources available, money required for funding project and development strategy, creating effective governing institutions resolving disputes through mechanisms and getting rid of corruption. Working on long term planning we must look forward in eradicating social evils prevailing in our society, by conducting awareness programmes and spreading education. Development of weaker sections and the needful. To support de-addiction and rehabilitation of addicts. To help the down-trodden as well as weaker sections of natural calamities (flood, earthquake famine etc). Provisions to provide legal aid to S.C. and S.T. weaker sections, and other needy persons and groups. To provide care, protection, education, shatter legal aid career opportunities to downtrodden, destitute, abandoned,

victimized orphans etc. To generate sense of service, patriotism, humanity, social responsibility, love for environmental improvements, unbiased gender attitude amongst the people, tolerance and respect for values. To help in establishing special schools and centres for persons with physical disabilities particularly deaf and dumb, blind, mentally impaired, victimized, lepers etc. Re-establishing old homes for the aged people by providing better living conditions undertaking road safety programmes, appointing and supervising paid staff for the organizations in suitable places in rural, hill towns etc. of the country. Promoting the studies of oriental languages and technical education to run crèches, schools, colleges and other public institutions for spread of education.

Also to bring together people of various communities by fostering goodwill, brotherhood, peace and co-operation with the aim of promoting international understanding and co-operation in conformity to principles and ideals of international organization like UN agencies within and outside the country to work closely with public bodies, corporation, private organization, literal and cultural agencies for planning, designing & management. Further to provide adequate information to individuals on national issues through networking or by own resources to help reduce the disparity in the society, to help to improve police-public relation to create awareness about quality improvements in product and services.

It helps protect national integrity by preserving national heritage properties and intellects. In corporation role of mass media by producing serials, films and documentaries for achieving aims of the society to provide healthy entertainment to the public. There should be character building steps to achieve crime free society in India. ◈

Goodwill plays a major role

◈ **Kshitij Pandey** XI
Army Public School
Mhow, Madhya Pradesh

There are only disadvantages in drinking. It affects human brain and lever which decreases the work force and potential of the individual. Our major strength gets wasted by all these activities. De-addiction leads to consciousness of the individual's mind. He gets better and then he is able to work for himself.

First of all, what is nation building? The answer do this question is simple. Nation-building is constructing a national identity using the power of the state. It is a normative concept that means different things to different people. Many people believe that nation building is evolutionary rather than revolutionary, that is, it takes a long time and is a social process that can't be jump-started from outside. The evolution of the Italian city-states into a nation, the German city states into the Zollverein customs and later a nation, the multiple languages and cultural groups in France into the nation of France, the development of China from the warring kingdoms, took a very long time, and were the result, not only of political leadership or changes in technology or economic processes but the importance of their moral values, their goodwill and the friendly feeling for each other.

Goodwill is a quality which plays a major role in nation building. Goodwill is the feeling of co-operation and helpfulness.

Without goodwill success can't be achieved in nation building as nobody can exist in isolation. There has to be goodwill among states within a country, among nations in the world so that they share resources.

Another major quality which plays valuable role in nation-building is morality. Moral values which we get from our ancestors, our cultures and our society. Simple moral values can bring a great change. Wishing everyone, being polite, being sincere and doing our own work would sound simple but these small values are the key to a successful nation. If a person starts doing his own work without anyone's help, takes care of this responsibilities than that particular individual improves a lot. And with the progress of that individual lies the progress of the nation. Being self-dependent is more important, for example if we take a person working in an MNC, simply doing his work properly and sincerely, by following every rule and regulation then that person's moral values will be embraced, the people who will see him will continue to do the same then his will add up to more people and as a result the whole country will become self dependent.

The most important factor which helps in shaping the nation is de-addiction. The citizens of the nation are the building blocks in which even if a block is defective then the whole building will fall down. De-addiction is a prerequisite to have a healthy human resource that does not abuse drugs or alcohol. Smoking, drinking etc. all comes in false habits with affect the health of a human being and if the country's health is gone, the production will decrease i.e. decrease in GDP and total loss. The country's population should be productive, both mentally and physically fit and if a person gets addicted to these things then he will loose both of these.

There are only disadvantages in drinking. It affects human brain and lever which decreases the work force and potential of the individual. Our major strength gets wasted by all these activities. De-addiction leads to consciousness of the individual's mind. He gets better and then he is able to work for himself. The money which he previously wasted is saved and leads to the welfare of his family and standards of living also increases. If we stop all these then the person who sells these items will get de-motivated and will start looking for other jobs which will be the way better than this. Not encouraging activities like these will certainly help in nation building.

If the individual realises the importance of development of his nation, his responsibilities, the needs which is necessary for him to fulfill them those days are not fare when that person will be known for starting this revolution. It is a normal human tendency that if people see others doing something they try to do the same. Change in one person will lead to the advancement of many. Goodwill, morality and de-addiction are just some of the factors which play a major role in nation building. Except these, there are also factors like the role of youth, role of women in nation's progress. If we start teaching our youth then our future will be at a place where no one could ever imagine and then the youth will transfer these moral values to the next generation.

A great personality once said, "Goodwill is that invisible force which is difficult to earn and takes years for building but once earned, its benefits can be reaped for several years & generations".

Every individual should keep this in mind. Start with ourselves, others will automatically change. It might be difficult for a person in the starting but when he will continue to show his goodwill, morality and responsibility, everything will change. These qualities will make our earth a better and peaceful to live. ◈

Goodwill is not something that we can touch or feel, so it can sometimes be difficult to calculate whether a country's reputation is worth. This is why goodwill is also an intangible asset. There has to be goodwill among states within a country, between nations in the world so that they share resources. Goodwill is categorized as a fixed asset-something that has value for an extended period.

Moral values are essential

◈ **Nishita Sudhir** VII
Bhartiya Vidya Bhavan's
V.M. Public School
Vadodara, Gujarat

Goodwill is a feeling of cooperation and helpfulness. Goodwill expresses the prudent values that any country can have beyond its assets, by way of good reputation and a solid relationship with other countries. Without goodwill, success cannot be achieved in nation building as nobody can exist in isolation. Goodwill shows the value of any country in terms of reputation. Any country that has certain reputation and status in the market, this can be measured to have a lesser or greater values, which we call goodwill. Goodwill is categorized as a fixed asset-something that has a value for an extended period.

Goodwill is not something that we can touch or feel, so it can sometimes be difficult to calculate whether a country's reputation is worth. This is why goodwill is also an intangible asset. There has to be goodwill among states within a country, between nations in the world so that they share resources. When resources are shared between centre and state or between two countries, it becomes a base for the development for both states and centre or the country itself.

Morality

Morality defines the difference between good and bad and gives the wisdom to choose the good. Morality is the differentiation of intension, decision and social actions between those that are good or bad and those that are bad or wrong. Morality is not a static concept, and with changing economies, politics and society. Morality too shifts or is manipulated to suit the time, by the power. How strange it is that something which may have been considered deeply immoral at one point in history-whether it is dancing or acting. What women wear today is considered as a normal thing or that the same thing can be considered immoral in one nation or by one community and moral in another! This shows how fickle the boundaries of morality are, that they are socially constrcuted and subjective.

Moral values are an essential part of our culture and by not adopting these moral values, we destroy our culture. A country's first impression is its culture and by neglecting moral values we neglect our culture and by neglecting our culture we neglect our country.

If we stick to our old culture by exhibiting morality, inculcating moral values to our dears and nears, then the days are not too far to see our country shining and overcoming all the hurdles to become a well developed nation.

De-addiction

Before I say something about de-addiction, let us know what is addiction? It is a term defined as chronic, relapsing disorder for people abusing substances like smoking, taking alcohol, having drugs, medical drugs. It is a tendency to make one feel euphoric (well being). The main complication of drug

abusers is over dose and intoxication producing lethality and behavioral problems both domestic and social leading to legal issues and family disruption. In India, alcohol addiction is common and de-addiction has been very successful than abuse of other substances. Alcohol and tobacco have taken the youth of this country to such an extent that, it has become an inseparable part of their life.

Ours is a country with population 102 billions and hardly there are few who have won gold medals for our country compared to other nations, who are very small in size, had less population when compared to us, but had won more medals than us. Why is it so?

We need internet, mobiles etc to keep ourselves abreast with latest issues, emergence etc. We should use these technologies for the development of ourselves and our country. Hence de-addiction is prerequisite to have a healthy human resource that does not abuse drugs or alcohol or any other forms of addiction and become a part in nation building.

To conclude, nation building is the implementation of processes that are geared towards recomposing the nation's institutions so that they can reflect the wishes, needs and aspirations of the wider society by gaining goodwill, developing morality and saying goodbye to addictions. ◈

Goodwill means good intension

◈ **Diksha Kushwaha** VIII
Bal Bhavan Public School
Mayur Vihar Ph-II, Delhi

All of the Indians need to be a little alert towards their duties. All of us, always should search for rights but is our primary concern to play our vital duties first and then, hope for a set of rights "Charity begins at home" this statement justifies that we should start with our footsteps without expecting another beginning. It's one of the main common aspects of life that until our next person is trying.

Every human has been blessed with many qualities and sculpted with many artistry. But I ask also a question. Is it really has been utilised? No, because this generation is cruel, greedy and selfish. That's why nobody wants to be true towards his nation. It's the only time in which we can nurture our values again. And, if a person is moral, de-addicted and has a goodwill then, it's a true soul which always visualises country's future to be bright.

All the people are sculpted with so much care and talent. And, if we unite together to form such a spiritual shadow which is followed by all the citizens of the country which is then, contribute in the progress of our nation. Just three elements to adapt, and this will lead to happiness and fully content of our lives. But three measures have to be synchronised with our lives and over entire future will be secured. Goodwill means good intension towards our nation, morality means full of values and morals and de-addiction means free from all

addictions. The major measures in the favour of our nourishing future. Humans are like small saplings who need a lot of care to get nourishment by birth till the end of their breath. There's nothing but only reminiscence of sweet and swift memories which are left with us after death. This phase of life needs a lot of care as it's the end of our adventurous journey.

So, to get a vivid collection of our memories it is important to be true towards ourselves. It doesn't mean that we have to follow such values forcefully by someone. This is something which should be implemented by our realization. A cause for which our mission is to accomplish our endeavour to aware the people with the evils of society such as selfishness, unmorality, addiction, etc, which affects the hormone, symphony and melody of our life. All of the Indians need to be a little alert towards their duties. All of us, always should search for rights but is our primary concern to play our vital duties first and then, hope for a set of rights. "Charity begins at home"—this statement justifies that we should start with our footsteps without expecting another beginning. It's one of the main common aspects of life that until our next person is trying. We will also take initiative to start.

I know it will feel embarrassment while having a start because there is a muddle in our mind that can we get success in our life or not. But it's the rule of nature that every person should have to start without thinking on bothering our future. This essay is not a competition for me but a start, yes, it is because I am writing about my thoughts which can forward my message to the next person and it might form a chain. Oh! now it's an end of my philosophy but let this message be in serious mode. Start with you B'coz it will multiply into two. ◈

Stop drug addiction

◈ **Rishabh Shukla** XI
Bijnor Public School
Najibabad Road, Bijnor
Uttar Pradesh

"Wealth without work. Measure without conscience, Knowledge without morality, Science without humanity, Worship without sacrifice, Politics without principle", these have no value. Drugs are unholy weapons in the proxy war waged by terror outfits against the country.

"At this moment enormous numbers of intelligent men and women of goodwill are trying to build a better world. But problems are born faster than they can be solved.

Goodwill Ambassador is a collective term sometimes used as a substitute honorific title or honour for an ambassador of goodwill, but most appropriately for a generic recognition, it is a job position or description that is usually indicated following the name of the position. Goodwill ambassador may generally deliver goodwill or promote ideals from one entity to another or to a population.

A goodwill ambassador may be an individual from one country who resides in or travels to another country, in diplomatic mission (or international friendship mission) at a peer level; that is country to country, state to state, city to city; or as an intermediary representing the people at the other extreme of an organization. Goodwill ambassadors have been officials (or un-officials) part of government and culture for as long as

diplomacy has existed; to exchange gifts and presents, humanitarian relief, development aid, using well-known celebrities, scientists, authors, known activists, and other high society figures. Goodwill mission of countries is usually carried out by the head of state and do not necessarily involve diplomatic credentials outside a letter of presentation (or letter of credence). However, some states such as Haiti, does issue credentials that include diplomatic immunity for goodwill ambassadors. The difference between darkness and brightness is how we thrive on those moments.

Morality

Sometimes organizational and psychological pressures cause even good people to act unethically. In a lawsuit over a car wreck, an insurance company representing the defendant demanded the right to have its doctor examine the plaintiff. When he did, the doctor found that the plaintiff had a life threatening brain aneurysm, because it would have disadvantaged the insurance company's defence.

The doctor did not tell the plaintiff, who did not find out for two more years. Why would a doctor keep this virtual information from an injured man? Obviously, the doctor viewed his job as protecting the insurance company's financial interests. This is an example of something ethicits call role morality.

"Wealth without work, measure without conscience, Knowledge without morality, Science without humanity, Worship without sacrifice, Politics without principle", these have no value.

Role morality has been defined as the feeling that we have permission to harm others in ways that would be wrong if it weren't for the role that we are playing. Role morality often involves people acting in way that they would view as clearly unethical if they were acting on their own behalf, but because

they are acting on behalf of their employer or a client, they view their actions as permissible.

Do not be too moral. We may cheat ourselves out of much life. So aim above morality but no single good for something.

De-Addiction

His holiness saint Gurmeet Singh ji Insan strongly opposes all intoxicants. He has been instrumental in campaigning extensively against drugs. Guruji travels thousands of kilometres to act as catalyst for transforming lives. Today, the number of people who have vowed never to partake intoxicants has exceeded 50 million and it is growing. On one call by Guruji, people in thousands collectively pledge to get kick the drug habit. Public bonfires of intoxicants are made.

A man having successfully recovered from drug addiction who was abusing 80 injections of buprenorphine (a morphine like drug) in a day, showing his gratitude to revered Guruji. Guruji tells to follow to change. By changing our thinking we can change our belief. When we change our beliefs, we change our expectation. When we change our expectations, we change our attitude. When we change our attitude we change our behaviour. When we change our behaviour we change our performance. When we change our performance, we change our life!

Public awareness program

We should quit drug abuse with meditation and selfless-service. Drug abuse is bad thing. Quit it and those who want to give it up, they can come to ashram. Any kind of drug addiction we have, is dangerous. It's discouraging to think how people are shocked by the honesty and how few by deficiency.

Quitting drugs to save the country

Drugs are unholy weapons in the proxy war waged by terror outfits against the country. The youth are becoming physically

unfit and unproductive because of intoxicants. The country will clearly spiral downwards. Also it is well known that the trade in drugs is fueling narco terrorism. This country will need to win in order to defeat terrorism as well as anti-drug campaign. We should stop drug addiction and dowry system.

I am free, no matter what rule surrounds me. If I find them tolerable I tolerate them; If I find them too obxoxicious, I break them. I am free because I know them. I am morally responsible for everything I do. ◈

Good as well as evils are eternal

◈ **Aqsa Naaz** X
National Public School
Maharani Bagh
Kalindi Colony, Delhi

Violence assumes many forms. It is survived by egotism. Humanity would never have got divided and the feeling of touchable and untouchables or high and low on the basis of colour or class would never have arisen. Religion was born to end the violence but itself began causing it.

Not everything in this world is variable. There are things invariable too. Nature is perennial, so is human nature. It consists of different habitats at the back of which are demerits like anger, vanity, deceit and greed. Good as well as evils are eternal. Only their forms keep changing. When objects and worried phenomena change, why does man not change?

Anuvrat is the philosophy of change. Its sole purpose is to enable man to make efforts to transform it. Violence is not a new problem. It has been there for thousands of years. It is the part and parcel of human nature.

Anuvrat aims at non-violence. Therefore it is not possible for everyone to live non-violently. One way leads to complete violence. The former is harmful for both individual and the society. Lord Mahavira suggested a new way. He said “If you cannot give up violence altogether at least don’t wilfully kill men, animals, etc.” Anuvrat does not demand more than this, even though it aims at much more.

Violence assumes many forms. It is survived by egotism. Humanity would never have got divided and the feeling of touchables and untouchables or high and low on the basis of colour or class would never have arisen. What a paradox that the sun meant to dispel darkness but began to spread it Religion was born to end the violence but itself began causing it. The most sublime part of life got suppressed and overcome by uncompromising sectarianism. For the same reason violence grew in the name of religion.

Philosophy— Ethics are also known as moral philosophy. It is the branch of philosophy which addresses morality. The word ethics is commonly used in interchangeably with 'morality' and sometimes, is used more narrowly to mean the moral principles. Morality of people and their ethics amount the same thing. Their system such as that of caste, based on notions of virtue and generally avoiding the separation of "moral" consideration from other practical considerations.

It was against this background that Anuvrat lone forth with a new outlook. It gave the concept of religion free from sectarianism. Anuvrat is pure religion and no sect, nor is it associated with any sect. It is not Jainism, Buddhism, Vedic instructions, Islam or Christianity. It is a religion without a denomination. Religion without morality is intellectually incomprehensive. Unfortunately religion stopped morality, gained acceptance. But why is a person unaiming to belong to a religion also practises dishonesty. It is amazing that a man devoice of integrity or morality in the practise of his trade or progression is regarded as religious. Anuvrat has tried to shatter this illusion and firmly stated, the impossibility of being religious being moral. ◈

Importance of moral values

◈ **Drashti Dhaleriya** XII
Navkar Vidya Mandir
Balotra, Rajasthan

Addiction can turn a perfectly healthy individual into a complete mess. There are many things that one can become addicted to. The common denominator is that it can ruin our life. Whether it be gambling, drugs, or some other kind of substance abuse, our life can quickly spin out of control if we aren't careful.

"Prevention is better than cure' is very true Tobacco, drugs, alcohol abuse are more in adolescence. Thus remedial measures should be taken well in time. In this regard the parents & teachers have a special responsibility.

The following measures would be particularly useful for prevention and control of alcohol and drug abuse in adolescence. Drug addiction is a brain disease. The addict becomes dependent on drugs and uses it, despite having knowledge of its harmful effect on health. It is considered as a brain disease because it changes the structure & functioning of the brain.

Addiction can turn a perfectly healthy individual into a complete mess. There are many things that one can become addicted to. The common denominator is that it can ruin our life. Whether it be gambling, drugs, or some other kind of substance abuse, our life can quickly spin out of control if we aren't careful.

Addiction should never be treated as a crime. It has to be treated as a health problem. We do not send alcoholics to jail in this country. Over 50,0000 people are in our jails who are nonviolent drug user.

Every form of addiction is bad no matter whether the narcotic be alcohol or morphine.

Sometimes imagination works like an addiction. It lets one escape the reality. The rapid changes & increased complexity of today's world present new challenges & put new demands on our education system. It is necessary.

Talking about our problems is the greatest addiction. Break the habit. Talk about our joys.

There are three divisions inside the corporation of goodwill. They are retail, workforce development and communication services. The population that goodwill works with is persons with disabilities.

Goodwill helps persons at the age of six weeks to the geriatric period.

She has so much junk in her trunk. Boy, I wish she'd just drop it all off at goodwill

In a world like this, we pay it forward, causes more than likely we didn't deserve it when we got it the first time.

When we extend our goodwill in every direction, regardless of circumstances, we begin to see that we are all one.

"Many fine things can be done in a day if we don't always make that day tomorrow."

The more we are willing to accept responsibility for our actions, the more credibility you will have".

"The three hardest tasks in the world are neither physical feats

nor intellectual achievement, but moral acts, to return love for hatred, to include the excluded and to say, " I was wrong.

We must do the things we think we cannot do."

Users who liked, " Goodwill, like a good name, is got by many".

"Beware prejudice. They are like rats, and men's minds are like traps; prejudices get in easily, but it is doubtful if they ever get out".

"The tendency to whining & complaining may be taken as the surest symptom of interior intellects.

"To know and not to do is not to know".

The importance of moral values in life is something nobody can honestly disagree with, although today it's a popular practice. Many famous films & music stars, politicians, & other influential people talk about liberal values, freedom of expression, religious beliefs, hedonistic ways of life, and so on. Their argument is that personal freedom is the most important value to fight for.

Respect for ourselves guides our moral; respect for other guides our manners.

Every day we see how people lie, do everything possible to get the job they want, even it requires that they do something bad, illegal, or immoral.

Young men try to get whatever they want without any thought of moral values. This should help us with material for our speech on moral values. We see the importance of moral values in life, don't we?

And now, after having a brief speech on moral values, we are ready to write a moral values essay.

So far, about morals I know only that is moral what we feel good after and that is immoral is what we feel bad after.

Moral education is not our priority. It is not included in any syllabi-whether of science or humanities. Morals or morality, broadly speaking, implies honesty of character, fairness in attitude & absence of evils like jealousy, hatred & greed from actions.

The society reflects our education, most of our officials whether in public or in private sector are corrupt. ◈

Addiction breeds anger

◈ **Shyamkumar Shantubhai Patel** XII
Sri Sathya Sai Vidya Niketan
Navsari, Gujarat

Man is the architect of his own happiness or misery. Only moral actions and behaviour can produce good results. When the individual is good, the family is good, the society is reformed. When society improves, the nation improves. When the nation improves, it itself will have a good & moral foundation.

Youth today is great. He is the one who gives values to the nation. Youth is more valuable than all wealth in the world. The three qualities goodwill, morality and de- addiction play a very important role in nation building. So youth today needs to have these qualities for the upliftment of nation and nation building. If these values are nurtured in everyone then the nation will be strong.

We must see no evil, but see only good. We must hear no evil, but hear only good. We must speak no evil, but speak only good. We must do no evil, but do only good.

First we take about the quality goodwill which means having a helpful or friendly feeling towards other people. The youth should work for the progress of the country. They should always help their fellowmen. Having good relations and good nature towards everyone, anything can be accomplished. Even the course of destiny can be changed by human goodwill. Only the one who does good work has goodwill. Having goodwill

will helps in attaining unity among youth, having attaining unity among youth, nation will be united. The body should be prevented from desires, reaction of anger. All misdeeds by the body should be abandoned and morality should be gained.

Second we talk about morality which means moral behaviour. The foundation of everything is morality. Without moral values, humanness cannot survive. Since the population of those days was small, each lived peacefully adhering to their own restrictions and customs. As time changed and population increased, youth today tries to propagate their ideas among others. Youth today should have a moral and good behaviour so as to set a good example for the nation and a helpful being in uplifting nation and nation building. Moral behaviour can be attained automatically if values like truth, non-violence, peace and love are achieved.

Morality will create a positive impact which will be further helpful. To have morality among oneself, one has to have control over one's thought. In this nation one has to perform both great deeds and good deeds, undertake meritorious deeds with good motives and immerse oneself in feeling of love. One should give up bad qualities and bad behaviour. Moral behaviour is the primary requisite in nation building to keep moral behaviour in one's own basic duty. In Sanskrit language, personality is described as parusham-the hall of a parusha. The Sanskrit term parusha means a quality associated with moral behaviour. It is said that "only a community devoted to morality is a true community".

Man is the architect of his own happiness or misery. Only moral actions and behaviour can produce good results. When the individual is good, the family is good then the society is reformed. When society improves, the nation improves. When the nation improves, it itself will have a good & moral foundation. Moral behaviour is necessary for nation building. With the help of moral behaviour one will gain respect from

all and get a good name in the society. It will be further helpful for the person to bind everyone in unity for nation building. It is said that "money comes and goes, but morality comes and groups". So it is a necessary value one should have which will help in nation building. When a person thinks deeply of sense-objects, he feels and gets addicted for them. Addiction gives rise to desire and desire breeds anger.

Third we talk about de-addiction which means attachment for bad things. More than all, we have to set right our habits, purify our conduct and cleanse our behaviour. One bad habit will take a deep root. If one gets attached to bad and evil values and things, than it disfigures their behaviour, destroys our happiness, activity and social relationship. For nation building getting de-addicted from evil values and things is necessary. If one will get addicted to prestige, comfort, show, greed, things that will arise in his mind as desire, as urges, to their own ego basically. That is the thing which induces them to claim these things, one after the other, as theirs! Our life is a long journey.

These things always keep on adding as plus, plus, plus. By decreasing desires and by promoting sacrifice, one will be able to rise to the heights of glory and a good example for the nation. De-addiction does not mean giving up our home, giving up our family and going to the forest. To make an attempt to decrease desires is called de-addiction. One must give-up the caring for maternal control and the addiction to sense the objects. One must discard the false fears, absurd desire, sorrows, worries and the artificial pleasures that now fill mind. One has to be free from undue addiction to the pulls of joy-grief, good-bad, pleasure-pain. One has to journey over the roads that lie over pleasure and pain, grief and joy. The journey can be smooth only when one resort to wisdom, devotion & de-addiction. ◈

People of a nation are the most useful assets and the building blocks of that country. How would a building can be constructed when the bricks are not strong enough? Similarly a nation cannot pave the way towards development when the countrymen of that nation are not physically and mentally well. Goodwill is responsible for strengthening the relation among people.

Strength is the motto of goodwill

◈ **P. Anjali Kumar** XI
Andhra Education Society
Janakpuri, Delhi

Goodwill, morality and de-addiction play a vital role in nation's development and its progress. Goodwill is the feeling of cooperation and helpfulness. These things must be established in each and every individual who is a part of this country. Without goodwill success cannot be achieved in nation building as no-body can exist in isolation.

There has to be goodwill among states within a country, which keeps the nations united. The goodwill among nations establishes peace all over the world so that all share resources and live peacefully. Hence it is vital that goodwill must be implanted not only in each individual but also within states and nations. Without goodwill a man is a body without soul. As a human needs food and water to survive, as fragrance is significant for flower, similarly goodwill and morality are required for an ideal character.

Goodwill is responsible for strengthening the relation among people. It is very well known that unity is strength and strength is the motto of goodwill.

Moral values also have their own significance regarding nation's development. True morality is important. True moral values are required for the society to advance. Many famous leaders also insisted to inculcate moral values in daily life. The big example can be taken of Mahatma Gandhi who said, "If money is lost, nothing is lost, if health is lost, something is lost, if character is lost, everything is lost.

Hence, moral values and their presence help in taking the nation to such a height where sky is the limit. But moral values are degrading day by day which is just a sign of coming huge destruction which is going to swallow our nation. There is a Chinese proverb. "If there is righteousness in the heart, there will be beauty in character, if there is beauty in character, there will be harmony at home, when there is harmony at home, there will be order in the nation, when there is order in the nation, there will be peace in world."

According to this proverb, for peace in the world there must be beauty in character. For achieving beauty in character we should have moral values.

People of a nation are the most useful assets and the building blocks of that country. How would a building can be constructed when the bricks are not strong enough? Similarly a nation cannot pave the way towards development when the countrymen of that nation are not physically and mentally well.

All very well know that these habits cause damage to our important internal organs such as liver, lungs etc. These are addiction problems which do not help the people to come out of the grief but also become obstacles in nation's development. If this goes on like this, then the present generation and youth will paint grim picture of our country.

Lack of these values can result in devastating storm which can swallow our whole nation. The symptoms of this storm can be seen in our modern times very easily. Daily we see newspaper crowded with news of murders, crimes, thefts and other disgusting things. Hence these things must be taught from childhood. Because children are similar to clay which can be moulded into any shape we want. There these things must be inculcated with education for better development of our country.

Today a reader, tomorrow a leader. So, the children after some time become useful assets of the nation. They must be nourished with these values so that they can play their role and responsibility towards the nation building.

Last but not the least, we should inculcate all good values in ourselves, so that one day our nation's progress will be at such a height where the sky is the limit. ◈

Morality is not taught

◈ **S. Yamini** IX
Sri Venkateswara Bala Kuteer School
Guntur, Andhra Pradesh

Oxford dictionary defines addiction as physically dependent on some substance or devoted to a particular activity. In this digital world, people are getting addicted to T.Vs, computers, mobiles and other electronic gadgets. Like this, people are wasting time watching T.V. Sharing feelings with friends is a good recreation.

Goodwill, morality and de-addiction are very important in nation building. With goodwill, we can succeed in our tasks, everyone will help us succeed. We can see that God doesn't help those people who want to harm others. But God always helps the people who pray to him for the well-being of the society. In olden days, with good sankalp i.e. for vishwamanvahith, yogas were performed by sages. Yogas became successful because of goodwill of the sages.

Nowadays, in the times of globalization, a country's goodwill is very important to attract investments from other countries. For this availability of resources and infrastructure is not enough, but, peaceful environment, good law and order, people who respect other's rights and freedom, people's goodwill are also important. These things matter a lot for country's development.

Goodwill play's a major role in nation building. In our country, the state of Gujarat has put up an example to attract investment

from all round the world. The decisions taken by the government of Gujarat in last 2 decades has set good standards for attracting the investments as there is no waiting period if the company comes up with good proposal. The goodwill created by the government helped Gujarat to be the first state to have surplus budget or the fund in the country.

Morality is also important. Parents should bring up their children with moral values like honesty, hard work, helping others, love etc. Morality is not taught, it is observed and followed by children from their parents and surrounding.

So, parents, teachers and everyone should be honest, helping others, responsible and hard working. Children are the future citizens of the country. Children brought up with moral values will bring glory to our nation, help in developing it with their hard work, and goodwill.

Moral values should be followed by government officials and politicians for better utilization of government schemes by real and needy people, not rich people who pretend to be poor and needy. These rich people should think of needy people and stop pretending that they are poor and stop utilizing free schemes which are actually for the poor. Then poor can be benefited by these schemes and our country can be developed.

Addiction-Oxford dictionary defines it as physically dependent on some substance or devoted to particular activity. In this digital world, people are getting addicted to T.Vs, computers, mobiles and other electronic gadgets. Like this, people are wasting time watching T.V. Sharing feelings with friends is a good recreation.

60% of our Indian population is youth This is a great asset to our nation. But, some of them are getting addicted to drugs, tobacco, alcohol and betting. Because of this, their health is destroyed. Mental tension, financial bankruptcy, waste of valuable human resources are causing big loss to the nation. So, they should be de-addicted and contribute to nation building.

Thus, the role of goodwill, morality and de-addiction is important in nation building. We all should have goodwill, morality and get de-addicted and contribute to nation building. ◈

Mediation is good for us for many reasons. First of all it helps calm our anger, and if we are mad at someone and we want vengeance, meditation helps us calm down and forget about it. It also helps us get rid of all the bad deeds we did. Meditation reaches down to our soul and tries to make it pure, with no bad deeds. So we can start a new good day, and forget about everything that stresses our mind. So we can focus.

Morality with meditation is necessary

◈ **Shailee Sankhala**
Mason Intermediate School
Mason, OH, USA

There are not lot of things to complain about my school. There are so many things that my school already has like P.E. (Physical Education), Music, Technology, Health and much more I would think that the present system of education is just about perfect.

One thing I have always wanted is for my school to have a drama club. It would not be very serious, and it would be such that everyone has fun. People at school don't expect immediate perfection. This would be more effective for all round development because performing in front of people increases our speech and communication skills. This generation of kids are always on their cell phones and it is becoming harder for them to communicate verbally. That is why a drama club is so accessible, it improves our dialogues, and we can have fun.

Another thing that my school should have is yoga and meditation. Just something to do in the morning to get our minds refreshed and ready to learn, instead of being groggy and tired. These two things help us have a stress free and nourishing days.

Yoga helps our body in a lot ways. It keeps us flexible because of the exercise, and doing yoga can keep our body fit. Yoga can also help keep our emotions balanced. Keeping the students' emotions balanced is important because of all the bullying going on. During yoga we can also find out what we are capable of and who we are. We just need some time to reach our soul. But, one of the biggest benefit of yoga is that we can do it almost anywhere.

Mediation is good for us for many reasons. First of all it helps calm our anger, and if we are mad at someone and we want vengeance, meditation helps us calm down and forget about it. It also helps us get rid of all the bad deeds we did. Meditation reaches down to our soul and tries to make it pure, with no bad deeds. So we can start a new good day, and forget about everything that stresses our mind, so we can focus. Morality together with meditation is also very important for the society. For the development of a nation morality is a must. Addiction is an obstacle in the way of national progress. So we should be very careful. De-addiction programmes should be emphasized in the society.

All these things will help make the present system of education better because it will help. We stay awaken, focused, and get better with communication skill with other people (and not by phone). It is also very easy to do all these things at our school because we can do it anywhere we want, there is good amount of space. With yoga and meditation all we need is our body (and if we want, a yoga mat for comfort). For drama/ acting all we need is also our body and a creative mind to make a skit (all we need it a script). ◈

Everyone knows that life is precious. We all protect our life because we care for it more than anything else. If life is so important, the values of life are even more important. They are what we use to guide our interactions with others, with our friends and family, in our business and professional behaviour. So these are the guideline principles or standards of behaviour which are regarded desirable, important.

Alcohol spoils our health

◈ **Asmita Zjigyasu** VIII
Delhi Public School
Ghaziabad, Uttar Pradesh

Nation building is a normative concept that means different things to different people. In general, nation is defined as a group or race of people who share history, traditions, culture and usually languages. Goodwill of the people, good moral values and de-addicted people, that means a healthy human resource goes a long way in nation building.

Key finding of nation building

The primary objective of nation building is to make a violent society peaceful. Security, food, shelter, and basic service should be provided first. We should strengthen our families, because it is the real school in which a citizen is groomed and taught the real leadership skills. Economic and political objectives can be perused once these first order needs are met.

Reform generates resistance, which can be overcome only through the skilful application of personnel and money. Objectives need to be scaled to match resources. Not doing so will lead to mission failure.

The importance of goodwill and morals in nation building

According to the father of Indian Nation M.K. Gandhi.

“If wealth is lost, nothing is lost”

If health is lost, something is lost”

“If character is lost, everything is lost” Best of all things is character.

Remember the Chinese Proverb

“If there is righteousness in heart, there will be beauty in character. If there is beauty in character, there will be harmony at home. When there is harmony at home, there will be order in the nation. When there is order in the nation, there will be peace in the world.”

People grow nationhood. When their character develops the virtues and values propel them towards righteousness.

Everyone knows that life is precious. We all protect our life because we care for it more than anything else. If life is so important, the values of life are even more important. They are what we use to guide our interactions with others, with our friends and family, in our business and professional behaviour. They are what we hope to model, our younger ones around us, because younger ones do watch us as they develop their own sense of right and wrong. So these are the guideline principles or standards of behaviour which are regarded desirable, important and held in high esteem by a particular nation in which a person lives.

Role of De-addiction in Nation building

People who are indulging in alcoholism or drug abuse are lacking in spiritual education or knowledge. That is what leads

to sadness and depression. There is large population suffering from depression in the world today. Alcohol spoils our health, makes our brain dull and gives rise to so many conflicts in the mind. It not only makes our life miserable but also the lives of those around us and indirectly of the nation. To get rid of sorrow awareness is needed. The awareness is in the form of meditation and yoga.

It means inculcating in the people, a sense of humanism, a deep concern for the well-being of others and the nation.

Conclusion

- Without goodwill success cannot be achieved in nation building as nobody can exist in isolation.
- There has to be goodwill among states within a country, among nations in the world so that they share resources.
- Morality defines the difference between good and bad and gives the wisdom to chose the good.
- De-addiction is a pre-requisite to have a healthy human resource that doesn't abuse drug or alcohol. ◈